

प्रकाशकः—

नंकर-सदन, आगरा ।



मुद्रक—

यज्ञदत्तशर्मा, प्रभाकर प्रेस,
राजामण्डी, आगरा



विक्रेताः—

साहित्य-रत्न, भण्डार
ठण्डी सड़क, आगरा ।

॥ ओ३न् ॥

पद्मावत-प्रकाशिका

पद्मावती-खण्ड

विशेष—ग्रन्थ के आदि में मंगलाचरण करना सभी धर्मों और सम्प्रदायों में प्रचलित है। सूफीसम्प्रदाय के कवियों द्वारा लिखित मयनवियों में इसके आन्तरिक रसूल, बादशाहे वक्त और धर्मगुरु (पीर) की भी स्तुति की जाती है। इसी प्रथा के अनुकूल पद्मावत में भी ईश्वर, रसूल, बादशाह और पीर की स्तुति की गई है। यह प्रेम-गाथा-काव्य सूफियों की मस्तनवियों के ढंग पर लिखा गया है।

कर्तारु = कर्त्ता, परमेश्वर। मुमलमानों के यहाँ परमात्मा के कर्त्ता होने पर विशेष जोर दिया गया है। उनके मतानुसार परमात्मा ने हम को अपनी इच्छा से रचा। जिउ दी ह कीन्ह मन्तारु = मनुष्यों में जीव बाला और चगचर मन्तार रचा। मुमलमानों का विश्वास है कि सर्व प्रथम ईश्वर ने मिट्टी गूँध कर एक पुतला बनाया और उसकी नाक में होकर ईश्वर ने उसने अपना दम (स्वप्न) फूँक दिया जिससे वह पुतला जी उठा जो कि मनुष्यों का पूर्व पुरुष जादम हुआ।

प्रथम ज्योति = महादेव। जायनी का विश्वास है कि मुमलमानों के बाद जादम हमारे यहाँ के महादेव जी थे। प्रथम ज्योति का अर्थ मुहम्मद साहब भी हो सकता है।

कीन्हेनि केलास = उनसे लिए दस्ताने पहनने से या।

गगिन (अग्नि) पवन नक (हवा) (पूर्य) मुमलमान लोग ईश्वर यह सब तन्त्र मानते हैं। वे प्रकृत तन्त्र को नहीं मानते। उल्लेख—(उल्लेख) रचना चित्रकारी। पन्तारु = पानल। दस्तान दस्तान = नाना प्रकार के।

अहा = था । बंदि मँह = कैद में । बंदिहुति = कैद से । पुनिधि
फिर लौट कर ।

बं..... आण = जब से वह पत्नी हुआ और उसके पंग निवलेन
से उसको उठाने की शक्ति आगई अर्थात् वह उठ जाने के लिए ही
था मनुष्य के भी जन्म के साथ ही मृत्यु लगी रहती है ।

पिजर... मयऊ = जिसका पिंजड़ा था उसको सोंपकर बह
गया, जो जिसका था वह उसका हो गया । मनुष्य के लिए भी यह
लागू होती है । गरीर पंच तत्वों का होता है । मरने के पश्चात् वह टूट
मिल जाते हैं और जीव जो परमात्मा का अंश है परमात्मा के पास
जाता है ।

दश द्वार = दश छेद । इह रश्म को मिलाकर दश छेद हो जाते हैं
मँजारी = तात्पर्य है मृत्यु से ।

धरती = पृथ्वी । केतलीला = लीला का घर । पेट . . टीला
पेट वा ऐसा गहरा गढ़ा है उसमें जो पहुँच जाता उसको वह नहीं छोड़ता
सूत्रा विल्ली के पेट में पहुँच गया वह अब नहीं निकल सकता है । अथवा
मृत्यु के मुग्न में पहुँच गया वह वापिस नहीं आता । जहाँ
जहाँ न जा सके दिन हैं आर न जा सके पवन और पानी हैं सूत्रा ऐसे
पहुँच गया है । वहाँ से लाकर उस कान मिल सकता है ? दिन-रात
पवन पानी सभी इस लोक की चीज हैं । परलोक में मनुष्य इन सब
से परे हो जाता है ।

कल = कल । बयव = बहेलिया । दुका = दुपट्टा । टाटी =
(घाघे की टाटी) । बहेलिया लोंग धोखे का प्रेमा झूठा वृत्त बनाने
जिम पर आकर्षित हो पत्नी बँध जाते हैं और उनके पंगों में लासा
जाने से वे कैम जाते हैं । चापत = दवाता । पर दवाता हुआ
आया कि जिमसे आहत न हो । मूलि मन थाका = वह धोखे के वृत्त

करना चाहिए जिससे प्राण नष्ट न हो । अब तुम नहीं जानते कि इन्द्रिय तोता मौन है ।

नोट — मनुष्यों को भी चाहिए कि जो अपना दोष हो उसे स्वीकार करें, दूसरे को दोष न दें ।

रत्नमेन खगड

पृष्ठ १८

कै सजा = अपने गठ और धर्म का उम्मेद अपने के ममान सजाया था । उज्ज्वल = उज्ज्वल । दश = १० । सामुद्रिक = वह ज्ञान जिसके द्वारा नदी के प्रवाहों को देखकर जल का फल बताया जाता है ।

लघन = लक्षण । विनेत = विशेष । निरमर = निर्मल । रत्न जोति... परा = रत्न के से प्रकाश वाली रत्न अर्थात् पद्मावती इनके मगज (भाग्य) में लिखी हुई है ।

अनोरी = प्रकाशमान, उज्ज्वल ।

जस जोगी = जिस प्रकार मालती पुष्प के लिए भौंरा चोंच सब सुगन्धित फूलों से वियोग कर लेता है उसी प्रकार रत्न मेन उसके लिए जोगी बनेगा ।

मिद्ध हांड = प्राप्त कर । भोग दान = गता मोन के समान इसको सब भोग प्राप्त हांग और गता विक्रमादित्य के समान अपने पराक्रम के कारण एक नया सवत चलावेगा । न के परदेन वाले ज्योतिषी लोगों ने सब जानों को जोच कर उप - राजा को लिख दिया ।

हुन = था । चलन बेपारी = आपागिरा के चलन पर । मुक = शायद । बाढी = नष्ट या लान । नाधि = पार करके ।

देव हाग = हाट में उन आग कुड़ न दिखाई पडा 'सब चीजें' बहुत परिमाण में थी अर्थात् बहुत कीमत की था थाड़े परिमाण और थोड़ी कीमत की कोई चीज न थी ।

निष्ठुर.....शाय = नू निष्ठुर होकर दूसरे की जान लेता है। नू तुम्हें हत्या का डर नहाने है ? यहाँ अस्मि विषयक मत दर्शना है।

कहमि.....विशानू = ब्राह्मण कहता है कि नू पत्नी का दोष बताता है कि पत्नी चारे के लोभ से श्याने है, किन्तु गान्धर्व में निष्ठुर को दोषी बताने का पगदा माना जाता है, क्योंकि यदि ऐसे पगदे न माने का लोभ न होता तो बटेलिया पत्नियों को क्यों पसन्दता ? पग दोष बटेलिया और मान मानने वाले का है। पत्नी न तो जब लोभ में पड़ती है जब कि स्वामी लोग उसे लोभ दिखाने हैं।

'कहमि पंगि का दोष जनावा' का दूसरी जगह इस प्रकार पाठ है—
'कहमि पंगि स्वादुक मानावा' अर्थात् नू (बटेलिया) कहता है कि पंगि मनुष्यों का राजा है। देसाहा = गरीब लिया। मति = बुद्धि।

भा पंग = चित्तौर का राजा लिया। मय राजा = मय नगर हो गया अर्थात् मर गया। कहीं कहीं 'मिड राजा' पाठ है। इसका अर्थ होगा शिव-लोक की तैयारी की।

पृष्ठ २०

राने... काँटा = उसके गले में लाल और बाले दो कण्ठे (रानी लकीरें) हैं।

नोट—रहा जाता है कि तोते के जब यह कण्ठे निकल आते हैं तो वह ज्वान होता है और तभी उसमें बोलने की शक्ति आती है।

राने पाठा = लाल पन्नों पर अनेक शास्त्रों के पाठ चित्रित हैं। पाठा का अर्थ पृष्ठ जोड़ भी हो सकता है। उसके शरीर के सब पक्ष चित्रित हैं। राने बना = लाल चोंच से अनृत-नयी बात करता है।

बाध जनेऊ = कंधे पर जनेऊ की सी लकीरें हैं। कवि व्यास, पंडित महर्षि = व्यास के 'मान' कवि और महर्षि (पाठकों के मध्यमे छोटे ६) के समान पंडित हैं। 'बोल अर्थ नों बोल' = जो वाणी बोलता है अर्थ-युक्त, मारगर्भित बोलता है।

पड़ता है, नहीं तो उचित न्याय नहीं मिलेगा। जब तक गुण प्रकाशित नहीं होता तब तक कोई उसका मर्म या मूल्य नहीं जानता।

नोट—इन पंक्तियों में तोते ने आत्म-विज्ञापन की भूमिका बर्णित है। विज्ञापन वाले भी इसी सिद्धान्त पर चलते हैं। वैसे साधारण जीवन में तो यही धीक है 'गुनी न कोई आपु सराहा' (Self praise is no recommendation) लक्ष्मण जी ने भी परशुराम जी की इसी लिए हँसी उड़ाई थी 'आपन कानी, बार, अनेक भोति बहु बानी'। किन्तु जहाँ व्यवहार और दुकानदारी की बात हो वहाँ यह सिद्धान्त नहीं लागू होता है अर्थात् उसी कसेक हूँ।

मेरचो = मिलाऊँगा। नेव ... ठोव = उस स्थान में मैं सेवा करता हूँ।

चीन्हा = उसके गुणों को पहचानना अर्थात् यह जान लिया कि मूँगा गुणी है। पयाना = प्रयास कर गया, चला गया। भाखा = बातचीत।

जो बोले ... जोवा = जो वह राजा का मुख देख कर उसके मन के अनुकूल बात कहना है अथवा जब वह बोलता है, राजा उसके मुख की ओर दबना है। जानो परोवा = जब तोता बात करता है तब ऐसा मालूम होता है मानो वह मोतियों का हार पिरो रहा है।

जो गुँगा = अगर वह बोलता था तो माणिक और मूँगा की सी मूल्यवान् बात करता था नहीं तो मौन धारण किये चुप बैठा रहता था।

महुन सेला = मानो वह पहले तो अपने विरह-भरे वाक्यों से मार डालता था और फिर मुँव में अमृत डाल देता था। वह मारता भी था और जिलाता भी था। तसग अर्थ यह हो सकता है कि मानो मारि (मार = कामदेव) ने उसके मुँह में अमृत डाल दिया हो।

पेमक न्हनि लाइ चित गहेऊ = प्रेम की कहानी कह कर वह चित आरपिन कर लेता था।

पुहुप = पुष्प । जहाँ '...पाया ? = नाथे के आगे पैर का क्या किया जावे । नाथे और पैर का क्या मुद्रावना विनिम्न साक्षात् व आनन्दे पाक' कहूँ कहूँ चरण और कहूँ मथा

गर्ही '...लाग = मिटल-दीप की लियों मुग-प्रयुक्त नोते में गड़े हैं । वे रूप और भाव्य से भरी हुई हैं अर्थात् उनमें रूप और भाव दोनों हैं (प्रायः रूपवती भाव्यहीन होती हैं उनमें ऐसा नहीं है, मुक्ता रानी रुठ गई और तोते की धान उसके हृदय में तनक में अटक गई = रूखा । श्रियोगी = उनका विशेष मानेगा, उसके दुग्धित होगा । अथवा मुक्तमंत्रिमुक्त होन चंगा ।

पृष्ठ २०

अह्वरु = अँकुरित हो उठना है । तनचूर = तानचूर, लाउ है जिसकी । मयद '...तमचूर = कहीं सुर्गे की नौति यह पद्मार्थ मूर्त्योदय की मूर्चना न दे दे ।

धय = दारु, नोकरनी । शनिनी वेग प्रियनी शोनी तेरी कि न चढ़ने वाली जिसमें कि वह गोत्र कथ कर मरे । उसका यह जो न हो सकता है कि प्रियनी की तेरी के साथ बहुत गोत्र युताया । दूध = युताया । आदि मोंपा = मुर हो उसे नों । दिया । दीप जिस नगे = हृदय में दरो गुम्मा थी ।

मंद्याता = मंद आचरण वाला, दुष्ट । मयद '... पाता = जिस सातः उसका जो नहीं दुष्टा । वक्ष से नाग का यहाँ चला आया । मुय प्राता = मुय से तो और प्रहार की धान कहता है और पैर उलट दूरी से नगा नगा दूरे है । जिस नगा रुक-रुकता है ।

पति = पति । माती = माती । पति '...माती = उस पति के हस्त नगा चढ़े ४१ स्वयं शक्तिवत्ता है उसे ऐसी पक्ष मय में नगा शक्ति कि नहीं दूरे दूरे साक्षात् न हो ।

तदनु व्यवहार करेंगी । बाही पाठ होने से तुक भी निष्ठ बर्ण है ।
अर्थ ठीक हो जाता है ।

मकु = शायद, न मालूम ।

तुल्य-रोग (तुल्य = तुल्य) घोड़े का रोग । हस्ति = बन्दर ।
जाए = घोड़े की बला बन्दर के मर पड़े । यन्त्रदल में बन्दर
है कि घोड़े पर रोग न आवे और बन्दर पर घोड़े का रोग
बढ़ने का अभिप्राय है कि दूसरे के अपराध से मैं नारी जाऊँ ।

दुष्ट आप = दो चीजें छिपाए नहीं छिपाएँ एक दूसरे
कोई किया हुआ पाप । वे नष्ट हो गवाही देकर अत कर देंगे ।

धाय मति साक्षा = धाय की बुद्धि बन आई अथवा धाय
ठीक हुई । जो उसने सोचा वही हुआ । संजारी = माझी,
खीन्हा = पकड़ लेगई, लागई ।

कहाँ बागी = वहाँ बसन्त, जिसमें नाना प्रकार के फूल
रहते हैं और कहीं करील जिसमें पत्ता तक नहीं । करील में
भी पत्ता नहीं आता । 'पत्र नव यदा करील चितये दोषो बसन्तस्य

का तोर भाऊ = तैसा पुरुष क्या है ? वह तुल्य ऐसी करी
का पति है वह तुल्य से अधिक कुद नहीं जानता है । यह बात नहीं
तुल्य से सुन्दर या कोई नष्ट । किन्तु इसका सुन्दरता की परवाह
है । उल्लू दिन का भाव (नष्ट अथवा प्रभाव) क्या जाने ?

नोट — नगमती वी मनाज्ज निक नेति से बात कह रही है ।
सुधा रू मुख से गला हो दृष्टि और परब में दोष कहला कराने
दमक प्रति (प दिखाना चाहती है ।

दृष्ट २३

दृष्ट नंद स्ते = दृष्ट, कान-दृष्ट-विष, जिसके मुख में दृष्ट-
मरा हो ।

जो आत्म-बलिदान करता है और अपना सिर काट कर रख देता है उसी को प्रेम करना शोभा देता है ।

वेगिण प्रेम के नन्यन्ध ने कबीरदास जी क्या कहने हैं (यह तो घर है प्रेम का, खाला का घर नाहि । नीस उत्तरं मुईं यरै, तत्र पैठे या नाहि ॥

प्रेम टूटा = प्रेम का फटा जो एक बार पड़ जाता है वह टूटना नहीं है—वह प्राण देने पर भी नहीं टूटना है ।

मिर नेजा = सर डाल दिया, सर रख दिया । पांच न टेल राखि कै बेल्ला = अब प्रेम-मार्ग का चेला बना कर पैर से हटा दो; अब तो मेने प्रेम-मार्ग में सर रख दिया है, अब उलेंगा नहीं । 'गो बली' में सर देकर चोटों से क्या उरना, और प्रतिवों में पथ के स्थान में 'फाँद' पाठ है, फाँद के साथ नेला का योग ठीक बैठता है ।

वरनेसि = वर्णन करता है । नगरसिख = नागदून से लेकर चोटी तक श्वेत-श्वेत का वर्णन । वरनु सिगा (शब्दार्) नगरसिख शब्दार् का वर्णन को । मेरवै = मिलावे ।

अंही दाजा = उसका शब्दार् उसी को शोभा देता है ।

कस्तूरी केसर = कस्तूरी के से बाने और सुगन्धित बाज । बलि = बलि जना, न्योदावर होता । बलि बसुकि नरेरा । उनके दातों पर स्वयं बसुकि नाग भी अपने को न्योदावर का देने हैं और राजाओं का तो कहना ही क्या ? राजा बसुकि सरो के राजा है । जालों की उरना शायद और चिकनेपन के कारण सदा न दी जाती है । अब उन दातों पर नरेरा के राजा ही न्योदावर हो जाते हैं तब और राजाओं का क्या कहना ?

नौर ना-ति र नी = वह रानी मालतीलता की भोति सुगन्धित है, उन पर बल-रूपी-नारे दावर गुप्त गये हैं । नुरे = चुम्बे हुए हैं खोले हैं । आगे भी सदा की खोले हुए बजलाय हैं, 'खोलेहि चहुँ पला' ।

(५२)

विसहर = विपधर = सर्प । विसहर ... रवानी = वेशरूपी ।
 वहाँ मुकेश, उसके शरीर की गंध का आनंद कर आनंद लेते
 वेनी ... अधियारा = चोटी को पोल कर जो वाला भाड़तो
 तो आकश-पाताल में अधकार छू जाता है — से लब्ध है = वह वा
 जिनसे आकाश पाताल तक आच्छादि होता है ।

कंवर = कोमल । नग = नाग = सर्प । लहर = ... दूसरे =
 (वात) ऐसे हैं मानो सर पर नद ... उद्योग से भरे हुए सर्प ...
 गये । अब सर्प धीन की आवाज़ से मन्त हो जाते हैं तब उसका ...
 वः जाता है ।

आन्य प्रतियों में दूसरे के स्थान में विसारे पाठ है ।

वेद = विद होकर । चहुँपासा = चारों ओर । गिड = गला ।
 सँहर ... पी = मानो वे देव ने वालों के गले में प्रेम की जोखल रोपर
 प ना ... फ-वार = फटे में फैलाने वाले । परा सीन गिड
 फॉ = सस और गले में दूरों को फैलाने के लिए फटे ...
 अस्ता दुरी = ... कुलों के नाम उस्तान के पीछे दिखे हुए हैं ।

... केस के बंध = केश के बंधन में उलझे हुए हैं ।

उत्तराह = उपर । सेंचुर ... नही = जिसमें उभा सिन्दूर नहीं भरा
 गया है । उ उ उ उ विवाहिता होने का सूचक है ।

मि ... क या = बिना मि दूर के भा वट दीपक के समान इतनी
 प्रकाशमान है कि वह रात में भी उज्ज्वल पथ कर देती है ।

कदन रे ... परगमी = भौंग ऐसी मालूम होती थी मानो कलूरी
 ... न-र ... हो आर मानो बादलों में बिजली का प्रकाश हुआ हो ।
 ... विमर्श = माना विशेष समय (वर्षाकाल) के आकाश की
 सूर्य-किरण ... समय की किरण में सुनहलापन अधिक होता है ।

होते हैं उसी प्रकार ईश्वर दूसरों को मिलाने में तृप्त रहता है। जियना = जीवना। आनहर = आनधर, आना रखने वाले। कहीं कहीं इस प्रकार लिखा है। 'मरहि आन ताकहि हर मोना। हर एक को प्रत्येक आन पर उनकी आना है।

मरहि निरागा = मरही आना रखने वालों को उसरी आना दे रही हैं, किन्तु वह न किसी ने आना रखा है, न निराग होता है।

उ दुग = दीन्ह = उसने अपने दोनों हाथों को ऐसा बनाया है कि उनमें युग युगान्तर में देता चला आता है फिर भी उसका भावदार घटा नहीं है और जो कुछ संसार में दूसरों द्वारा दिया हुआ दिनाई पड़ता है वह सब उसी का दिया हुआ है। छाज = मोना देने है।

छरहि पछन = पादा = जिसके छत्र हैं, अर्थात् जो राजा है उसे छत्रहीन प्रार्थना कर देता है और जो छत्रहीन है उसको राजा बना देता है। कोई दूसरा उसकी दायरी नहीं कर सकता है।

विशेष — छत्र राजा होने का निशान है।

टाह = गिरा देता है। चोटहि जंग = चौंटी को हाथी की दायाँ करने योग्य बना देता है। निन्हि = तरा को।

ताक = होई = उसका बिना कंठ नहीं बनना और वह ऐसा बात करता है जो और किसी के विचार में न आई हो।

साग = बनाया। अरहरि = मिर।

मये कर = समार में सब चलन और नागवान है किन्तु वह स्थिर और अचल बना रहता है जिसका ऐसा मान है अर्थात् उसी निराल की बटाई है। वह एक के प्रभाव है एक का विनाशक है और फिर चाहे तो उसी को बनाता है। अलखर = अलखर। अरगन = बरा रहित।

सो = मे। वरना = विना वरना के मरने वरना के तरह बटा हुआ भी हो सकता है। इस पद्य में वरना वरना का वह अर्थ होता कि सब उसमें रस्मी की तरह बटे हुए हैं और वह सब में बटा हुआ है अर्थात्

लिलार = नरनक । श्रोती = उतनी ।

टिपाई = टूँट होता है । महस जाई = महस करणों वाला प्रकाशमान सूर्य उसके द्वितीया के चन्द्रमा जैसा माथा टेग कर शरन के मारे टिप जाना है । सरवरि = वरावर । मयंकू = माँग । चाँड कलंकी वह निक्कलकू = चन्द्रमा कलंक वाला है पर वह निष्कलंक है (व्यतिरेक और प्रतीप अलंकार) हामा = ग्रन लेता है ।

दुडज दीठा = द्विज के सिंहासन पर मानो ध्रुवका नज्ज बँठा हो । कनक पार साजा = टीका ऐसा मालूम होता था मानो सोने के सिंहासन पर गव शृङ्गार और शस्त्रों से सजा हुआ राजा बैठा हो ।

ओहि .. मंजोऊ = उसके सामने जो कोट तुलना में रक्खा जावे वह स्थिर नहीं रह सकता । जायद ही ऐसी सुन्दर सामग्री का संयोग हो सकता हो । कहीं कुछ सामग्री कभी होता है और कहीं कुछ कभी रहती है पर यहाँ पर संयोग-वश सब उत्तम सामग्री उपस्थित हो गई है । अथवा उस रूपवती को देखकर कोई विचलित हुये बिना न रह सका देखें किसकी ऐसा संयोग उपस्थित हो जो उसे पा सके ।

खरग = खड्ग (नाक) धनुष = धनुष, (भोंह) चक्र = श्रॉन की पुतली (चक्र) वान दुइ = (कटाक्ष) हण = हने = मारे ।

खरग कुशोंव = नासिका रूपी खड्ग, भोंह रूपी धनुष, श्रॉन की पुतली रूपी चक्र और कटाक्ष रूपी दो वारणों का, जिनका नाम जग के मारने वाले हैं, वर्णन सुन कर राजा मूर्च्छित हो गया और कहने लगा कि मुझे वुरी जगह अर्थात् मर्मस्थान में मारा है ।

जो महु वाना = जो सामने देगता है उनको काली भोंहों के धनुष कटाक्ष रूपी-वारा मारते हैं ।

हने धुन गडे = उन भोंहों पर चढ़े हुए कटाक्ष-रूपी-वारा देखने वालों को मारते हैं और धुन टालते हैं । काल ने यह कैसे हथियार गडे

हैं अथवा जिन हत्यारे काल ने उनको बनाया है अथवा किसने इन हत्यारे हथियारों गढ़ा है । नेत्र राँकि = सुन्दर और तिरछे नेत्र ।

मानमरोवर दोऊ = दोनों नेत्र अपनी सुन्दरता के कारण मान-सरोवर के लालने अथवा मनरूपी मानमरोवर में उथल-पुथल मचा देते हैं ।

राने अपमर्वा = नेत्र-रूपी-लाल-कमलों में (नेत्रों की लाली सुन्दरता की प्रतीक होती है) छाँट की पुतली रूर्वा कमल भ्रमण करते हैं वे नम्र होकर (लाल शराब के रंग में धूमते हैं फिर नम्र क्यों न हो ?) धूमते हैं और ऐसे नालूम होते हैं कि वे आगे निकल कर भागना ही चाहते हैं ।

उग्रहि . . . लागा = वे नेत्र घोटों की भाँति उग्रते हैं और वे अपनी चंचलता के कारण लगाम से नहीं मानते हैं उड़ल कर आकाश में लग जाना चाहते हैं । बिशगी ने भी कहा है —

“लाज लगान न मानी, नैना मो यन नाहि । ये मुँहजोर तुरंग लौ;
ऐँचत हैं बलि जाहि ॥”

जग . . . माहो = नेत्रों के चरने से मनार उमाड़ोल हो जाता है और पल भर में ढेर के ढेर प्रजा प्रजा पट्ट लिफाँट उलट जाती हैं ।

मसुड . . . भूले = नेत्रों के हिलने पर मानो मसुड लहरें लेता है अथवा मानो खनन लरने के अथवा मानो मृग गन्ता भूल गये हों । नेत्रों के उड़ने पर यह तीनों उन्मत्तता की गई है ।

सुरर . . . ना = उसके नेत्र सुन्दर सरोवर की तरह हैं । उनमें लाख मशियाँ की लहरें उठती हैं । अर्थात् वे चरन हो रहे हैं और जो उनके निवट (वा किनारे पर) गाना है उसको वे नेत्र-रूपी-काले-भरि ऐसे मारने वाले काल-चक्र (भेंवर) में घुमाने हैं ।

काल-भरि यहाँ पर रिन्द है । इसके दो अर्थ हैं वाले भरें और वाल चक्र (भेंवर) बरनी = चलनी । इनि = ऐसी । घनी = तेज ।

नमिक' .. जोगू = नाक और गड़ग का क्या सुत्राविला करूँ ।
 मरग .. मयोगू = तलवार पतली है या अलग है को सुत्र के मरग
 का सौभाग्य प्राप्त है ।

शुक... "ऊ आ = शुक का तारा वेयर के मोती के रूप में उगा
अर्थात् शुक का तारा नाक का मांसिय चोहने के लिये उनकी वेयर से
माती बन गया ।

पुत्र्य - "पाप्मा = फूल इस आशा से मुगंध उन्नत करने हैं कि जायद वर अपने पस हमको हमारे मुगंध के डारण लगा ले । नाक के पाप्म करने का सौभाग्य प्राप्त करने की आशा से ही फूल अपने में गन्ध उन्नत करने हैं ।

अथ ... लोना = डेढ़ और दोनो पर नाल ऐसी जोड़ित है माले
अनार (दान) और बिन्दा फल (अणु) के लानच मे बाँँ नूँ
देद गया हो ।

रहाने = उमड़े दोनों और संजत पत्नी (नेत्र) के
 करने = न मालूम है दोनों उम न के पाम रहने का पूरा आनंद
 पाने के या नहीं ।

२७ देश - अरुण म. अरुण-रुण देश के लोगों ने नाक के
ना मारना मर लिया जिसके पदम-शम मुग्ध पटुर्त्ताई की और पटुर्त्ताई
पदम मर गया = २७ अरुण निरुद्ध का नाम नहीं हो जाता है ।

[illegible]

मृत = मृत्यु का स्थान । ति
दंडा १२ म मृत्यु २० ।

रवि परभातजूड़ी = हथेली सुवन्न के सूर्य के समान अरुण है, किन्तु उसमें और सूर्य में इतना अन्तर है कि सूर्य तो गरम होता है - - - - - लिए उसका स्पर्श सुखर नही होता किन्तु हथेली शीतल है और इसी लिए उसका स्पर्श सुखकर होता है ।

हियाचारु = हृदय अर्थात् वनस्थल थाल के समान है, उस कुच सोने के लड्डुओं की भाँति है । वे ऐसे मालूम होते हैं मानो सुन सोने के कटोरे उठे हुए हों ।

वेधे . . . कचुकी = ऐसा मालूम होता है कि केतकी के कटोरे भौरों को वेध लिया है और वे चोलो को भी वेधना चाहते हैं ।

जोवन.....वागा = यौवन के बाण लगाम नहीं मानते रहने लगे हैं । यहाँ पर दो रूपक मिला दिए गए हैं इसी को इंग्रजी में CONNECTION OF METAPHORS कहते हैं ।

चढ़े . . . लागा = प्रसन्न होकर बड़ी उमंग के साथ हृदय में लगाने चाहते हैं ।

उठंग . . . वारी उँचे उठे हुए नीचियों की रगवारी हो रही है (मुरझित है उनसे किसी ने हाथ नहीं लगाया है) राजा के वगीचा में कौन रुसभता है ? वारी शिष्ट है, वारी का अर्थ लटकी भी है । पर वारी रानी लटकी थी और एक दूसरे राजा के उपभोग के लिए लड़ती न त मुरझित थी । मुण = मर गए । भुँड = पृथ्वी । गए मरों हाथ = पड़ने लगे हुए चले गए ।

पृष्ठ २६

परन = परत नह । लावा = लेप । कुकुम = रोली, केशर । साम-काली । भुयगिनि = मयिणी । रोमावती = रोमराजि; शरीर पर छोटे-छोटे फल । नारी . . . चली = ऐसा मालूम पड़ता था कि मरि नारी के दिल से निकल कर मुख की ओर चली । नरंग = नर

होते हुए देख कर पीली हो गईं और निसिया कर अपने डंक से को छेदने लगी । नालखंड = कमल के डंठल ।

मानहुँ.....गए = कमर ऐसी मालूम होती है कि मानो कमल डंडी बीच में से दो टुक हो गई और उसके बीच के तार कम गये हों । कमल की डंडी जब तांडी जाती है तब उसमें से तार निकलते हैं । केलों के गामे को तोड़ने से भी उसमें से तार निकलते हैं ।

हिय .. तागा ? = हृदय की धड़कन से वा सोंम लेने सबह रूपी तागा हिलता है । पंग देत किन सहि सक लागा = पंग रखने किस प्रकार भार (लागा) सह सकती है । दूसरी प्रतियों में इस पाठ है 'पंग देत कन सहि सक लागा' अर्थात् पंग रखने में कितना (ढर) लगता है ।

नाभिकुण्ड.....गैर्भार = नाभिकुण्ड मलय समीर (शरीर सुगन्धित वायु से) ऐसा गहरा होकर चकर खाता है (भवै) जैसे समुद्र का भँवर ।

नीचड़ .. चीरु = स्त्री के शरीर में कमल की गंध है और वह पग लहरियादार चीर गोभा देता है ।

वरनि .. जोग = उसके अचूत (अभोग) नञ् शिञ्ज सोन्दर्य वर्णन करने की मैं सामर्थ्य नहीं रखता हूँ । यस्मात् मैं उसके योग्य चीज नष्टा मिली जित्थम उपमा २ ।

गाना .. आटे = न नां उसे लू (मुरा के लहर) लग गई । विनंभार (वि + नंभार = शरीर की नंभार रहित) वेमुध ।

वृण्ड २०

भाँवरि = चक्र । निन निन = चला-चला ।

वह सब में श्रेष्ठ श्रेष्ठ है। उस मत में मुसलमानी भाव कम है, हिन्दू भाव अधिक है। आगे की पंक्ति में यह बात बतला दी है।

धरमी पापी = धर्मवान् पापी = धर्मवान् पापी है, पर पापी नहीं पहचानता है।

जना न बन्हु = उसने किसी को नहीं उत्पन्न किया और न किसी ने उसको उत्पन्न किया किन्तु जहाँ तक जो कुछ है उसी का किया हुआ है। ऊपर कहा कि उसने किसी को नहीं उत्पन्न किया है इसका अभिप्राय यह है कि उसको किसी के उत्पन्न करने का कष्ट नहीं करना पड़ा। सब उसकी इच्छा मात्र से हो गया। जैसे पिता पुत्र को उत्पन्न करता है उस प्रकार उसने किसी को उत्पन्न नहीं किया। इसी लिए आगे कह दिया कि जो कुछ है सब उसका किया हुआ है। कीन्ह = किया हुआ।

हुत कोई = वह पहले था और अब भी वही है और फिर भविष्य में वही रहेगा और कोई नहीं रहेगा अर्थात् सब के नाश होने पर भी वह रहेगा। इसी लिए हिन्दू लोग उसे 'शेष' कहते हैं।

और अंधा = उसके अतिरिक्त संसार में और जो कुछ है वह बावला और अन्धा है अर्थात् संसार के और सब लोग पागल और अज्ञानी हैं और दो चार दिन अपना काम करके अर्थात् संसार में रह कर नाश को प्राप्त हो जाते हैं।

बड अनेक (अनेक) = वह मालिक बड़ा गुण वाला है जो चाहता है उसे शीघ्र ही, बात की बात में, बिना किसी प्रयास के बना डालता है। वह ऐसे गुणियों को (अर्थात् मनुष्यों को) बनाता है जो अनेक गुणों को प्रकाशित करते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि वह स्वयंही गुणी नहीं है वरन् जिनको वह बनाता है वे भी गुणवान् होते हैं। यही परमात्मा का महत्त्व है कि वह ऐसे गुणवान् मनुष्यों को बनाता है।

पृष्ठ ३—इस पृष्ठ से मुहम्मद साहब की स्तुति प्रारम्भ होती है।

गग गति लेई = गगा में जाकर गति (सद्गति) को प्राप्त करता है।

मैं ... परावा = घरदार की मैं क्यों फिक्र करूँ, मैंने उसे कहाँ पाया, एक घड़ी भर को वह अपना है और मर जाने पर (अथवा राजभ्रष्ट होने पर) पराया हो जाता है।

हों ... जाहु = मैं तो राहगीर और पक्षी हूँ। जिस वन में मेरा ब्याह होगा (विधाम मिलेगा) उसी वन को मैं अपना खेल खेल करता हूँ। तुम लोग अपने-अपने घर जाओ और अपना काम देखो। ननु यरमाना के पान से आया है वही उसको विधान मिलेगा, यह भाव।

आन सोडिया फेरी = नक़ीबों ने (सोडिया = सोटे बदर = नक़ीब) आन की आज्ञा (आन) को सब लोगों ने पहुँचाया। तुरय = तुरग = घोड़ा। तरग कै डीठी = योगियों की भोति आकाश पर दृष्टि लगाये हुए। माया = माता।

माथे ... पाया = तुम्हारे मस्तक पर हमेशा छत्र रहा है और पैर महासन पर रहा है, तुम क्यों जमीन पर रहो और योग साधो?

लच्छि पियारी = लक्ष्मी के समान प्यारी स्त्रियों को। लिलसहु = लीलागो। जिनि = मन, नहीं। भरन = भरने हुए, खाने हुए। दर = दरवाजा। परिग्रह = परिग्रह = नाक-चाकर साज-सामान आदि। प्रजियार = प्रकाशित होने हैं अच्छे लगते हैं।

वैट अथियर = पर धन का आनन्द क। और यहाँ पर अथर करके न चले जाओ।

जो नरा = जो दान में। निचान = निदान = अन्न में। गरीर नाश होगा ही तो व्यर्थ हम गरीर-रूपी-मिथी के दर को पालना हुआ कोई क्यों जान दे।

गोपीचन्द = एक राजा जो योगी हो गये थे।

हैं। योगी को दृष्टि स्थिर करना पड़ती है। वह भी आगे को देखा
और उसको मार्ग में बहुत सी घाटियाँ (कवन अरु कामिनी दुर्गम
यो दीप) गौर कठिनाइयाँ पड़ती हैं। अहरेजी की पुस्तक (Pilgrims
) में भी इसी प्रकार की आध्यात्मिक यात्रा का वर्णन है।

पौरी = पावड़ी = गटाऊँ । अकौरी = कऊँ । बीन बन = निजंन
न। दुर्ग = दीप = देवें कौनसा रत्ना निहल दीप को जाना है।

नाट—आध्यात्मिक मार्ग के यात्री को भी इसी प्रकार का संदेह
हुआ करता है। फिर मुद्रा (गुरु) आगे होकर उसे सार्थ मार्ग
बतलाता है।

नायक = साक्षात् = यदि राज बाना चाहता है तो। गजपती =
कलिंगदेश का राजा। पहुनाई = गतिरहारी। हन तुम्ह एकै, नाय
गिरा = हम तुम बान्धव में एक ही हैं देखते न अलग-अलग हैं।

रोहित = जहाज। निजु = जान तोर पर। अरु = सेना। जो ...
वर = यदि जिन्दा रहा तो लोहूँगा और यदि मर गया तो उसी के दरवाजे
पर नमस्कार।

नांर पर मो ग = आपसी यात्रा (गंगे) निर पर है। मोना =
कनी। नय गटे = नय जाने हुए। बोनिव ... = नौका कनी अरु
ना एम गरी दे सकती दालिये नये अरुन बनर ये देता हूँ।

पूव ... = पूव ये हो प्रत्यक्ष देखा देव पर उठे। उम्हो पूवो
हा हाता आर्यर ह जो देता जाये अरु हो नये। उम्हो मनुष्य
अज न री उ जो पूव देता या लेता पर लके। निव ग = दित्त।
सकनी लीक = सकी। लीजा = अरुन अरुन।

गजपति ... लीक = गजपति ... अरुन अरुन ...
गजपति ... दे सकी निर निजु अरुन ... है। निरुन ...
अन पजा ... है उम्हो निरुन अरुन ... है अरुन ...

दत्त ... रोम = धर्म, कर्म और नियम में चलने वाले दत्त आद-
र्यों में कोई एक विरला ही भगवान तक पहुँचना है। जहाज द्वारा जल
मुद्र से पार हो जाये तभी कुशल होन सम्भूतता चाहिए। मार्ग में
हुत से विघ्न आ सकते हैं। इस दोहे के ऊपर की पंक्ति में गीता के
संश्लिष्टित श्लोक की झलक पाई जाती है।

मनुष्याणां मर्त्येषु कश्चिद्यताते निद्वये ।

यततामपि सिद्धानां कश्चिन्या वेत्ति तत्त्वतः ॥

अर्थात् मर्त्या मनुष्यों में कोई विरला सिद्धि प्राप्त करने के लिए
कोशिश करता है और कोशिश करने वालों में भी कोई ही मुक्तको
प्राप्त होता है।

सायर = नागर। सत = सत्य। जो जिउ सत कायर पुनि सूर =
दय में सत्य होने से कायर भी शूर हो जाता है। बोहिन कुरी = जहाज
तन्मूह। लाये पारु = पार लगाता है। चढ़ पतारा = उछर
गलमान तक ऊँची जाती है और फिर पानाल तक नीची चली जाती
। तरेहोहे = नाँच चले जान ॥ उपगर्ग = ऊपर आ जाते हैं।
हि कौधा = जिन सत्य का महारा लक्षर पराउ बंध पर
ले लिया जाता है।

५२ : ६—

असि के स्थान में 'अस' पाठ हो तो अच्छा है, क्योंकि एक बार कह कर असि कहने की आवश्यकता नहीं। दीन्ह.....वीरा = दी। वीरा का शब्दार्थ 'पान' है।
अक्रा :

यहादुर होती है ।

जो ... कोधा = जब तक सती श्रपना मन दड़ नहीं करेगी
तब तक महार लोग उमकी पालकी नहीं उठाते ।
कान = (करी) पतवार

कान = (कण) पतंगार । मसुद = मसुद्र, इसका यह भी अर्थ
(स + मुद्र) मोद सहित । यह अर्थ यहाँ पर ठीक बैठता है ।
कान होइ = राजा है ।

ज्ञान होइ = राजा के प्रोन्नत बन देने पर सबने प्रसन्न
साथ पत्नवार हाथ में ले लिये अथवा सब लोग पत्नवार लेकर समुद्र
प्रागें चले और राजा के जहाज के पीछे हो लिये । कोई किसी दूसरे
नहीं सम्मानता है सब अपनी-अपनी फिक्र करने हैं ।
तुमार = तुमार देश के प्रांते । गरियार = मुस्त ।

पृष्ठ ३०—

गुप्ता = गुप्तक। गुरुप्रा = गुरी। कोन्ता = कोन्दा। भौर = भौर।
 छोटे ब्राह्मण = छोटे मन्त्र ब्राह्मण।

दाँ = दाँत । मर्या = मारी । कोला = कोला । भौर = भौर ।
 बाहौ = बाँह । मर्या नहीं करना है । अगमन = अगमन ।
 दा = दाँत । यग = यग । बाह = बाँह । परेगा = परेगा । दूत = दूत ।

ज्ञान = उपर का साधारण अर्थ नो स्पष्ट हो है । अतः
 प्रथम यह है कि इस एक मनुष्य प्रपन्न कर्मों के अनुसृत न
 के वरत लगता है । इस प्रपन्न वरत लगता है छोटे पीछे ।
 प्रायः - मन न निश्चित है ।

मन - मन न स्थित नही तो सिद्धि प्राप्त हुई।
 मन स्थित नही तो सिद्धि नहीं मिली।

शक्ति ... खोले = यह है ! यह है ! कह कर सब नाथी पुकारने लगे । जो लोग अभी तक अन्धे के समान थे परमात्मा ने उनके नेत्र खोल दिये । अध्यात्मिक पक्ष में इसका अर्थ यह है कि साधक-जीवन में ऐसा समय आता है जब कि उनके आन्तरिक नेत्र खुल जाते हैं । और उसी समय सब बातें स्पष्ट रूप में दिखलाई देने लगती हैं और उसी समय परमात्मा ने पूर्ण विग्वह आ जाना है ।

कबल ... लेही = नान्तरीयर ने आकर देखा कि कमल खिलते हुए हैं रहे हैं और भौरे उनके (अर्थात् अपने) दाँतों द्वारा रस ले रहे हैं ।

नोट—ऐसा मालूम होता है कि बीच में कुछ रह गया है और यह वर्णन पद्मिनी स्त्रियों का है कि वे कमल की भोगि हैंती हैं और अनर दाँतों से रस लेते थे ।

शुँ के स्थान में और प्रतियों में दिन पाठ है वह अधिक ठीक प्रतीत होता है । जुडन = जुड़ा हुआ । कचन मेर = ताने का चुनेर । जग आव = सत्तार में आ रही थी अथवा जग रही थी ।

विहरन आदी = विहारादित्य । हरिचन्द्र जैन मतवादी = हरिचन्द्र । सतवादी = सत्यवादी (वन) का बोलने वाला । देन का अर्थ राजा वेगु भी हो सकता है ।

जीत कैल नु = तर प्रम न पृथ्वी हर उज्ज्वल का नाम लिया और कैलास के समान प्रकाश वाला मिहलनप दिगद पदन लान रन्ना = न्नी ।

भौर ताना = जग न्नी पद्मवर्न १ किन्तु जग उज्ज्वल न र अर्थात् उसके मो दप का उपनान करन वाला नह न न न न न न वही परन्दा भी पर नह न न न न न न

पाविल पद = शुद्ध पद । निरी-रचन = अत्यन्त पवन

पृष्ठ ३८—

बारु = डार । उवरिहि = खुलते हैं ।

नोट = वसन्त पंचमी को लोग महादेव जी की पूजा करते हैं ।
देव जी ने राम को जलाया था वसन्त ऋतु में कामदेव के
तथा ग्रावानों से बचने के लिए लोग महादेव जी का शरण में

मिनि = वहाने से । दंड मंरावा = दंड का मिलान । पूरे =
करै । पूरे = पूर्ण करै । यमक अलंकार ।

पृष्ठ ३९

प्रेम खंड

जोग-सयोग = स्तनमेन के योग के प्रभाव से ।

कैंचाच = कैंच की फली जिसके स्पर्श से शरीर में सुखी
लगती है । चंदन चीरु = चंदन के लेप में भोगा हुआ कपड़ा । गंभीर =
गहिरा । कल्प = कल्प पुरुष महेश्वर चतुर्थी का समय । तित.....गाई =
पुरुष चण पुरुष युग के समान कठिन मान्य होता था ।

सवि शयन = चन्द्रमा की सवारी = मृग । श्रीनाई कुह आता था
गई बीन श्रीनाई । पद्मावती इस काल में बीन हाथ में ले लेते
थी कि गायक (मृग) बीन बजाने से कुछ मन बहने और रात को
जाग किन्तु दुर्भाग्य से उसका दुवरा असर होता था । उसकी बीन सुन
कर चन्द्रमा को सवारी का मृग उस ओर आकर्षित हो जाता था और
गान के आनन्द में रही रहता जाता था । इस कारण चन्द्रदेव को भी रात
को गाना बजता जाता था और रात बही बीनती थी ।

गई बीन गायी । गई बीन (गीत) चन्द्रदेव के महान की रही
आता गीत ७ । गीत गीत का गीत गीत गीत (गीत गीत = गीत
गीत) गीत गीत = गीत का गीत

कहें * परेवा = वह रत्न लेने वाला भौंरा कह्यो है कि वह अबूत की तरह कला खाता हुआ उसी के आंगन में आकर गिर पड़े।

नो * * लीप = वह स्त्री जिन्ह में पतंगे के नमान होंगई और अपने प्रेम मात्र रूपी दीपक में जलना चाहती है। उसका प्रेमी भूढ़ी (लखेरी) बन कर नहीं आते जो भूढ़ी आर पतंगे की भौंति उसे अपने रूप में मिलाएँ करने में क्या। जो गुंसा नहीं हो रहा है तब चन्दन के छेप लाने ? हेरी = दिखाई पड़ता है।

चतुर दिना = चारों दिना। नति = मालती। यहाँ पर रतनमेन की ओर नकेन है। कमल * पावे = उसी वन में पद्मावती रूपी कमल की रतनमेन रूपी भौंरा मिलेगा।

अग * * * पतपीरी = उनके शरीर का अंग-अंग कमल की भौंति था। उसका हृदय पीला होकर परस्पर प्रेम की पीड़ा का लौकिक बन रहा था।

चहे * * प्रवास = वह कमल के शरीर वाली पद्मावती रतन सेव रूपी रवि का दर्शन करना चाहती है। रवि के उदय होने से उसकी प्रसन्नता हुई। जब वह नंगे के समान वारा तुलसीपत्र वाली रवि से प्रसन्न की ओर ध्यान लगाकर देखती है। जिह न लौग प्राय आकाश की ओर देखते हैं। प्राय = परिवर्तित। परि = उपरी। राता = लाल। रतन = पीला रंग। भौता अम पीला। पत = पतंगे पर हवा का भी नजर नहीं है और यही नारा ना स्थापन है। पतंगे नंगे से लिपना करिये जा फिर हुआ था। जब पतंगे हवा को छेदिये तब भौंरे की चरित्र हो गया था। यह पतंगे नंगे वरतन है।

भूडि रात = भूडि हुई रात का पतंगे के नंगे वरतन नंगे नंगे से लिह दिखाने का वरतन है।

इउ ४०

भाव राती = पद्मावती कमल की पीड़ा को लिह कर रतन

पुरुष निरमरा = निर्मल मनुष्य, तात्पर्य है हजरत मुहम्मद से ।

पूनी करा = पूर्णिमा के चाँद की कला (की भाँति पूर्ण प्रकाश युक्त) ।

प्रथम '....' उपराजी = ईश्वर ने मुहम्मद साहब को प्रथम ज्योति ~~...~~ ।

के रूप में बनाया (मुसलमानों के यहाँ ईश्वर को प्रकाशमय माना है)

और सारे संसार को उस से प्रीति करने के लिए अथवा उसकी प्रसन्नता के लिए बनाया । इसमें मुहम्मद साहब को इतना महत्व दिया है कि सारे संसारको उनके लिए बनाया है, ऐसा कहा गया है । मिहिर = सृष्टि ।

लेसि = जला कर । मार्ग चीन्हा = सन्मार्ग को पहचाना ।

दीपक '... लीन्हा = ईश्वर ने मुहम्मद साहब को संसार के लिए दीपक के रूप में प्रकाशित करके दिया अर्थात् उनको संसार का पथ-प्रदर्शक बनाया । उनके कारण संसार में सन्मार्ग को पहचाना और मल-रहित हो गया (मुसलमानों का विश्वास है कि मुहम्मद साहब अपने अनुयायियों के गुनाहों को माफ़ करारवेंगे) ।

उजारा = उजियारा, प्रकाशमान और प्रकाश देने वाला ।

पाटन = मुहम्मद साहब का बतलाया हुआ पाट, बलमा अथवा उनकी दी हुई गिरा । बलमा यह है—“ला इलालिल्लाह, मुहम्मदुर्रसूलिल्लाह ।”

दूसरे निगमे = परमात्मा ने बलमा में उनको (मुहम्मद साहब) को अपने पश्चात् दूसरा स्थान दिया । जिन्होंने उनकी गिरा ली और बलमा पढ़ा वे लोग धर्मी हो गये । लाइलाहल्लिल्लाह मुहम्मदुर्रसूलिल्लाह का अर्थ है कि अल्लाह के सिवाय और कोई दूसरा नहीं है, मुहम्मद मुझ का रसूल है ।

दई = ईश्वर । बर्नैट = रसूल दूत । ‘रसूल पैगम्बर जान बर्नैट ।
-‘खालिफ़दारी ।

दुह '... लीन्हा = जिन्होंने उसका नाम लिया वह इन लंदर और परलोक दोनों में तर गया, उसने भ्रम और भ्रम दोनों की प्राप्ति की ।

खालेता तो अचढ़ा था अथवा मैं लडकी ही बनी रहती अर्थात् मुन
यौवनावस्था की पीडा न भुगतनी पडती ।

जोवन.....मैं मतू = मैंने सुना था कि जोवन बसत के मन्त्र
है किन्तु उस वन में विरह रूपी मन्त्र हाथी धुमपडा है ।

अव . . . साम्बा = अव यौवन रूपी बगीचे की कौन रत्ना कंज
विरह रूपी हाथी (कुंजर) उसकी शाखाओं को तोड रहा है ।

समुद्र समानी = समुद्र की भाँति गम्भीर और सय नी । नरी =
बराबरी । समुद्रडोल = अपना धर्म छोडकर नदी.....समाई = चुप
छोटी नदियाँ तो समुद्र की शरण में जाती है । समुद्र अपनी मर्मा
नहीं छोडता । समुद्र अपनी मर्यादा छोड देतो वह कहाँ जावे ? (नदी
बढती हैं तो समुद्र में चली जानी हैं) बडे आदमी जब धैर्य धैर्य
देगे तब छोटे आदमी कहाँ जावेंगे । कंवल करी = कमल की क
अर्थात् अभी बालिका ही है । आइहि.....जोरा = जो तेरे जोड के लि
भौरा ईश्वर ने नियत कर रक्खा है वह समय पर आवेगा (कली प
भौरा नहीं आता फूल खिलने पर आपसे आप आजाता है । जब
नीर = जिस प्रकार समुद्र के बीच में बडवाग्नि को सहती हुई सीप स्वा
बूँद की प्रतीक्षा करती है सो तूभी जब तक प्रियतम न मिले तब तक
को साध अर्थात् सहन करे ।

देह . . घीऊ = हे धाय यह यौवन जीव को ऐसा जला रहा
मानो अग्नि में घी पडा हो ।

कवत = प्रारा । दाधा = जलन । अमँभारा = सँभाल से बाहर,
सँभला न जा सके ।

भौरा मारा = पानी के भ्रमर ने जीव को चक्कर में डाल
लहरों से मारा । उपना = उपना । बँध सत = सत्य अर्थात् धैर्य धैर्य
मन . . . भारी = मन को अधिक चञ्चल न बना । जोआमी
जो हृदय में सत्य है तो अग्नि शीतल हो जावेगी ।

मालेता तो अन्धा या अथवा मैं लक्ष्मी ही बनी रहती अर्थात्
यौवनावस्था की पीड़ा न भुगवनी पड़ती ।

जोवन ... मैं मनु = मैंने मुना था कि जोवन बचन के
हैं किन्तु उस वन में विरह रूपी मन्म हाथी घुसपड़ा है ।

अथ ... साधा = अथ यौवन रूपी बर्गाने की कोन रत्ना
विरह रूपी हाथी (कुजर) उसकी शाखाओं को तोड़ रहा है ।

समुद्र मनानी = समुद्र की भाँति गम्भीर और मयनी । मरि
बराबरी । समुद्रडोल = अपना धर्म छोड़कर नदी ... समारं =
छोटी नदियाँ तो समुद्र की शरण में जाती हैं । समुद्र अपनी मय
नहीं छोड़ता । समुद्र अपनी मयांदा छोड़ देतो वह कहाँ जावे ? (नदि
बढ़ती हैं तो समुद्र में चली जाती हैं) बड़े आदमी जब धर्म वृ
देने तब छोटे आदमी कहाँ जावेगे । कञ्जल करी = कमल की क
अर्थात् अभी वालिका ही है । आइहि ... जोरा = जो तेरे जोड़ के बि
भौरा ईश्वर ने नियत कर रक्खा है वह समय पर आवेगा (कर्ता प्र
भौरा नहीं आता फूल खिलने पर आपसे आप आजाता है । जय ...
नीर = जिस प्रकार समुद्र के बीच में वडवाग्नि को सहती हुई सीप स्वादि
बूँद की प्रतीक्षा करती है सो तूभी जब तक प्रियतम न मिले तब तक पर
को साध अर्थात् सहन करे ।

देह ... घीऊ = हे धाय यह यौवन जीव को ऐसा जला रहा है
मानो अग्नि में घी पड़ा हो ।

करवत = प्रारा । दाधा = जलन । असँभारा = सँभाल से बाहर, जे
सँभला न जा सके ।

भौरा ... मारा = पानी के भ्रमर ने जीव को चक्कर में डाल क
लहरों से मारा । उपना = उपजा । बाँध सत्त = सत्य अर्थात् धैर्य धर ।
मन ... भारी = मन को अधिक चञ्चल न बना । जौ ... आमी =
हृदय में सत्य है तो अग्नि शीतल हो जावेगी ।

अमारी = मेल । चांचरि = म्वांग । सेंदुर-वेह = निन्दूर की राख ।
रिड = मच ।

पृष्ठ १५—

तुनानी = इकट्ठी हो कर पहुँच गईं । पैनारा = प्रवेग । नहारा =
अनियेक किया । मरी = मदी ।

निर्गुण = गुण रहित, अज्ञानी । गुन देवा = गुन सदके
हो गुणी निर्गुणी का न्याय नहीं करने हो । मेरवहु = निलावो । क
जाति हों म नि = मैं कलम चढ़ाने की मदन मना जाती हूँ । नि
छिप प्रायः महादेव पार्वती की ही शरणा को जाना है । मीठा ई
गौरि की पूजा करने गये थे । कौतुक = तमाशा, अचम्बे की व
तंत = तन । नि रे = निकले । अनु ... योग = मानो गुट देकर
मे मद्र को पागत कर देना है । प्राय लोग कुछ निला कर जड़ फि
करने हैं । गुट से यहाँ पर रूप-मायुर्य की ओर मकेत है । दमपूतन =
मन्त्र योगिया ने वर्त्म लक्षणों में दमवों लक्षण मन्त्र कहा है । पिंगला = इ
पिगला न ही निसे यागिय को काम पढत है । पिगला हेतु = नि
नाडी का सिद्ध करने । गार्पाचद की म्या का नाम पिंगला नहीं था ।

करी अरन = रुदनी वन । मुद्रा = करने की रीति । अवत
मा । म यामों । च प = चकोर के स्थान में कवोर गड चाहिए । क
म न छारा क । छारा की मद्र (गगय) से भरा जा सकता है ।

महुँ = मामन । रिमि = दृष्ट ।

गर्गा ... द हा = गर्गा न पद्मावती से दृष्टि निलाई है
अप । ... म पद्मवती का शरणा का प्रेम का मद्र लक्ष्य है
दा गया ।

पृष्ठ १६

लीह ... गाल = जिसका प्रेम का मद्र चढ़ता है वह डरी ।

काली = कल । आली = मर्षी । रवि (सांकेतिक अर्थ) ।
 रावनगद = लंका । मनो राम ने लंका पर चढ़ाई की है ।
 निवेद्य = यहाँ पर अनटोनी से मालव है ।

अरजु.....बान—वेधा = अर्जुन के वाण से राहु मङ्गलीवेध
 द्रोपदी के स्वयंवर में धर के लिये यह पीछा रानी गई थी कि वे
 चलते हुए चक्र के बीच में होकर तेल के पात्र में मङ्गली की परीक्षा
 कर उसका वेध करे वही द्रोपदी को यह समझेगा । अर्जुन ने उसके
 का द्रोपदी को प्राप्त किया और अपनी माता की आज्ञा के अनुसार
 का पाँचों भाइयों से विवाह कर दिया ।

पृष्ठ ४७—

लंक = लका । विधंसी वारि = हनुमान ने बाटिका भा बिज
 दिया । वर = द्वार, मन्दिर । परसन = प्रसन्न । तुम्हसानी = तुम
 प्रसन्न हुई ।

देवआनी = देवता ने आकर मिला दिया है । पच्छिउँ =
 पश्चिमी खण्ड । रामा = स्त्री । लागि तुम्ह रमा = तुम स्त्री के लि
 बुगिला = पूर्वान्म का । रस = आनन्द । कै = करके । तब वसत
 भई = तब उसको होग आया कि वसन्त होगया और पद्मवती
 गई । वसन्त की खबर होता मुहावरा भी है ।

ना .. सुहाई = न वह (पद्मावती) है और न उन्का पुत्र
 रूप है । हेराई = खो गई ।

केइ... तारा = इन वपते हुए वसन्त की किन्ने उठाया
 रंग में भग कर दिया ? वह चाँद स्वयं चला गया और तारण के
 अस्त (अथवा) हो गया । दया = दात्राग्नि । दुहेला = दुखित । हुँत =
 आँक = अक्षर । पाजरे = प्रज्वलित हो रहे हैं ।

अब.....सेली = अब ऐसी मुयोग कहों है जो उम्मीद
 डालूँ। जब मैं स्वयं जल कर नाक होजाऊँ तभी मैं फागें से
 अधिकारी होऊँगा। अपनी ही ग़ारु मर पर डा लनेकाविष हो।

कित = क्यों। गयउ काजू = राज्य का आनन्द भी गर
 कार्य भी सिद्ध न हुआ दुविधा में दोनों गण माया मिला न
 सर = चिता। वालिकै = डालकर। भयमेत = भस्म।

परवत रगवारी = मि लद्दीप के उभी परत में लक्ष्मण
 करते थे।

नोट—हनूमानजी ज़मर माने जाते हैं।

देह उठि होंग = वहाँ से उठकर गरत लगाते हैं। अथवा
 करते हैं।

पूरी पुस्तक में भाव यह कि हनूमानजी जिन्होंने लंका जल
 और खुद नहीं जले थे वे रत्नमेन की वियोगाग्नि से जलने लगे
 उन्होंने अपने वचने के लिए जिवनी में करियाद दी थी।

रावन लंका हौ उही, वह दाँदाहै आव।

गण पहार सब औटि कै को रावे गहि पाव ॥

कुस्ति = कोढ़ी। हन्ती कर दाला = हाथी की गाल। महें
 मरे हुए हाथी का आधा शरीर लिए रहते हैं।

पृष्ठ ४६

चँवर = चौर। घट = घटा। धने = स्त्री। अवतहि = आते हैं।

न लागी = तुम भस्म मत हो तुमको उम्मी की क्रम है नि
 करण जलते हो। की वियोग = क्या तुम अपने तप को पूरा कर
 में सफल नहीं हुए या तुम्हारा योग भ्रष्ट होगया। जीते जी बिना नै
 था! तुम अपना जीवन क्यों दे दे हो? तुम अपने दुग् (वियोग) के
 मारा हाल कहो। बिलमावा = भरम या भुलावे में डाला। निस्तार =
 निस्तार हो जाये। मर जाने से सब मामला एक ही चार तय हो जावे।

गुन मोख = कयामत (प्रलय) के पश्चात् जब सब आत्माओं के पाप-पुण्य का हिसाब होगा । मुहम्मद साहब अपनी उम्मत (सम्प्रदाय के लोग) के आगे होकर उनकी सिफारिश करके अपने अनुयायियों की मोख करावेंगे । मुसलमानों का विश्वास है कि मृत्यु के पश्चात् रुहें पड़ी रहनी हैं (वे लोग आवागमन नहीं मानते) और कयामत के रोज़ वे जगती है और उसी रोज़ उन के शुभाशुभ कर्मों का हिसाब होता है । उस हिसाब के समय मुहम्मद साहब सब के आगे खड़े होकर बतलाते जाते हैं कि कौन बख़्शने के योग्य है और कौन नहीं ।

विशेष—पाँचवे दोहे के आगे बादशाह की स्तुति है ।

सेरसाह = शेरशाह सूरी, जिसने हुमाँँ को परास्त कर राज्य अपने अधीन किया था ।

चारिउ . . भानू = चारों खण्ड में अर्थात् पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्खिन में सूर्य की भाँति उसका प्रताप (तेज) फैला हुआ है । जस = जैमे । तपै = प्रताप विस्तार कर रहा है । छात औ पाटा = छत्र और मिहामन ।

ओई . . लिलाट = उसी को छत्र और मिहामन शोभा देते थे अर्थात् वही उनके योग्य था । अन्य राजा गण उसके आगे ज़मीन पर माथा टेकते थे ।

जाति सूर और खॉडे सूर = वह सूर वंश का था (इसीलिए वह सूरी कहलाता था) और तलवार का भी सूर (बहादुर) था ।

पूरा = भरा हुआ । सब गुन पूरा = सभी गुणों से युक्त ।

नवाण = झुकाये, अपने अधीन किये । बड़ = उसने । नई = झुक गई ।

नवौगण्ड = जम्बूद्वीप के नौखण्ड । वे इस प्रकार कहे गये हैं । भारत-वर्ष, किन्नरवर्ष, हरिवर्ष, कुरुवर्ष, हिरण्यवर्ष, रम्यकवर्ष, भद्राश्ववर्ष, केतुमालवर्ष, और इलावर्ष ।

तहँ . . कीन्हा = उसने अपनी तलवार के जोर से उतना सब देश

करते हैं वह सफलता नहीं पाते हैं । सिद्ध लोगों की दृष्टि होती उनकी दृष्टि सिद्ध के समान आकाश में रहती है, उसे वग में हो सकेंगे, बिना दल के कुछ भी काम सिद्ध नहीं है ।
 गुदर = राज-द्वार । दर = दल = जाति । नैन = नय, अमृन्ध = अपार । गाढ़ = संकट । शकुर = न्यायी । नौद = न

पृष्ठ ५७

रन भागन = महानाग्न का युद्ध । सत...रनि = सत-
 आधार पर इन दृष्टि रहेंगे अर्थात् इनाग वाल बँध नहीं होगा ।
 चेला निध होइ—चेला को भी सिद्ध की नीति को ब
 देना चाहिए । बार = द्वार । कोइ = कोय । एहिमें = इसमें, प
 पानिहि...नरा = नदग पानी का क्या बिगाड़ सकता है । नद
 काटे भी तो पानी फिर जेमा का जेमा हो जाता है । रावे = रा
 छकि धरे = धरे कर पकड़ लिया । नैलागीवा = गर्दन में ल
 विमनौ = दुःख ।

नोट—रनमेन ने जो अपने साथियों को उपदेश दि
 अहिमानक युद्ध का है ।

नै...येना = मुझे गर्दन में फटा पड़ने का अफसोस नहीं है
 मैंने जिस राज प्रेम-भाग में पंर दिया था उसी दिन गर्व ने
 डाल ली थी ।

परगट... जावे = उहाँ तक मेरी दृष्टि जाती है और उहाँ न
 जाती है नय उगत प्रियतन का नाम मनाया हुआ है, जिस
 उसी की देवता हैं जेमा कोटे न्यान न्हा उहाँ में जा नहीं । जि
 नय नय जग जानी ।

जव...दीन्हा = जब तक गुरु को नहीं पहचाना तब तक
 और मेरे बीच में मैकड़ों पड़े थे । मनुष्य जब तक ईश्वर को नहीं

हीरामन तोते को बुलाती है। विग्रह-रूपी-ग्रहण मानो उसके जंतु हरे ही लेता है।

नोट—यह उन्माद की सौ अवस्था है। पूर्वानुग (मिलन-विरह में) दशा दशाणें मानी गई हैं। उनमें उन्माद दशा है। उन्माद दशा है उसका वर्णन 'धरी चारि इमि गर न गरामी' में हो रहा है, दशम दशा मरणा है, उसका वर्णन प्रायः नहीं किया जाता है। सौ अवस्था तक पहुँचा कर वास्तविक मरणा बना दिया जाता है।
स्निग्ध = चरण में।

कैवलहिं.....गाढ़ी = पद्म-वती के विरह की व्यथा ऐसी केसर के समान उसका पीला शरीर तो था ही, विरह के कारण हृदय में गहरी पीर (पीलापन और पीड़ा) हो गई। दगध = कारा = लपट।

होइ.....सोइ = ऐसा भालूम पड़ता था कि मानो शरीर में हनुमान प्रवेश कर गए हैं और लंका को जला रहे हैं। वज्रांगी = अग्नी कठोर अग्नि। सायर = सागर। हिय-वारी = लड़की के हृदय अथवा हृदय-रूपी-बगीचे में। वारी का अर्थ बगीचा लगाना उपयुक्त है।

दुहेली = दुस्मित। प्रीति-बेलि—सोइ = प्रीति की बेलि किमी न उलझे अर्थात् कोई प्रेम के फन्दे में न पड़े। जो एक बार जू गई तो मरने पर भी नहीं सुलभती। टेके पाया = पैर पकड़ने हुत = से, द्वारा।

कहतपीऊ = कहने में लज्जा लगती है और बिना कहे नहीं जाता। एक ओर तो लोक-लाज की आग है और दूसरी ओर प्रेम का प्रेम। अगर बोलती हूँ तो कुल-कानि जाती है और नहीं बोलूँ तो मैं अपने प्रियतम का प्रेमिका नहीं।

खेचक = नाव चलाने वाले । दमनहि = दमयन्ती को । मेरावा = गया ।

नोट—जिस प्रकार रतनसेन और पद्मावती के बीच में तोता था उसी प्रकार नल और दमयन्ती के बीच में हस्त था । हस्त ने ही नल को दमयन्ती की खबर दी थी ।

तुम्हें हीरामन नाम कहावा = तुम्हारा नाम भी हीरामन है, तुम उससे नहीं हो ।

भूरि भानु = शक्ति का बाल पीड़ा देता है (सालै) और जीवन बूटी जिससे प्राणों की रक्षा हो सकती है मेरे पास नहीं है । अब यह शरीर से छूटता (मुक्त) चाहते हैं, शीघ्र ही रतनसेन-रूपी-भानु मुझे दिखाओ ।

नोट—'येगि दिखावहु भानु' यहाँ पर ठीक नहीं बैठता । क्योंकि यहाँ लक्ष्मणजी को शक्ति लगाने की कथा का उल्लेख है । उस कथा में तो कहा था कि यदि सूर्य निकल आवेगा तो लक्ष्मणजी नहीं बचेंगे । यहाँ तो संजीवन-बूटी मँगाना ही उपयुक्त है । कुछ तो वानु और भानु का न्यायानुशास मिलाने के लिए और कुछ हिन्दू कथाओं का पूर्ण ज्ञान न होने से जायसी ने ऐसा किया मालूम पड़ता है ।

पृष्ठ ६०

लिलाट्ट = नाथा । तुम्हें पाट्ट = मन्त्र और विष्णु का चक्र मन्त्र का महात्मन ।

पिता जोगी = तुम्हारा पिता राज्य का भोग करने वाला है । 'स्वधर्म' की बात नहीं जानता । वह ब्राह्मणों को पूजता है और जोगियों को मारने का हुक्म देता है । यह उनकी उलटी रीति है । लुब्ध = लोभी । पौरि पेटा = दरवाजों पर कोतशाले का पहरा लग हुआ था तल्लिए प्रेम का लोभ । सुरग क गुप्त मार्ग न घुसा । धरा = पकड़ा । हि पूरी = इसी करण तुम ने अनाथ पंडित मर गई है ।

पृष्ठ ६३

देइ बरम्हाऊ = आशीर्वाद दे रहा है । असाई = अज्ञानी, दुष्ट, नील-विहीन । जोगी.....छाजा = हे राजा तू अग्नि के समान है और योगी (तनसेन) पानी के समान है—तू क्रोध की अग्नि में जल रहा है और योगी सहनशीलता धारण किये हुए है । हे राजा, यह क्रोध ले कि अग्नि पानी से लड़ती हुई शोभा नहीं पाती ।

बूकु न = युद्ध न कर । बूकु = शिवेक से काम ले । खप्पर = भिन्ना-मात्र । वर तोहिं = तेरे दरवाजे (वार = द्वार = दरवाजा) पर ।

अभाऊ... दुर्भाव से युक्त अधवा अनिच्छित (Undesirable) देइ सेधि = सेंध देकर दीवार फोड़ कर । चोरी = छिप कर । भोट नाँव का = हे भाट, तेरा नाम क्या है यह बतला । मारा जीवा = मैं तुझे प्राण-दण्ड दूँगा । नाइ के गाँवा = गर्दन झुका कर, विनयपूर्वक, अकड़ छोड़ कर । जों सत पूछसि = यदि सत्य पूछता है (तो सुन) । सत पै... गाँवा = यदि यज्ञ भी गिरे तो भी सत्य ही कहूँगा । जवू... देना = जब द्वीप में चित्तौड़ नाम का देश है । नरेसा = राजा । ताका = उसका । नाइ नहि मेटा = भित्तिका कोड़ धिक्कर नहीं कर सकता, निवे कोई मार नहीं सकता (ऐसे बलशाली कुल का है वह) । दाहिन ताही = दाहिने हाथ से उसे आशर्वाद देना है अथवा दे चुका है तात्पर्य यह कि मैं तो उसे आशर्वाद दे चुका हूँ उसका यह बर्ताव अथवा फरेगा । तू उसका विरोधी है फिर नल तुम दाहिने हाथ से आशर्वाद कैसे दिया जा सकता है । दोनों विरोधियों का एक साथ एक भाव से आशर्वाद देना तो निरर्थक हो जायगा ।

नावे टाँट = मेरा नाम मन्मथ है क्योंकि उसी का ही निवासी हूँ । बसीठ = दूत । जों... ला... वह बर्ताव... मैं दूत के सम्मुख सुनने से क्रोध हो आवे दूँ वगैरहना है... स्वयं यह दूत कर रहा है ।

कनक... राजा = माँ के रूप में राजा को निम्न की
 मूर्ति = मैं साक्षात् महादेव हूँ । कदा = कभी दूर यात्रा ।
 यदि = यदि भविष्य में तुम परिणाम निकलने हो तो जो कल
 दी देना चाहिये । ओदि = इस लो । आना = जाता है । ओ
 ओर उभे जिगहा पर निरंतर किया है उप (पद्मावती) के
 नदर मान लिया है अर्थात् यह प्रेम एक ही ओर से नहीं है ।
 ओर से है । हरि = करे । मोहा = तेरा, अर्थात् युक्त हो ।
 कृष्ण ६४

मुण् . . . वर = यह स्तनसेन मर कर भी तेरा दार न करे
 ऐसा दुःप्रतिज्ञ है । नृकृद् = विदेह में काम लो, अब भी समझ
 कनक... देह = इसे भीम में कनक की बटोरी प्रार्थना
 दे दो । नहिं मार = इसे मारो मत । यदि तुमने इसे मारा नहीं
 प्रमाप्त दी नहीं तो 'मार' अर्थात् कामदेव का मारा भर जायगा,
 वह मुनासिब है कि इसे न तो मारो और न कामदेव का मारा नाने
 अर्थात् इसे प्रमाप्त दे दो ।

ओहट होहु = ओट में होजा, हट जा सामने से । भिलारी =
 है सुद्रता-प्रदर्शन से अर्थात् तू भीख का अन्न खाने वाला सुद्र प्राणी
 और मुझे शिक्षा देने चला है । असि = ऐसी कड़ी । तू = तुम के
 सुद्र प्राणी । को . . . पारा = ससार में कौन ऐसा है जो मेरे दो
 हो सके—जो मेरी बराबरी का हो, जिसे कन्या दी जा सके । ज
 इताल = जिनकी ओर देख दूँ वही मेरे आतंक के मारे पाताल में पहुँच
 जाय । ऐन्या प्रतापी हूँ मैं । फिर कौन मेरी 'सरवरि' का है—यह भव ।
 प्राय = आया । आसमान = भयभीत । भा = हो गया । भीति...
 आगे = भिक्षा लेकर आगे बढ़ जायँ और भीख माँगें । ए . . . लो =
 पर यह तो सारी रात किले पर चढ़ाई करते रहे हैं—भला यह कैसे

सारी हैं। जसहीला = ऐसी करतूत करके जैसी उन्होंने इच्छा की।
 थवा जैसी मेरी इच्छा है। चाहों तिहरीन्हा = उसी के अनुकूल उन्हें
 चाहता हूँ। मत्त भी है दान-पुत्त धरदा तथा सानध्यानुकूल ही
 होता है। नाहिं लीन्हा = यही क्या कम है कि अब तक शूली से
 धर कर उनके प्राण नहीं ले लिये हैं। जेहि रोवा = जिसे इस
 प्रकार व्यर्थ ही अपने प्राण खोने की अभिलाषा है वह अन्त को ऐसे ही
 होता है जैसे दीपक पर जल कर पतंगा। सुर सेवा = देवता, ननुप्य
 मुनिगय तथा गन्धर्व आदि को यहाँ कौन गिनता है ? अर्थात् मैं क्या
 उनकी परवा करता हूँ ? वह तो निम्न ही मेरी सेवा करते रहते हैं।
 तात्पर्य यह कि कोई भी मेरी बराबरी का नहीं है।

नोनों टाट = हे झूठे भाट सुन ! मेरी बराबरी कौन कर सकता
 है अर्थात् कोई नहीं। जो कोई ऐसी हिम्मत करे यदि उस पर मैं अपना
 हाथियों का समूह छोड़ दूँ तो पिन कर धूल हो जाय।

काजा = कार्य, करतूत। जून् = युद्ध। दर = दल। जगत = सारा
 ससार। अत्तून् = अपार। कहहि धाण = अभी तक तो योगी आ
 कर अपनी बात ही कह रहे हैं—अपना प्रस्ताव मात्र कह रहे हैं पर यदि
 तुम स्वीकार न करोगे तो अभी-अभी चटाई कर देने पर उतारू है।
 ईश्वर = महादेव। जावत = यावत् जितन भी। पुर = गाँव अथवा लोक
 या सभी अथवा पुर गये हैं छा गये हैं। तुर = एकत्र = गये हैं।

जेहि साजा—हे राजा जिस महादेव पर तुम्हें गव उन
 ने तुम से वैर साधा है। जहेवा = जहाँ पर।

चेर = दास। वारि कर = लटकी आप ही की दे नेहि
 दीजिय = जिसे इच्छा हो उसे ही कन्या को द दीजिय।

जग पूत्रा = ससार द्वारा पुत्र। गुन चोदह = चोदह गुणों से युक्त।
 सिख दूजा = भला तुम्हें कौन शिक्षा दे। परेवा = पक्षी।

पृष्ठ ३२

तार्दि नरे इ= इति गुण भर पूरे कि इ इति के
 क योनी है यथा तां न राजा है। यो= यो= यो
 ही हीरामन का नाम गुण देवे तो यथा हीरामन का
 उसने इस विषय पर इस में विचार किया। पवित्र
 पवित्रता न योना नहीं हो सकता। यथा यथा दे कि पवित्र न
 नष्ट हो सकता और न पूरे हो योना दे हो सकता है। य
 हारा। जाण= यो (हीरामन के पुत्राने यो)। इस
 कदा तो सही कि तु दार शरीर पीला रंग पड़ गया तथा मुरज
 हो गया है।

चतुर..... गड्मद= तुम चतुर और शानी (वेद) की
 शास्त्र और वेद को पढ़ें हुए हो। फिर भला बताया ता त
 तुमने योगियों का लाकर नया चढ़ा दिया है और जिले को त
 गला है।

रमना रम तोला = पिहा के रम को तोला दिया—रम
 में बोला। के= का क। आदि मोलाई = आरम्भ से ही मेरे स्वामी
 तार्दि= तर्क। तेहि दोष= ऐसे प्राज्ञाकरी सेवक के कर्मों में
 निकाला जा रहा है—सेवा करते हुए भी स्वामी रोष कर रहा है।
 यह है कि मैंने तो तुम्हारी भलाई का काम किया है, पर तुमने
 रहे हो। यो भागा= मुझ निर्दोष को जो दोष लगाया गया
 उसमें डर कर यह सेवक (यथात् मैं) अपने प्राणों की रक्षा में
 से भाग गया। फिर देखेउ= वूम फिर का देखे। राजा= पहुँचा। उँ
 उच्च, उत्कृष्ट, विशाल। ऊँच पहुँचा= वहाँ का राजा बुन
 है, तेरी बराबरी का है। आनेउ= लाया हूँ। जोगी के भेसू=
 के वेश में।

सुधा..... बात = मैं सुधा सुन्दर फल (रतनसेन) को ले आया
इस कारण मेरा मुख लाल है—मैं प्रसन्न बदन अथवा सुखरू हूँ । पर
क्रम वाली बात याद करके मुझे डर लग रहा है, इस कारण शरीर पीला
रहा है—कहीं मेरी दुर्गति न की जाय इस डर से पीला पड़ रहा हूँ ।

पहले..... साखी = पहले भाट ने सखी बात कही थी, फिर तोते ने
साखी दी, उसकी पुष्टि की । राजहि..... आना = राजा को इस कारण
एवं निश्चय हो गया और क्रोध किये गये रतनसेन को मुक्त कर बुलवाया ।
रतन..... नलीना = जिस प्रकार बाँधने से रत्न मैला नहीं हो जाता
सी प्रकार बाँधे जाने से (क्रोध किये जाने से) रतनसेन मलीन और
दान नश्वर हुआ । देखि..... जोगू = वर को कञ्चन जैसे शरीर वाली
आवृत्ति के योग्य देख कर । अस्ति अस्ति = ठीक है, ठीक है । परोक्ष =
गुनाई । तितक-सँवारा = टीका कर दिया ।

पृष्ठ ६६—

पच्छिम..... नितारी = चाहे वर पश्चिम का हो और कन्या पूर्व
में, फिर भी यदि विधाता ने उनकी जोड़ी बनाई है तो वह अवश्य ही
मलेगी, अलग हो नहीं सकती—जोड़ी बिगड़ नहीं सकती । मानुष.....
पगज = मनुष्य लाख अभिन पाएँ और प्रयत्न करें पर होगा वही जो
विधाता ने रचा है— 'विधि का लिखा को मँदनहारा ' अथवा 'हुइ है
ही जो रतन रचि राखा ।'

विरोध = यहाँ जायनी ने स्वयं रूप से भाग्यवाद के पक्ष में अपना
प्रति प्रकट किया है ।

गए..... ओनाहे = जो बाजे युद्ध क्षेत्र को जीवों के मारने के हेतु
जिते गये थे वही बाजे विपरीत अवनम अर्थान् मङ्गलाचार में चरते लोट
गये । तात्पर्य अर्थान् यह कि बाजे चजे तो सही पर उनके चजने का अव-
धार एक दिन विपरीत हो गया ।

लेता दिया = दरप में प्रेम का दीपक जलाया । प्रदीप = प्रकाश । दूत = था ।

सार.....बेला । उसने मेरे पाप को सारे समुद्र में डल दिया, मुझे पार उतारने के लिए धर्म की नाव भी और मुझे देता बना दिया । बोहित = गहारा ।

पृष्ठ—४ अहा = था । उन्हगहा = उन्होंने मुझे अपने हाथ में हाथ पकड़ लिया, मुझको जो किनारा और घाट था, मिला गया ।

कन्धारा = कर्णधार, नायिक । दन्तगीर = हाथ पकड़ने वाला, मद्ध करने वाला । गाढे के साथी = विपत्ति में साथ देने वाले ।

यह अवगाह दीन्ह नेहि हाथी = मैं अगाध जल में बहा जाता था, उन्होंने अपना हाथ देकर मुझे बचा लिया ।

जहाँगीर = एक पदवी; यह पदवी उसी को दी जाती है जो नसारसर में माना जावे । नवदीप की जैसी 'सार्वभौम' की पदवी है वैसी ही यह नालूम होती है । चिस्ती = एक जातिवाचक पदवी ।

निह कलंक = निष्कलंक । मन्वदून = जिसकी खिदमत (सेवा) की जावे, सेव्य, स्वामी । बाँद = बंदा, सेवक, गुलाम ।

निरमरा = निर्मल । तेहिघरसँवारे = उस घर में दो पुरुष दीपक के समान प्रकाश देने वाले हुए । रास्त लिए ईश्वर ने इनको बनाया । ध्रुव = ध्रुवतारा, जो अपने

मेरु = स्वर्ण का पर्वत

नेवत = निमन्त्रण । सगरीं कैलासा = समस्त कैलास में ।
 वस्त्र । साजा = सुसज्जित हुआ (वस्त्रामूपण धारण किये) ।
 बाजे । मदन गाजे = मानो कामदेव की सहायता से दोनों
 लगे अथवा कामदेव की सहायता को दोनों पक्ष के दब गये
 राता = लाल अथवा रात में । गोहने = साथ । नइ = नमित
 कर । जोहारा = प्रणाम । मसियर = मशाल । चहुँ तगै
 और जो मशालें जला दी हैं वह नक्षत्र एवं तारागण के समान हैं
 पृथ्वी पर मशालें जल रही हैं और आकाश में नक्षत्र और तारे
 जल रहे हैं । सूरज ताई = सूर्य अर्थात् तेजस्वी रत्ननेत्र
 रूपवती पद्मावती की प्राप्ति-अर्थ रथ पर सवार हुआ ।

धरती मङ्गलाचार = पृथ्वी तथा आकाश में चारों ओर
 जल रही है । बरात बजती हुई महल की ओर चली आ रही है,
 मङ्गलाचार हो रहे हैं ।

सोने कर = स्वर्ण निर्मित । चित्तरसारी = चित्र शाला (
 Drawing Room से) महल । उत्तारी = ठहराई । मौन =
 सिंहासन पाट = सिंहासन रूपी पट्टा । सँवारा = सजाया ।
 लाकर । वैसारा = वैठाला । जेवनार पसारा = जेवनार का फैलाव ।
 पसरे = प्रस्तुत किये गये । पनवारा = पत्तल । कनक पन
 स्वर्ण पत्तों में निर्मित पत्तले परसी गईं । सोन करे = मणि
 स्वर्ण-धाल गरीब अमीर सभी के सामने रखे गये । सँवानी =
 फिरा अगगजा = चन्द्रनाटि का लेप किया गया, चन्दन लगाया ।
 कुँह कुँह पानी = कुँह कुँह अर्थात् केशर का जल छिड़का गया ।
 पान = पान दिये गये । बहुरा = वापिस हो गया । विवाह चा =
 की क्रियाएँ और पद्धतियाँ । गाठि छोरी = दूल्हा तथा दुल्हन
 अन्य बन्धन हुआ, वे ऐसी गाँठ में बाँध दिये गये जो इन्हें तब तक
 परलोक में कहीं भी नहीं खोली जा सकती ।

विशेष—यहाँ जायसी ने जहाँ हिन्दू-विवाह के आदर्श को प्रस्तुत है वहीं स्वयं भी इस प्रेम-बन्धन का समर्थन किया है। भला क़ और Divorce ने यह बात कही !

चौद रूप = चौद तथा सूर्य अर्थात् पद्मावत तथा रतनसेन । ही विमल हैं, उज्ज्वल हैं तथा दोनों की अनुपम जोड़ी है। सूर्य व रतनसेन, चौद अर्थात् पद्मावत के रूप को देखकर लुब्ध होकर रह और पद्मावती रतनसेन के रूप पर मोहित होकर रह गई।

विशेष.—रूपकातिशयोक्ति अलङ्कार ।

६७

दुधौ नाँव लै = दोनों के नाम ले लेकर । दारा = बालाएँ, स्त्रियाँ । हे मंगलाचारा = वे पद्मिनीयाँ मङ्गलाचार कर रही हैं । चौद के = पद्मावत के हाथ में । आनि = लाकर । सूरज गिठघाला = उस हाथ को रतनसेन के गले में ढाल दिया । नूरन पार्द = रतनसेन ने पद्मावती द्वारा पहनाये गये हार को क्या पाया, मानो उसे तारागण और ग्रहों का हार मिला हो । पुनि .. दीन्हा = फिर उन स्त्री (पद्मावती) अंजली भर कर जल लेकर रतनसेन को दे दिया मानो अपना जीवन र सन्पूर्ण जीवन ही अपने पति को अर्पण कर दिया ।

कंन * हाथा = स्वामी को पाकर अथवा स्वामी का हाथ पाकर पद्मावती ने अपना हाथ उसे दिया । नन = नन । भावरि = फेंकें । रत मोति = मोती रूपी नक्षत्र । नन फर = मान भाव मान बार गिन-प्रदक्षिणा । घुट के = घुट घुट कर टाँ करके । ननरु एक = एक ग्रन्थ में वैध कर उन्होंने मान भावरि फिर ।

राजाचार = राजरोचित आचार (चलन) । दायज = दान । हौं लगि = कहाँ तक । जत = जितना ।

पावा = पाया । सिर नावा = सिर मुकाबल प्रणाम किया । लुम * .. होई = समय कुछ भी क्यों न मोचे पर होता वही है जो

विधाता को करना होता है ।

विशेषः—ऊपर भी यह भाव प्रदर्शित किया गया है। वाक्य गंधर्वसेन के मुख से कहलवाये गये हैं। यहाँ भी जानने को भाग्यवादी प्रमाणित किया है, यथा—“मेरे मन कछु के कछु और” तथा ‘Man proposes God disposes’ गोसाईं = स्वामी, मालिक । हम..... सेवकाई = करने को सेवक-मात्र हैं। तस..... नरेश = उसी प्रकार हमारे राजा हो। जंवू..... राजू = इतनी दूर जव दीप में करोगे, यहीं सिंहलद्वीप में रह कर राज्य करो। विनवा = अस्तुति..... मोरी = विनय करने योग्य वाणी मेरे पास कहाँ करने योग्य भाषा की भी तो मेरे पास कमी है—यह भाव। ज-वड़ाई = वास्तव में तुम्हीं स्वामी हो, जो तुमने मेरे शरीर की दूर कराया और इस प्रकार मनुष्य बनाकर मुझे इतना महत्व दया जो.....जोग = जो तुमने दयापूर्वक मुझे प्रदान किया है जो जीवन तथा जन्म भर का सुख-भोग प्राप्त किया है नहीं तो मैं हूँ, पैर की धूल के समान। भला मैं जोगी किस योग्य था! मैं आप ही की कृपा का फल है।

विशेषः—इन पक्तियों से ‘रत्नसेन’ का चरित्र व्यक्त होता है। अभी कुछ समय पूर्व इतना उदण्ड बन रहा था वही इतना निहो गया है।

घौराहर = महल, अटालिका । वासू = निवास-स्थान। मानो । तराई = तारागण । होइ मडल..... पासा = चारों ओर चन्द्रमा रूप पञ्चावती को घेर कर। अकासा = ऊपर की अटालिका चल.....तहाँ = हे सूर्य, जहाँ अस्त होता है उस चला अर्थात् अस्ताचल पर्वत को चला (यहाँ महल को बहुत ऊँचा

रण पन्थावल पर्वत कहा गया है) वहाँ तुम्हें निर्मल चन्द्रमा से मिलने का अवसर प्राप्त होगा यद्यपि हे सूर्य (रतनसेन) दिन अस्त पर तू वहाँ चल जहाँ तुम्हें धिनल और सुन्दर चन्द्रमा (पद्मावत) मिल प्राप्त होंगे ।

द्वेज

पद्मावति * * * 'काँहा = पद्मावती ने जो अपने को नैवरा—जैसे
उमने श्रृंगार किया उसे ही वह इतनी सुन्दर होगई मानो विधाता
(= देव) ने उसे इर्ष्या का चन्द्रमा बनाया हो । करि * * * *
= उमने नञ्जन तथा स्नान का जैसे ही चर (वस्त्र) पहना वैसे
सका सौन्दर्य इतना बढ़ गया कि उसके मनने सूर्य भी लजित
र छिप गया । रवि पद्मावति = केश मैं मान का । नाँग * * * * चूना =
मैं निंदुर भर कर उमे मोती तथा माणिक के चूर्ण से सजाया ।

एहिनि * * * 'देखाव = वह मणि-नटित आभूषण एवं परिधान पहन
जैसे ही गवही हुई उससी उम बना के सौन्दर्य का वर्णन नहीं
जा सकता । वह उ * * * समय 'सी द'व पडती थी मानो चन्द्रमा
तारे आकाश-रूपी-दर्पण में पड़ हुए उसी के मुख तथा मणिया के
चिह्न हैं ।

पद्मिनि * * * 'बारा = पद्मिनी के चान के देव का रस द भाग
, हाथी ने लजित हा में पर चुन टल ली । उमके मुख के देवका
देमा घटने-घटने छिर ग । तब उमके दोता की चमक के देवका
गली लजित होगई । उमके नय के देवका ख न उमके मगुर बरती
चुन कर कोकिल उर अवा का देवका मोर पतल कमर का देव
सिंह (सदूरु = शादल) नाह के आका का देवका धनुष छिप
। तथा वेणी को देवका र मुक्ति पाताल में जा दिया । उमके सुन्दर
सिका को देखकर खरुग उ छिग तथा अमृत उमके अधरमृत के

सम्मुख लजित हो जा छिपा । कमलनाल उसकी कलाइयों को तथा केला उसकी जंघा को देखकर लजित हो जा छिपे ।

अछरी.....लाजि = जब वह स्त्री (पद्मावत) श्रद्धा तो अप्सराएँ उसके रूप को देखकर जा छिपी तथा जितनी भी थीं वह अपने-अपने मन में लजित हो जा छिपीं ।

विशेषः—इस सङ्कलन में कुछ अंश इस स्थल पर छोड़ दिए हैं । प्रथम-मिलन के पश्चात् जो वार्त्तालाप हुआ वह पश्चात् दिया है ।

पुरुषक = आदमी का । बोल.....वाचा = शपथ और पूर्वक कहा हुआ समझो । यहसारी = हे स्त्री (पद्मावती) तुम जैसी (रूप-लावण्य तथा सद्गुणशीला) से अथवा प्रकार इस मनको लगाया था कि यह मन दिन-रात तेरे रहता था । अथवा यह मन दिन और रात तेरे साथ सारण करता था । (नित्य तुम्हें ही जीत लेने की फिर में पौपरि = कभी पौ पड़ेगी (में जीतूंगा—यह भाव) । सोचा करता था, अभिलाषा करता था । सिरसों खेलि = मिर कर, सिरको हथेली पर रख कर । पैत जिउ लाएउं = प्राण लगा दी । हँकांची = मैं चौका पंजा से अर्थात् बार बार फेंकने के फेर से बच गया । अब मेरी गोट बीच में से न लौटेंगी तात्पर्य यह कि तुमको पालिया, मेरी गोट लाव है अथवा कच्ची गोट तुम्हारे बीच में नहीं आ सकती है—जो हो वही तुम्हें पा सकता है (आध्यात्मिक अर्थ दृष्टव्य है) पाकि जीता = आशा करते-करते आशा पूर्ण हुई, गोट पक गई, मेरा पूर्ण हुआ; फिर भी मैं हार गया और हार कर मैंने अपना जीव तुम्हें दे डाला और तुम जीत गईं । निनारी = अलग । कहा हारी = इधर-उधर की चगली

रूप में दीख पड़ती है। साधारण अर्थ के अतिरिक्त यहाँ यह है कि जिस प्रकार संतप्त अमर अन्ततः सुगन्ध प्राप्त करता है, भोग करता है, उसी प्रकार तू भी मेरे साथ विलास कर।

कौन.....मोहीं = न जाने कौनसी मोहनी शक्ति तुझ में समय थी कि जो मर्ज तुझे था वही मुझमें भी उत्पन्न कर दिया। तड़पता था। डाढ़ि डाढ़ि = जल-जल कर। जिमि कोहल = भाँति काली। पंथ.....सेवाती = मैं स्वांति बूँद की प्रतीक्षा करने सीप बन गई। भइउँ.....गई = मैं रात भर जागती रही हूँ प्रकार चकोर बन गई हूँ। तोरे... तयऊ = जिस प्रकार अग्नि में तपा कर लाल कर देती है, अपने रंग में रँग देती है, उसी प्रकार प्रेम ने मुझमें भी प्रेम उत्पन्न कर दिया। हीरा.....जोती = हीरा के प्रकाश के कारण चमकता है, नहीं तो पत्थर में प्रकाश परगासे = प्रकाशित होने से। विभासा = विकसित होता है। नाहि नहीं तो।

अंतरपट = छिपाव, दुराव। निउछावरि जीउ = अब तन, यौवन और प्रोण सभी न्योछावर कर दिये।

मोरे रंग = मेरे प्रेम में। असकै तुन्हारा = मैंने तुम्हारा (हृदय में) चर्चित किया, जान लिया।

पृष्ठ ७०—

सत = सत्य। मोही = मुझमें। सतभाव = सत्य भाव से, छिन्न-कपट के। भइ कँठ लागू = गले में लग गई। सोहागू = मोहना। थोनाट = जैसे कि कुसुम-चय पाकर मालती मुकजाती है अथवा जैसे कि चंपा की डाल पकट कर मुकाई गई हो, ऐसी वह प्रियतम के गले में पड़ जान पड़नी थी। वानू = वर्ण। बिछुरी = बिछुड़ी हुई, बहुत दिनों के बिछुड़ा। जोरी = जोड़ी, (सागस की जोड़ी प्रसिद्ध हो गई है)

साथी को (पति को) हर कर किस कसाई ने—चिह्नोमर
और मुझे विरह दिया है जिसके कारण मैं जल जल कर

शब्दार्थः—पीड-वियोग = पति के वियोग के कारण ।
वाटर = बावला । जीऊ = जीव, तात्पर्य है मन से ।

अर्थः—पति-वियोग के कारण मन ऐसा बावला हो रहा है
प्रकार पपीहा नित्य ही 'पीड-पीड' रटा करता है, उसी प्रकार
नित्य ही 'पीड-पीड' रटने में ही मस्त रहता है । अथवा
कारण मन ऐसा बावला हो गया है जैसे कि पपीहा हो, जो कि
'पीड-पीड' रटा करता है ।

शब्दार्थः—अधिक काम = कामाधिक्य, काम की अधिकता
दाधै = दग्ध करै, जलाता है; क्योंकि काम को अग्निवत् कहा गया
सो रामा = उस स्त्री को ।

अर्थः—कामाग्नि की अधिकता उस स्त्री को जलाती है,
तोता उसके पति को हर ले गया है ।

शब्दार्थः—विरहवान = पतिवियोग-जनित दुःख । तम = धुं
डोली = हिलडुल भी नहीं सकती थी । रक्त = रक्त, खून ।

छन्दार्थः—उसको विरहवाण पेने कगरे लगे हैं कि अचेत
है । उसके रधिर का पानी हो गया है, उसके पसीने के कारण
रधिर के पसीने के रूप में निकलने के कारण सारी चोली भीगी

शब्दार्थः—मूया हिया = हृदय मूय गया है । हरि हरि
धीरे, नारी = नाही ।

छन्दार्थः—उसका हृदय मूय गया है, उसमें कोई रस नहीं
नहीं गया है । वह इतनी कृशतना (कमजोर) हो गई है कि
धारण करना तक उसके लिए भारी हो रहा है । धीरे-धीरे उस
नादियाँ प्राण छोड़ती जानी हैं—वह निर्जीव और निष्प्रण
जानी है ।

ने उनको संसार के सहारे के लिए स्तम्भ स्वरूप बनाया ।

‘दि’ शब्द यदि स्तम्भ के साथ लगाया जावे, तो दो स्तम्भ होगा । दोनों एक एक स्तम्भ हो सकते हैं, और यदि जग के साथ लगाया जावे तो उसका अर्थ होगा इस लोक और परलोक दोनों के लिए, दोनों की प्राप्ति कराने वाले ।

टेके = सहारा दिये हुए हैं । दुहूँ..... रही = दोनों के भार लेने से अर्थात् भारसे चृष्टि स्थिर है, डॉवाडोल नहीं होती । जेहि . . . कया = जिसने दर्शन किया और उनके चरण पकड़े, उसका उन्होंने पाप हर लिया और उसका शरीर निराल हो गया । मुरसिद = (मुस्यद) पहुँचा हुआ, गुरु ।

मुहम्मद तीर = कवि नलिक मुहम्मद कहते हैं कि उसका मार्ग निश्चित है अर्थात् उसके निर्दिष्ट स्थान पर पहुँचने में कोई बाधा नहीं है, जिसके साथ कि पहुँचे हुए परम ज्ञानी गुरु हैं । जिसके पास धर्म की नाव और गुरु ऐसे सेवक (नाव चलाने वाले) दोनों हैं, उसको शीघ्र ही किनारा मिल जावेगा ।

मेहरी = मुहीउद्दीन । उताइल = जल्दी । खेरा = पतवार ।

नोट—यहाँ पर एक शका उपस्थित होती है कि जायसी ने आरम्भ में सैयद अशरफ को पार प्यारा कहा और कहा ‘लेना हिण प्रेन कर दिया’ और आगे चल कर कहा है कि ‘गुरु मेहरी सेवक मैं सेवा’ क्या यह दोनों ही उनके गुरु थे ? ऐसा नालून होता है कि सैयद अशरफ को तो अपनी गुरु-परम्परा का मूल पुरुष होने के कारण पार कहा और मुहीउद्दीन से उन्होंने मायान रूप में दीक्षा ली ।

अरुखा = मार्ग चलने वाले गुरु नेता । शेख दुर्रान = शेख मुहीउद्दीन के गुरु थे ।

पथ लाइ मोहि रैन गियान = धर्म में लाकर अर्थात् दीक्षा देकर मुम्हको ज्ञान दिया । यहाँ मोहि टिक नहीं बैठता है । दूनरी मतियो में ‘जेहि पाठ है, वह अधिक ठीक है क्योंकि शेख दुर्रान जायसी के गुरु नहीं

चली । दुवार = दरवाजे पर । भईखरी = खड़ी हुई । विरति = रुक ।
 बंदन = सिंदूर । कै प्रनाम = प्रणाम करके ।

नागमती-खंड

चित्तउर = चित्तौड़ का । पयहेरा = मार्ग देख रही है ।
 पुनि.....फेरा = फिर लौट कर न आये । नागर = चतुर नाग ।
 तेइहरा = उसने प्रियतम को मोहकर मुक्त से दान लिया ।
 पिउ नहिं जात . . . जाउ = चाहे प्राण निकल जाते पर प्रियतम
 जाता । सुआपीउ = मेरा काल बनकर तोता प्रियतम को ले गया ।
 प्रियतम को तो क्या ले गया मेरे प्राण ही ले गया । भयउका =
 वह तोता वाचन अंगुल के नारायण जैसा छली हो गया । छरा = कुरा ।
 (बलि और वाचन रूपधारी भगवात् की कथा प्रसिद्ध ही है) ।
 करन इंदू = अथवा वह उस इन्द्र के समान हो गया जो प्राण
 का कपट-वेप रत्नकर कार्य के पास कवच लेने को गया था और इन
 में कवच ले आया था ।

अन्तर कथा—कर्ण सूर्य के अंश से उत्पन्न थे और पैदायश के
 समय ही कवच और कुंडल धारण किये हुए पैदा हुए थे । महाभारत
 युद्ध से पूर्व इन्द्र ने सोचा कि यह दिव्य कवच और कुंडल की
 कर्ण के पास बने रहें तो अर्जुन, जो उसके अपने अंश से उत्पन्न है, उन्हें
 को न जीत पावेगा । यह सोच कर उसने ब्राह्मण वेश धारण कर कर्ण से
 इनकी याचना की जो कि कर्ण जैसे दानी ने त्वरित ही दे दिये ।

मानव भोग .. योगी = राजा गोपीचंद को, जो कि भोगविह्वल
 में विप्लव थे, जल पर योगी लेकर चलता बना । गरुड़ अलोपी = शीश
 नामी गरुड़ ।

दोहा (१) सारम.....दीन्ह = मुक्त सारम के जोड़े को, ने

जीवरूपी हस रहता था उसके पंख जल गये और वह भाग गया अर्थात् वह निर्जीव (मुर्दा) हो गई ।

शब्दार्थ—पाट नहोदड़ = पट्ट महादेवी; पटरानी । हिये न हारू = मन में मत हारो, हृदय को हाथ से मत जाने दो, पस्तहिन्मत मत हो । प्रमुक्ति जीउ = मन में समझ कर । चित चेतु सैभारू = चित्त में चेतना पैनालो अर्थात् समझ-सोच कर स्वस्थ होओ और चित्त को प्रसन्न रखो । पैरगिनेह = स्नेह (प्रेम) का स्मरण करके । मेरावा = मिलाव । सग = साथ । परै = पत्त । परीहे = परीहा को । स्वांती = स्वांति नक्षत्र में बरसी हुई बूँद । कहा जना हे कि परीहा स्वांति की बूँद पीता है, साधारण जल नहीं । जब तक वह विषेय प्रकार का जल नहीं मिल जाता तब तक प्याना रहता और उसी की आशा में ऊपर को चोंच किये रहता है । अनन्य प्रेमी और भक्त की उपमा परीहे से दी जाती है । इस विषय में गुणसीकृत दाहानली का 'चातक चांतीसी' भाग दृष्टव्य है । जस = जैसी । टेकु = धानले, रोमले सहले । बोमुन धीती = मन में स्थिरता धारण कर, मन को तुढ़ कड़ा कर । धरतिहि = पृथ्वी को । गगन सो = आकाश से । जेस = जैसा कि । पलटि प्राय = लौट कर आता है । आव = आवती है । नपेली = हे सुंदरी नवयोवन वाली । स = आनंद, नापुर्ब । नधुपर = गारा । पेली = ल-पै । नि करति = ऐसा (दुखी) मन मत कर, ऐसी दुखी मत हो । नू बारी = हे बाला । बारी का अर्थ बाटिका का भी होता है । आने तरपर (तरवर) के आने से ऐसा दीख पड़ता है कि वरी या अर्थ बाटिका का होगा पर विचार करने से यह भ्रम दूर हो जावेगा और बारी का अर्थ सन्दाधन वास्तव में बाजा होगा । उठिहि सब रि = सबल कर उठाने इस प्रकार का प्रहसा जाये । और फिर सुन्दर लगने लगेंगी । दिन दिन उस दिवस की प्रतीक्षा है जो तब के लिए । बिनु जल = बिना पानी के । सुविचिता = सुखकर होना ।

शब्दार्थ—बोई सखी तना नागवती ल-पै है 'कह पदम' २५

(हे पटरानी) हृदय को हाथ से मत जाने दो, हिम्मत मत हारो, सोच समझ कर चित्त की चञ्चलता को सँभालो, चैतन्य को हार न जाने दो, ज़रा सोच समझ कर काम करो । (२) अनर का भी मिलाप होते ही वह मालती के स्नेह को स्मरण करते ही अवश्य ही पास आवेगा; तात्पर्य यह है कि राजा किसी रानी (पद्मावती के) से प्रेम मले ही गया हो, पर जैसे ही वह उसे प्राप्त कर लेगा, उसे (नागवती के) स्नेह की जब याद आवेगी तो वह अवश्य तुम्हारे लौट कर आवेगा । नंतर.....नेरावा = इस कारण कहा गया है कि प्रसङ्ग में नागवती पहले कह चुकी है—

“नागर काहु नारि बस परा,
तेइ नोहि पिय नोसैं हरा ।”

‘जायसी नन्ददास’

और साथ ही वह तथा अन्य मन्त्रियाँ जानती थीं कि हीरानन्द पद्मावती के रूप को प्रशंसा सुनकर ही चढ़ गया है ।

(३) पपीहा को स्वाँति के जल से उतनी प्रीति होती है कि साधारण जल को कभी नहीं पीता और जब तक उसे स्वाँति-जल मिलता तब तक प्यास को सहता रहता है । उसी प्रकार तुम भी प्रियतम से प्रेम करती हुई उससे मिलने की उत्कण्ठा (प्यास) को सहो और मन में स्थिरता बरण करो, मन ज़रा कड़ा करो । (४) जानती ही हो कि पृथ्वी को आकाश से कैसा प्रेम होता है, उसी प्रकार चरितार्थ करने को वह वपांछितु में मेह के रूप में पलट कर आया है । उसी प्रकार तुम्हारा तन्मय प्रेम व वह अवश्य ही लौट कर आवेगा ।

जदि को जेदि पर मन्य सनेहू,
मो नेहि मिलै न कहु सनेहू ।”

‘तुलसीदास’

(२) वसन्त ऋतु के अभाव में बेलें नीरस हो जाती हैं, भौंरे उसके लाल भी नहीं फटकते, परन्तु हे नवयौवन वाली ! जैसे ही वसन्त ऋतु आता है वही रस सर्वत्र दीख पड़ता है, वही भौंरे होते हैं वही बेलें लाल होती हैं अर्थात् भौंरे फिर रस लेने के हेतु बेलों पर मँडराने लगते हैं । उसी प्रकार सुखवस्त्र पाने पर हे नवेली ! तुम्हारा भी भ्रमर (प्रेमी) तुम्हारे पास लौट आवेगा ।

(६) हे बाला, तू इस प्रकार उन्मत्ता न हो, यह वृद्ध (तेरा शरीर) शीघ्र ही संभल कर उठेगा, सौन्दर्य प्राप्त करेगा ।

(७) दस दिन के लिये अर्थात् थोड़े समय के लिये सरोवर का जल, भले ही सूख जावे और वह सरोवर नष्टप्राय हो जावे तथा उसको हल गड जावे, पर एक समय वह आता है जब कि सरोवर फिर भर जाता है और उसके प्रेमीजन (हंस) फिर उसके पास आकर वास करने लगते हैं । उसी प्रकार यद्यपि काल पाकर तू इस दुर्दशा को प्राप्त होगई है और तेरा प्रेमी तुझसे दूर चला गया है, पर एक समय आवेगा जब कि तू वही नागमनी होगी और वही तेरा प्रेमी होगा ।

दोहा (३) शब्दार्थ — साजन = प्रेमी । अरुन्ध भेटि = गले से मिल कर, भुजाएँ भर कर भेट कर । गहत = गहने हैं पकट लेते हैं । तपनि = जलन । मृगस्त्रि = एक नक्षत्र जो कि गमियों में पड़ता है । आर्द्रा = एक नक्षत्र जो कि वर्षा ऋतु में होता है । इन समय वर्षा तुर जोंरो की होती है । पलुहेत = पल्लविन हने ह, हरियान ।

छन्दार्थ — यदि विपुल प्रेमी निजता है तो विदोष नर्त्तक उन्ने भुजाएँ भर कर भेटती हुई पकट रखता है ऐसा आनन्द उन्ने मिलता है कि एक दफा को छोड़ना नहीं चाहता । लेकिन बात यह है कि जो मृगस्त्रि की कटी धूप को तपन को महता है (विपुल वर्द्धि में जलता है) वही आर्द्रा नक्षत्र में जोंरो की वर्षा से लाभ उठाने हुए पल्लविन होता है, संयोग-सुख अतिशय मात्रा में प्राप्त करता है ।

विशेष—आगे वारहनामा का वर्णन है, कवि ने यह कि वारहों महीने नागमती की वियोग के कारण केंपी शृङ्गार-रस के वर्णन में वारहमासा का एक स्थान-विशेष कवियों ने इसका वर्णन किया है। जायसी का वारहनामा पश्चात् लिखेंगे।

शब्दार्थ.—चढ़ा अमाढ़ = आपाड़ मास चढ़ आया होगा; आपाड़ मास ने गिरहिणी पर चढ़ई का दी। गगन = वन गाजा = बादल गरजा। साजा विरह = विरह द्वारा सजाया दुन्द = दन्द, तात्पर्य है युद्ध से। दल बाजा = दल (सेना) में बज रहा हो। धूम = धुँए के से रंग के। साम (ग्याम) = कले में धौरे = धवल, श्वेत। व ए = दौड़े। सेन = सफेद। वजा = वन। पांति = बगुलों की पक्तियों। देखाए = दीख पड़ते हैं। खड़ा खड़ा (तलवार) के रूप में बिजली। चहुँग्रोर = चारों ओर। बुंद बाणों के रूप में बूँदें। गोनई = लुकी। आइ बहूँ फूरी = चारों ओर। कंत = हे पति। उचारु = मेरी रक्षा करो। मदन = मदन। हौं = मैं। दादुर = मंदक। पीऊ = पपीहे का 'पीऊ-पीऊ' शब्द। बिद्युत्, बिजली। बट = शरीर में। जीऊ = जीव, प्राण। नवत = नव दिन। नाह = पति, स्वामी। मंदिर को दया = वास्तविक बात यह है कि दिनों वर्षारम्भ होने के कारण ग्राम्य लोग अपने घरों की दुतों को मराने, जहाँ छप्परों की आवश्यकता होती वहाँ पुराने छप्पर हटाने नये दवान हैं, इस कारण ग्रामीण स्त्रियाँ अपने पति के बाहर होने पेसा प्रयाग करती हैं। वह कहती है "हमारे घर को कौन दवेगा, हम उसकी चिन्ता करेंगे?" पर इसका अर्थ यही पर समाप्त नहीं हो इस जिस समय घर छोड़ जाने की समस्या सामने होती है, उसी समय हम उस के कारण पति की अनुपस्थिति में वह स्त्री विरह दुःखिता नहीं होती। अतः मंदिर को दया' में नायिका का विरह-दुःख मग पड़ा है।

श्री अर्थ में नागमती के मुख से राजा रत्नमेन के विषय में निकला
 या यह प्रयोग ठीक भी उतरता है, अन्यथा राजा को मन्दिर छाने में
 या प्रयोजन ? लागि भुँइ लेई = लेई (भुँइ लागि) पृथ्वी में (खेती में)
 या लगा, खेत पानी से भर गये ।

वृन्दार्थ.—(१) आपाड़ नास चड छाया है, राकश में गडल
 रख रहे हैं, वह ऐसे जान पड़ते हैं मानो विरह द्वारा सजाई हुई सेना
 , जोकि बाजे बजा कर तुमुल शब्द कर रही है । (२) भुँइ के मे
 ग के काले और लफेड़ गडल दौड़ कर चड आये हैं । प्रकाश में
 ग बक पत्तियों हैं मानो श्वेत ध्वजाये हैं । (३) खड्ग-रूपिणी विजली
 शरीर और चमक रही है और वारों के रूप में वृद्धे घनघोर बरन रही
 अर्थात् विजली खड्ग और वृद्धे वारण जन गई है । (४) वारों और
 बरन भुक्त आई है । हे पति ! इन विपत्ति में मेरा उद्धार करो मुझे
 घनदेव ने सभी ओर से घेर लिया है । (५) मेरा भोग गौर कोयल
 क शब्द हो रहे है पपीते का पीठ गन्ध मुन्हा पड़ रहा है यह
 ऐसा प्राण लेया है जैसे विजली । इन सब के मुक्त न करने में प्राण
 गही रह जाते, अथवा हे प्रियतम (६) वारों और बरन के वार
 वारों ओर शब्द करते हैं जो विपत्ति में समान कर उग्र विरह
 उन्हें सुन कर प्राण शरीर में रह न सक सका है । वारों और
 वारों ओर दुखदायी वादुर मार मार कर रहे हैं ।
 जिसके देखने ही से अधव निमज गडल मरन है मरन कर रहा शरीर
 में प्राण नहीं रह जाते । तात्पर्य यह है कि पति के हाथ में तो यदि
 विजली की कड़क का भय लगता है तो तन्निग्रह उनके प्रभु में मुख
 छिपा लेती हैं, उनके पति किन्हीं प्रकार उनके भय को दूर करने हे
 और यहाँ यह हाल है कि पति रह नहीं दिखल पारती है ना एसा
 भय लगता है कि प्राण शरीर में रह नहीं जाय (७) पुष्प नहर
 तिर पर आ गया है, घनघोर बरन प्रारम्भ होने के ह में पति-विहीन

हैं, मेरे घर को छीन दूँगा, मेरे घर की छीन म्हा दूँगा, मुझे
दुख में छीन डालेगा ? अब प्रादों की आगटे जनकर यहाँ से
लेजा लग गया :- सारी पृथ्वी जननय यों रही है, आद मेन
है कि पति-वियुक्ता हैं, मुक्त पतिवियुक्ता को बिना सते
आदर देगा ?

(दोहा ३) जिन्ह घर = जिनके घर । कंता = पति । वे =
गारी = गौरव, अतिमान । गर्व = वनएट । जिन्ह = उनको ।
बाहर है । नय = मय ।

उन्मार्थः—जिनके पति घर पर हैं वही आज दिन मुक्त हैं
गौरव और गर्व उन्हें ही शोभा देता है; (पति के पान होने से
गौरवान्वित है तथा उनमें अवश्य कोई ऐसा गुण है, जो उनके सते
उनसे वियुक्त नहीं होने देता । अतः उन्हें इस बात का गर्व है, कि
कि वह प्रेम गविता और रूप गविता दोनों ही हैं । नागन्ती
पति-प्रेम का सौभाग्य प्राप्त नहीं है, अतः प्रेम-गविता नहीं; यदि
रूप आदि कोई गुण होता तो पति बाहर जाता ही क्यों ? अतः
है उसके रूप को, वह रूप का गर्व भी नहीं रख सकती, रूप गविता
नहीं हो सकती । यथवा जिनके घर कन्ता (रतनमेन) हैं वही मुक्त हैं
सचा गौरव और गर्व उन्हें ही शोभा देता है, वही ऐसी प्रेम-गविता
रूप-गविता है (नागन्ती का मानिया डाल दृष्टव्य है) मेरा तो
बाहर है अतः सभी मुक्त भुजा वेटी हैं ।

गज्जार्थः—वग्म = वग्मता है । भरनि परी = जेतों में चारों
पानी ही पानी भरा हुआ है भगती (नचत्र) लग गया है, (२) दान
का अथ वनधार वपा का भी है । कुरानी = सुरक्षा रही हैं, सुख रहे हैं
पुनरवमु = नचत्र-विजोष । बाउरि = बावली । मरेन्वा = चतुर । रुडे =
रुधिर क । आँमु = अश्रु आँसू । परहि भुँड = पृथ्वी पर निरते
दूटी = दूट कर । जम = जम कि । वीर बहूटी = वीरबहूटी, रान है

कै = किस प्रकार । भेटों = मिलूँ । कृत तुम्ह = हे पति
मोहि = मेरे । पाँच = पत्न ।

चन्द्रार्थ.—हे पति मैं तुमसे किस प्रकार भेट करूँ । मार्ग
दुर्गम पर्वत समुद्र, वीहड और अनेक टाक के वन हैं और मेरा
है कि न तो मेरे पाँच ही हैं, अर्थात् पाँचों में इतनी शक्ति नहीं है
तुम तक पहुँच सकूँ और न पत्न ही हैं जो कि उड कर तुम्हारे पास
विशेष (१) नामहि पाँच = पैर होजाना और पत्न हो
यह दो मुहाविरें, जिनका अर्थ है विशेष शक्ति का उद्भूत होना
निकल जाने का अर्थ इससे भिन्न होता है ।

विशेष (२) जायसी में स्थान-स्थान पर रहस्यवाद का पुट
पडता है । कहीं-कहीं तो उसी का साम्राज्य ही समझना चाहिए ।
ऐसे स्थलों पर भी वह रहस्यमयी बात कहने से नहीं चूके । कृत का
ईश्वर समझिये और नागमती का अर्थ भक्त आत्मा का, तो आपको
हो जावेगा कि पर्वत, समुद्र आदि बाधाएँ जितनी है उनका व
उन अनेक विघ्नबाधाओं का जो कि आत्मा को ब्रह्म-प्राप्ति के मार्ग
आवर उपस्थित होता है अतः अर्थ होगा कि हे भगवन्, इतनी वि
बाधाओं के उपस्थित होते हुए मैं अशक्त जीव किस प्रकार आपको प्र
कर सकता हूँ । ऐसे स्थल जो बीच बीच में आ जाते हैं, वह न
आनन्ददायक होते हैं तथापि मूल कथा पर उलटा प्रभाव पडता है ।
जायसी ने तो सम्पूर्ण कथा को ही ग्रन्थोक्ति रूप से कहा है, उ
विषय तो रहस्यवाद ही है, मानव-लीला-वर्णन तो गौण है ।

शब्दार्थ — दृभर = कठिन । भरो = काटूँ, बिताऊँ । सून = सुन
निर्जन, पति-विहीन । अननै = अन्यत्र । नागिन = सपिणी । उमा =
काटती है । गहे यकपाटी = विना करवट बदले । नैन पसारि—आँखें प
कर । तरामा = त्रास देता है, डराता है । काल होइ = काल वन क
ज़ीउ गरासा = जीव को प्रस लेता है । मघ = मघवा; इन्द्र अथवा

ये । दोनों दुनों रोमन सुरन्धर = दोनों में अर्थात् उन या परमोक्त में अर्थात् दुनिया में दोनों जगह जिनकी ग्यानि है और जो दोनों लोक में लोक प्रिय है । मित्र पुरुष संगम जेहि मिला = जो मित्र पुरुष के साथ रहे । इसका यह भी अर्थ हो सकता है कि वे परमात्मा से निजि हुए (मुक्त रसीदा) हैं । 'मित्र-पुरुष' परमात्मा को भी कहते हैं ।

हजरत खाज त्रिजिर तेहि पाए = जिनको हजरत खाज त्रिजिर मिले । नए . . . राजे = सैयद खाजा त्रिजिर गुरु दानियाल से प्रसन्न हुए और उनको सैयद राजे के पास ले जाकर मिला दिया अर्थात् दानियाल को सैयद राजे का शिष्य बना दिया । ओहि = मुहंमदजीन जो उन गुरु परम्परा में हुए हैं । मैं पाई करनी = कर्त्तव्य बुद्धि वा योग्यता प्राप्त हुई । उवरी जीम . . . करनी = उनकी कृपा से मेरी जीम खुल गई मुझ में कवित्व शक्ति आ गई और मैंने पद्मावती की प्रेम-गाथा का वर्णन किया ।

विशेष — यहाँ 'सञ्चित पद्मावत' की भूमिका में दिया हुआ गुरु परम्परा का वश वृत्त देखिये । यद्यपि जायसी ने सैयद अशरफ को ही मूल पुरुष करके लिखा है, तथापि यह परम्परा निजामउद्दीन औलिया से जिनका देहान्त १३२८ ईस्वी में हुआ था चली है । यह परम्परा उस से कुछ निम्न जो मुसलमानों में प्रचलित है ।

पृष्ठ ४ हुत = से, द्वारा । वे केर = वे अच्छे गुरु हैं, मैं उनका चेला हूँ । मैं उनका सेवक होकर उनकी सदा विनती करता रहता हूँ उन्हीं की कृपा से मुझे परमात्मा का दर्शन मिल सका है ।

नवे दीहे के पश्चान् कवि अपना परिचय देता है ।

विशेष — एक नयन = एक नेत्र वाला, कहा जाता है कि 'जायसी' का एक आँख बेचक में जाती रही थी ।

विमोहा = सुख हो गया । जेहि कवि सुनी = जिसने जायसी की कविता सुनी ।

प्लावित होरही है और मैं आक और जवाम के समान सुखी रही हूँ ।

विशेषः—आक.....मूरी = आक (अर्क, अर्कावा) और गरमी में हरे-भरे रहते और वर्षा में जल जाते हैं, शायद वह दुर्गम और किसी का हरा-भरा होना नहीं देखना चाहते । गोस्वामी जी ने भी वर्षा-वर्णन में कहा हैः—

‘अर्क जवाम पात विन भयऊ’

—‘रामचरित मान’

दोहा (६) छन्दार्थः—जलाप्लावित होने के कारण सारी पृथ्वी हो रही है, जल थल सब एक हो रहा है । पृथ्वी और आकाश पड़ गये हैं, क्योंकि सर्वत्र जल ही जल दीख पड़ता है । यौवन के समुद्र थाह लेती हुई अथवा पार करती हुई स्त्री को दूबते से बचाने की प्रिययम, अब तो कुछ सहारा दो अर्थात् कृपा कर अब तो घर को आओ

शब्दार्थः—लगा कुयार = धार का महीना आरम्भ हो गया । नीर = जल । तनलटा = शरीर कुश हो गया है । पलु है = पल्लवित अर्थात् हरी-भरी होती है । कया = काया, शरीर । उत्तरा चित्त = (१) तुलसी चित्त मेरी ओर मे उतर गया है अथवा फिर गया है (२) मेरा मन उतर गया है उसमें जोश का नाम निशान भी नहीं रह गया । मन = कृपा, दया । चित्रा = एक नक्षत्र । मीन = (१) मछली (२) एक राशि अगस्त = एक सितारा जो कि वर्षान्त पर धार नाम में उदय होता है हस्ति-वन गाजा = बाटलों जैसे काले अथवा दीर्घाकार हाथियों को र जाते हुए । नुरय = घोड़े । पलानि = कमर । चढे रन राजा = राजा लोग रण के हेतु सुसज्जित होकर चल पड़े । चातक = पपीहा, इसी पक्ष में स्वाँति की बूँद-विषयक नोट दृष्ट्य है । समुद्र भरे = समुद्र के सीपों मोनियों में भर गईं अथवा समुद्र सीपों के मोतियों से भर गये हैं । शब्द पर दृष्टिपात करने से अन्तिम अर्थ ही ठीक दीव्य पड़ता है ।

प्रवरि = संभल कर । कुरली = एक परी-विशेष । सँजन = सञ्जन, एक परी-विशेष जिसकी पाँखें, सुन्दर पाँखों का उपमान मानी जाती हैं । सँजन के विषय में प्रसिद्ध है कि वर्षा-ऋतु में यह दिखलाई नहीं पड़ते हैं, सम्भवतः कहीं चले जाते हैं । भा परगास = प्रकाश हो गया, ज्योति सी फैल गई । कांस = कान, इसको मूँज या सरपत्ता भी कहते हैं, फार मास में यह फूलता है, इसका फूल हाथ टेढ़ हाथ लम्बा और सफेद होता है । जहाँ यह फूलता है वहाँ चारों ओर श्वेत ही श्वेत दीख पड़ता है । न फिरे = न लौटे ।

छन्दार्थ—(१) आश्विन मास का आरम्भ हो गया, संसार में पानी घटने लगा अर्थात् वर्षा का जल जो यत्र-तत्र भरा हुआ था वह सूखने लगा, हे पति, अब भी लौट आओ मेरा शरीर बहुत कृश हो गया है । (२) हे स्वामी, तुम्हारे दर्शन से शरीर हरा-भरा हो जाता है, मेरा चित्त बहुत उतरा हुआ है, मुझे बहुत दुःख रहता है, अतः अब फिर कृपा करो । (३) मीन अर्थात् मछली का मित्र अर्थात् जो कि मछली के अनुकूल है ऐसा चित्रा नाम का नक्षत्र आ गया है, परीहा 'पीठ-पीठ' शब्द पुकारता दीख पड़ता है । (४) अगस्त नाम के मितारे का उदय हो गया, अनेक हाथियों को सजा कर तथा घोड़ों पर जीन कम कर राजा लोग रण-हेतु नज कर निकल चले हैं । (५) वर्षा-ऋतु में न्योति की चूँद चातक के मुख में पड़ गई हैं वही न्योति नक्षत्र की वे नौ परी में पड़ने से समुद्र मोतियों में भर गया है । मल पर मज धन कर हम लौट आये हैं, वहाँ मारम आर कुरली का जीवन न दीख पड़ने है । (७) वन में कासों के फूलन में चारों ओर प्रकाश में पला नील पड़ रहा है, ऐसे समय में भी मेरे पति न लौटे का विवेक मैं हूँ समझ रही ।

दोहा [७] शब्दार्थ — निरह हस्ति अरु नय हाथ प्रय = घाव । चूर = तोड़ कर, चूर चूर करव । दण्डु = गेहूँ दाल या ठेके

ऐसा करने से वाज रखो। गाजहु = गर्जो। मोइ = वही।
शादूल, सिंह।

छन्दार्थः—विरह का हाथी शरीर को दुःख देता है चित्त को
चूर कर मुझे वायल किये डालना है। हे प्रियतम, हे वही शादूल,
कि उस हाथी के मर्दन की सामर्थ्य है, आकर उसे ऐसा अनर्थ
रोको। उससे लडो और मार-काट कर भगा दो, नहीं नहीं, उसका
को अन्त ही कर दो।

शब्दार्थः—सरद चन्द्र उजियारी = शरद-ऋतु के चन्द्रमा की
जो कि बहुत ही उज्ज्वल होती है। जग सीतलजारी = मारा
तो उस चोदनी से शीतलता लाभ कर रहा है, पर मैं विरहणी
द्वारा जलाई जा रही हूँ। संयोग शृङ्गार के उद्दीपन विभाव वियोग
उलटा ही काम करते हैं, विरह को अत्यन्त बढ़ाते हैं। परगासा = प्र-
शित हो रहा है। जनहुँ जैँ = मेरे लिये जैसे कि जल रहे हों। धरति =
पृथ्वी। सेज = शैया। करै अगिदाहु = आग में जलाती है। सपहि चन्द्र-
मव के लिये तो चन्द्रमा है अर्थात् जो शीतलता आदि गुणों के कारण
अन्य सभी को सुगन्दायी है। भणहु मोहिराहु = मेरे हेतु दुःखदायी राहु
के समान हो गया। जिम प्रकार राहु चन्द्रमा और सूर्य को ग्रस लेता है
आंग न देता है उसी प्रकार चन्द्रमा मेरे लिये ग्रसने वाले राहु के
समान हो रहा है—मुझे खाये ही जा रहा है।

राहु = नमुद्र-मथन में सुर-ग्रमुद्र दोनों ही ने भाग लिया था।
चोदर गन् प्राप्त हुए, उनमें अमृत भी था, इसी अमृत के हेतु नमुद्र-
मथन किया गया था। अमृत प्राप्ति के पश्चात् विष्णु और देवताओं ने
निश्चय किया कि अमृत की एक बूँद भी किसी असुर को नहीं मिलनी
चाहिये। वस ही यह देवताओं का नाक में दम किये रहते थे। यदि कहीं
अमरत्व की प्राप्ति हो जाते तब तो देवताओं का कहीं ठिकाना ही न रह
जाता, यही मान कर विष्णु भगवान् ने यह मत स्थिर किया कि अमुने

ही अनुपस्थिति में भगवान् विष्णु ने देवताओं को असृत यौटना आरम्भ किया साथ ही वह आज्ञा भी प्रचारित कर दी कि यदि कोई भी असुर उन्हें आकर मिल जावेगा और धोखा देकर असृत पीना चाहेगा तो उसके सर धड़ से अलग काट दिया जावेगा। जिन समय भगवान् विष्णु देवताओं को असृत पिला रहे थे, उन्ही समय देवताओं के सुरुट में राहु और केतु नाम के दो असुर भी रूप बदल कर आ मिले। असृत राहु के हाथ तक ही उतर पाया था कि चन्द्रमा और सूर्य ने उसकी चुगली खा दी। वेष्णु ने गीघ्र ही उसका सर धड़ से अलग कर दिया। असृत गले तक पहुँच चुका था, परन्तु उसका सिर अन्दर हो गया। वहीं कट्टा हुआ सिर राहु के नाम से आकाश में घूमता फिरता है और अपना राव चलने पर, सूर्य और चन्द्रमा को निगल जाता है। पर उसका सिर कट्टा होने से खोले की ओर से सूर्य और चन्द्रमा निकल कर अपनी प्राण-रक्षा करते हैं। जब ऐसा होता है तभी हम कहते हैं कि सूर्य-ग्रहण अथवा चन्द्र-ग्रहण हुआ।

जो = क्योंकि। निष्ठुर = निष्ठुर, कड़े दिल वाले निर्मोही। एहि-
 ल = इस समय। परद देवारी = दिवाली का त्यौहार। मूनक = 'मनोरा-
 म' नाम का एक गीत—जायसी प्रत्यावली। अग मोरी = पत्नी को
 मोह कर। सुराई = मूर्खता है, सुन्मी जानी है, कुतनी है। मनोरथ
 पूरा = मनोरथ पूर्ण हुआ। मवति = मरगति मोंति।

धन्यार्थ — [१] कालिक का महीना जाग्य राव के चन्द्रमा की
 रौदनी से मारा ममार गीतलन प्रण कर रहा है सोर में विरह की भावना
 ज रही है, अथवा मुझे विरह जलन डालना है। [२] बंदा राम से
 चन्द्रमा प्रकाशित हो रहा है चाने ओर धवन बँडनी दिख रही है मुझे
 भी ऐसा दीव पडता है जैसे कि पृथ्वी सोर आकाश मनी जल रह हो।
 ३) गैया तन्मन मनी को जलण डालनी है ज चन्द्रमा मने के विरह
 मोह और सुखदायी है वही मने लिए राहु का काम कर रहा है मुझे

खाए ही जाता है, अथवा मेज मेरे शरीर और मन को जलाए ही है, जो शैया सब के लिये चन्द्रमा के समान सुखद है वहाँ मेरे राहु का काम कर रही है। (४) मुझे चारों ओर अंधकार ही दीख पड़ता है, क्योंकि मेरा प्रियतम घर पर नहीं है। (५) है इस समय भी आजाओ, दीवाली (दीपावली) का त्यौहार समय में मनाया जा रहा है (इस समय तो पग्देशी भी अपने-अपने चले आते हैं) (६) शरीर को मरोड़-मरोड़ कर सग्नियाँ, मना जाती हैं, मेरी जोड़ी बिछुटी हुई है, मेरा पति घर पर नहीं है। कुढ़ा करती हूँ, जला करती हूँ। (७) जिनके पति घर पर हैं, सर्व सुख हैं—उनकी सभी मनस्कामनाएँ पूरी होगईं, मेरे लिये विपत्तियाँ हैं एऊ विरह और दूसरा सपत्नी-दुःख अथवा जिसके घर पति आज दिन है, उसकी सारी मनस्कामनाएँ पूरी होगईं, मेरे लिये दो-दो आफतें हैं—एक विरह और दूसरा सपत्नी-दुःख।

शब्दार्थ (८) गच्छार्थ —माने = मनायी है। द्वार = रात, धूल।

छन्दार्थ—सभी सग्नियाँ गाकर और खेल कर दीपावली का मना रही हैं, मैं बिना स्वामी के भला क्या गाऊँ, उनकी उपकारण मेरे तो गिर में धूल भर गयी है।

गच्छार्थ—दिवस घटा = दिन छोटा होगया। जाइ किमि गाये यद् गादी रात्रि—यहुन लखी रात्रि—किम प्रकार जावे, किम प्रकार लकी जावे। दिवस भा रात्री = दिन भी रात होगया। दिन के गत—पेसी जान पड़ने लगी। दिया = हृदय। जनावै सीउ = शीत अनुभव करता है, जाड़ा लगता है। तोपै = तभी। नाहू = पतटि न बरुग = लौट कर न आया। गा = गया। बिछोई = छोड़। यत्र अग्नि = विद्युत की आग। दगधै = जलता है। द्वारा = दग्धदग्ध = जलन का दुःख। कैरे भयमंनू = जला कर नष्ट देना है।

लेता है । सूक्त नहीं नियरे = निकट नहीं दीव पड़ता है ।
 सपेती = सीर (लिहाफ़) सहित भी । आवे जूड़ी =
 का जाड़ा लगता है जैसे कि जूड़ी-ज्वर हो आया हो ।
 चल = हिमालय, अर्थात् वरफ में । चकड़े = चक्रवाक,
 पहले दिया गया नोट । कोकिला = जल कर [कोयल]
 हो गई । पंची = पत्नी । सचान = बाज, एक पत्नी ।
 भण्ड तन जाड़ा = विरह बाज को देख कर डगके कारण
 जाड़ा हो आया है ।

ह्यंनार्थः—पीप मास में जाड़े के कारण शरीर धर
 रहा है, जाड़ा सूर्य की गरमी से दूर हो सकता है, पर
 सूर्य [पति] सिंहलद्वीप की ओर जाकर छिप गया है ।
 विरह के बढ़ने में शीत बहुत अधिक बढ़ने लगा है, मैं
 काँप कर मरी जा रही हूँ, मेरे प्राण ही हरे लेता है । [३]
 स्वामी कहाँ है, मैं उसके गले लिपट जाना चाहती
 जिससे कि शीत दूर हो सके । मार्ग अपार है,
 है और वह निकट दीव नहीं पड़ता है अथवा मुझे
 वस्तु भी तो नहीं दीव पड़ती है । [४] लिहाफ़ ओड़े हुए
 तो ऐसा जाड़ा लगता है कि जड़ी चढ़ आई हो, गैया इतनी
 लगती है जैसे वरफ में दबा रखी हो । [५] चकड़े रात को
 से बिछुट कर दिन में तो उमंग मिल गई पर मैं दिन रात विरह
 में जल कर कोयलवन [काली] हो गई हूँ । [६] रात
 अकेली हूँ, साथ में मन्वा भी नहीं है फिर कहां पत्नी [अर्थात्
 विरहिणी] किस प्रकार जीवित रहूँ । [७] विरह रूप वान
 मग्न हो शरीर में भय के कारण कपकपी हो गई है, वह एक
 वैचित्र्य वान है कि जीत जी मन्वा और मग्न पर भी पीड़ा
 डेढ़े [प्रेम की महिमादृष्ट्य है, वह मने पर यही समाप्त है]

तह रुई लेकर शरीर को ढाँपने हैं, नव भी जाड़े के कारण और भी अधिक हृदय काँपता है । (३) हे पति, सूर्य वन चमको अथवा सूर्य वन कर तपा दो, भाव माम में तुम्हारे विनष्टता ही नहीं । (४) इस प्रकार जाड़ा दूर करने में अन्यन्त (आनन्द) प्राप्त होता है । नू तो वह मौंग है [जो कि बड़ा ही है, जोकि रस-प्राप्ति के हेतु सिंहल-द्वीप तक टाँट कर गया है] यौवन फूल के समान है; अथवा मेरा यौवन फूल के समान है इन्में ही आनन्द उत्पन्न होता है और नू अन्यन्त ही रसिक मौंग है, था, इस यौवन रूपी फूल के रस को प्राप्त कर । (५) नेत्रों में प्रकार अभ्रुवर्षा हो रही है जैसे कि महावट हो रही हो, तेरे विना मैं बाणों के से घाव होते चले जाते हैं । (६) कर्मी कर्मी के समान गीतल बूँदें गिरनी हैं पवन स्त्री विरह और भी अज्ञों को बनाये टालता है । तुम्हारी अनुपस्थिति में कौन शङ्कर करे और रंगमी वस्त्र धारण करे ? गले में हार भी नहीं है, कारण यह कि हार को सहने की शक्ति ही नहीं रह गई है, वह तो कृण होकर टाँट समान हो रही है ।

टोहो (११) शब्दार्थ—धनिहिया = स्त्री का हृदय । तिनग = तिनकों का समूह । डोल = हिल-डुल कर, उडउड़ा कर । चह = बाह्य है । काल = राख, भस्म ।

शब्दार्थः—हे पति, तुम्हारी अनुपस्थिति में मुक्त शवना का हृदय काँप रहा है, और जिस प्रकार कि तिनके उड़ कर इकट्ठे हो जाते हैं, तिनकों का ढेर लग जाना है उसी प्रकार यह शरीर भी हलके [सूते] तिनकों के ढेर के समान हो गया है, उस पर भी आफन यह है कि जिस समय तिनकों के ढेर [शरीर] को जला, भस्म का उड़ा देना चाहता है ।

शब्दार्थः—बहा = चलने लगा । मौंड = गाँठ । जय पियर पत = जैसा कि पीला पत्ता होना है । देह भकमोरा = भकमोरे देना है, पका

चौद ... उजियारा = ब्रह्मा ने मुझे चन्द्रमा के समान इस ससार में प्रवर्तीर्ण किया (भेजा) । जिस प्रकार चन्द्रमा में कलंक होते हुए वह ससार को प्रकाश और प्रसन्नता देता है उसी प्रकार मुझ में एक नैन का कलंक होते हुए भी मुझने ससार को ज्ञान और प्रसन्नता मिलेगी ।

जग सूना ... माशों । कवि नलिक मुहम्मद कहते हैं कि एक नेत्र में ही उनको नव संसार दिखाई पड़ता है । जिन प्रकार शुक्राचार्य के एक नेत्र होते हुए भी उनके मन का तारा सब तारों में अधिक प्रकाश देता है, उसी प्रकार वे एकनेत्र होते हुए भी संसार को ज्ञान का प्रकाश देंगे ।

नोट—शुक्राचार्य देवदत्तजी के गुरु थे । वामनावतार में जब भगवान् ने राजा बलि से तीन पैंड धरती का दान माँगा था तब गुरु शुक्राचार्य ने राजा बलि को इस दान के देने से रोका था । जब राजा कहने से नहीं माने तब शुक्राचार्य जी, जिस भारी ने से मकर के लिए जल डाला जाने वाला था उसमें पैंड गए और पानी रुक गया । भगवान् ने पानी निकालने के लिए भारी की टोंटी में कुश डाला । उसी से शुक्राचार्य की शक्ति फूट गई । शुरु का ताग प्रातः काल के समय उदय होता है और वह बहुत चमकदार होता है ।

अबहि = ध्यान में । अन = मजरी । मजरी में छेद ही छेद होते हैं । कवि अपनी कुरूपता के सम्यन्ध में यह बतलाना चाहता है कि जिस प्रकार ध्यान में जब तक मजरी नहीं लगती है तब तक उसमें सुगंध नहीं निकलती है उसी प्रकार मनुष्य में जब तक द्विष्ट और दोष नहीं होते हैं तब उसमें गुण भी नहीं होते ।

कोन्ह... • अपारा = नसुद का जल यदि खारा है तो उसी के साथ वह अथाह और अपार भी है ।

जो सुनेर • प्रकाना = सुनेर पर्वत के पर्य त्रिशूल से काटे गए, उसी के कारण वह सोने का हुआ और अपनी उंचाई में आकाश तक पहुँच गया ।

दोहा [१२] शब्दार्थः—झार कै = भस्म करके । मरु
सम्भव है । तेहि मारग = उस मार्ग से ।

छन्दार्थः—इस शरीर को जला कर राख करके पवन से
इसे उड़ा लेजा, सम्भव है यह राख उड़ कर उस मार्ग पर
पड़े, जहाँ कि कभी प्रीतम के पैर पड़े'गे ।

शब्दार्थः—वसन्ता = वसन्त ऋतु । धमारी = स्त्रियो के गाने
नाच । मोहि लेखे = मेरे हेतु । मेरी समझ मे तो । पचम = कोकिल
स्वर या पंचम राग [वसन्त पंचमी माघ मे ही हो जाती है ।
पंचमी का अर्थ नहीं कर सकते] पंचसर = पाँच वाण, कामदेव के वा
कहे जाते हैं, वह फूलों के होते हैं । सगरी = सम्पूर्ण, सारा । पत्ते
पत्ते । मजीठ = वृक्ष विशेष । बौरे = फूलने लगे । फरै = फलने लगे
सभागो = सौभाग्यवान्, प्रसंगवश 'अभागो' शब्द कहा जाना चाहिए
पर उसका काम विपरीत-लक्ष्णों द्वारा 'सभागो' शब्द से लिया गया
अर्थात् तुम सौभाग्यवान् हो फिर ऐसा सुअवसर खोकर अपने को
क्यों ग्रमाणित करना चाहते हो ? 'अभागो' न कह कर 'सभागो' इस
कारण भी कहा गया कि कोई भी पतिव्रता स्त्री अपने पति को दुर्वचनों
द्वारा सम्बोधित नहीं कर सकती । सहभाव = हजारों तरह से, अन
प्रकार से अर्थात् अनेक प्रकार की । मधुकर = अमर, तात्पर्य है प्रेमियों ने
सँवरि = स्मरण करके । मालती = लता-विशेष जिसका फूल बहुत ही
सुगन्धपूर्ण होता है, यहाँ तात्पर्य प्रेमिकाओं से भी हो सकता है ।
चीटे = चीउटे ।

छन्दार्थः—[१] चैत मास मे वसन्त-ऋतु भी आ गई, चारों ओर
धमार गाई जा रही है, पर मेरे लिए तो ससार ऊजड़ ही है । [२]
कोकिल के स्वर अथवा पचम स्वर मे गाए जाने वाले गान को सुन कर
ऐसा प्रतीत होता है जैसे विरह अर्थात् कामदेव अपने पाँचों वाण मर

हा हैं, उनके धावों से निकल कर रक्त सभी वन को आप्लावित किये
 शक्त है। [३] उस रक्त-धार ने सभी पेड़ों के पत्ते डूबने लगे, नन्म-
 ल-इसी लिए नये पत्तों का रंग लाल होता है। रक्त में भीग कर मजीठ
 भी लाल हो गई है, और वन में देखू [टाक के फूल] भी लाल हो रहे
 हैं। [४] और से लड़े हुए आम फलने लगे, हे नौभाग्यवान् [चभाग्ये]
 पति अब भी घर को लौट आओ। हजारों प्रकार की वनस्पतियाँ फूल रही
 हैं। अनर मालती की याद कर घूमते फिर रहे हैं, अथवा प्रेम्हिकाओं की
 याद में प्रेमी इधर-उधर चक्कर लगा रहे हैं। [५] मेरे लिए सभी
 फूल झोंकें जैसे दुःखदायी हो रहे हैं अथवा सभी कुछ दुःख में परिणत
 हो गये हैं, उन फूलों पर जब दृष्टि पड़ती है तो वह ऐसे लगते हैं जैसे
 कि बिछड़े बिपट गये हों।

दोहा [१३] शब्दार्थ.—धिरिनि परेवा = गिरहवाज् कवृत्तर या
 कोटिस्ता पत्नी। नरि = [१] स्त्री [२] नाडी।

दुन्द्यार्थ.—हे पति गिरहवाज् कवृत्तर बनकर शीघ्र ही आ जाओ,
 तुम्हारे बिना मेरे तो पर टूट गये, कलम हो गई है। मेरी नाडी दूसरे
 के हाथ में है (अर्थात् लोग इस आशका में कि कहीं मेरे प्राण न टूट
 जायें मेरी नाडी हाथ में लिए बैठे रहते हैं) अथवा मैं (तुम्हारी स्त्री)
 दूसरे के हाथ में (कामदेव के हाथ में) पड़ी हूँ तुम्हारे बिना आप
 भरण भी नहीं टूट सकने अथवा मैं इस कलम में सुनि नहीं सक
 कर सकती।

जो कि अब आग जलके जला रहा है, पर अपनी अतिमिति
 एवं न सुखी जाती जा रही। अतः, उस जलाने वाला
 आग, इसी जल। अतः यदि आग पर जल डाला जाये, तो आग
 जली, किन्तु आग ही। इसका अर्थ है कि आग ही जल
 जलाती है, किन्तु आग ही। इसका अर्थ है कि आग ही जल
 जलाती है, किन्तु आग ही। इसका अर्थ है कि आग ही जल

— अर्थ — [१] आग ही जलाने वाला आग ही, जलाने वाली
 लगी, जो आग ही जलाने वाला आग ही जलाने वाली है। आग ही
 जलाने वाली है। आग ही जलाने वाली है। आग ही जलाने वाली है।
 की ओर लगी जा रही है, इस कारण कि अपनी आग ही
 बुझा सके। उसके स्थान पर फिर की जलाने वाली ओर लगी
 होकर दिया है, [२] इति । इस विरगति से भरी रज करी, मैं
 के बीच जल रही है, आकर इन्हीं बुझाये। [३] अपने इसी
 को अर्थात् मुक्त करवा दो शास्त्र करी, शक्तिता पहुँचाये,
 आग को अर्थात् आगवन कुलवारी को कुलवारी बनादो, फिर
 करदो, जिससे कि पूर्ववत् सुन्दरिणी हो जावे। [४] में जलने
 और ऐसी जलने लगी है, जैसे कि भाड जलता है। यद्यपि तिम
 बालू भाड को बराबर जलाती है फिर भी वह उसे नहीं जल
 उसी प्रकार यद्यपि दरवाजा मुझे बार-बार जलाना है फिर भी उसे
 नहीं सकती। सम्भव है देखने को बार-बार दाढ़ कर द्वार तक जाती
 है। (उड़ी बालू पर बैठना नहा छोटती। यद्यपि वह मुझे अति ही जल
 गमियों में तालाब घट गाने है उसी प्रकार हृदय का सरोवर घटता जा
 है, और सूत्रने पर जैसे कि दाढ़ तालाब में पड़ती जाती है वैसी ही
 द्वारा पड़कर हृदय फटा जाता है। (७) हे पति इन फटते हुए हृदय के
 ओक लो, अपने दृष्टि की वर्षा करके मिलाकर एक करदो। जिस प्रकार

होन सो वह वही सोगी वर कि प्रियाम पाणिम मोटेगा । [१]
 के स्नेह में जा-जल कर होया मोहते हूँ, शरीर में एक मोह
 नास नही रह गया है । [२] शरीर में रह का नाम नर भी न
 निरह के कारण नारा शरीर में जा गया हूँ और यहाँ न
 थोड़ा-थोड़ा करके । रही एक ग्राम् यहाँ कर ग्रामों के नागों में
 निकल गया है । परों पड़नी हुई और हाथ मोड़नी हुई आकर
 बिनय करती है कि हे नाथ, जगत् पूरा स्नेह को आकर छिड़
 कर दो ।

श्लोक [१०] शब्दार्थः—कीज = झोक कर । वृन्दनिर्गम
 निरुद्धा, पड़ने लगी ।

वृन्दार्थः—वह स्त्री नागमती एक वर्ष रो-रो कर अन्तर्गत न
 बहुत ही कीसती हुई बर कर रह गई । वर-वर अपने पति के वि-
 मनुष्यों में पड़ कर अब पत्नियों में पड़ने लगी ।

नोट.—नागमती—नगर का उपर्युक्त स्थल बहुत दलित है
 कारण यहाँ प्रत्येक शब्द का अर्थ विन्मृत रूप में दे दिया गया है ।
 इससे आगे उसी पूर्व-वर्ती शैली का अनुसरण किया जायगा ।

पुद्गार = मोर अथवा पड़ने वाली । चिलवाँसू = चिट्ठा
 का एक फन्दा । होइ तर वान = तीव्र तीर बनकर । जो
 है काग अगर मेरा प्रियतम आता हो तो उड़जा । (इस प्रकार उड़ने
 में यदि कौआ उड़ जाता है तो किसी प्रिय के आने का शुभ संकेत
 समझा जाता है) । हारिल = (१) धरती टुटने, (२) एक पत्नी-विहिन
 धोरी = (१) मन्द (२) एक पत्नी । पडुक = (१) पीली (२) एक पत्नी
 चितरोन्व = चित्त में क्रोध (२) एक पत्नी । वना = लवा पत्नी
 कंडलवा = गले से लगनेवाला । करे मेराव = मिलावे, मेल करावे ।
 गौरवा = (१) गौरव-युक्त (२) गौरवा पत्नी । महरि = एक पत्नी
 धि = (१) वही (२) जलाई । पेड = पेड पर । जल = जलमें । तिबल

यदि वहाँ यह चतुर्णें होती तो प्रियतम उनसे प्रभावित है
वापिस लौट आता और लोपत और पपीहा के पीजने से भी
विरहगिरा को याद हो आती और यह वापिस लौट आता,
वापिस आया नहीं । इससे प्रतीत होता है कि वहाँ न तो यह
होती है और न यह पपी ही पीजते ।

विहगम = पड़ी । दाँते मय पाणी = मय पक्षियों को
है । केहि दुःख ... आनी = होनया ऐसा दुःख है जिसके कारण
को मोती तड़ नहीं । कारन कै = कारण कहते । हो ...
पति से वियुक्त है वह कैसे सोनहनी है ? मन ... नोरे = मेरे मन,
चित्त से उसका ध्यान नहीं उतरता, अतः गिन्य रोती रहती है ।
का जल समाप्त नहीं होता है । जेहि ... सीपा = जिस त्वाति
हित नेत्र सीपी हो रहे हैं । निमरा = निरुल गया, बरबाद होइ
सो = वह । नाहू = स्वामी । तवहुँत = तबसे । निति = निश्चय
निजवात = मेरी बात । विहगम = हे पड़ी [सन्बोधन] ।

[दोहा २०] चारिउ चक्र = चारों दिशाएँ । कोई ... टेक =
सन्देश लाने अथवा ले जाने का भार कोई अपने ऊपर नहीं लेता है ।
दंड = दण्ड, पल ।

बीरा = भाई । लागै परपीरा = दूसरे की पीडा का अनुभव कर सक
होइभिऊँ = भीम बन कर [इशारा है बक-सहार की बटना की ओर] ।
दाहा = दूसरे का दुःख । अँगवै = अँग पर महे । चाहा = खर । किल
= किकरी, चेरी । नआइ समेटा = याकर एकत्र न किया । ब्रैसिंगी पूरी =
उसने नरसिंगा बनाया । ओहिकेरी = उसकी । पाँवरि = पनहीं, जूता ।
सँवरत = स्मरण काने-करते । भइ माला = यह माला के समान बनई,
अस्थिर और बेचैन । अबहुँ न बहुरा = अबभी न लौटा । उड़िया
माला = मेरे शरीर की चाल तक उड़ गई अथवा वह छाल ओढ कर गया ।

सह ... जीया = बिह मेरा गुरु है और हृदय रूपी खप्पर मेरे पास है
 और मेरा प्राण पवन के आधार पर टिका हुआ है ।

[दोहा २१] किंगरी = सारंगी, चिकारा । ताति = सारंगी पर
 झाँई जाने वाली चर्म-रज्जु । धुनि = शब्द । रोवें = रोम ।

कहेहु = तुम कहना । करि संगम = सयोग प्राप्त कर । तू ...
 शता । हे मेरे प्रिय को हरने वाली, तू मेरे घरको घालने वाली नष्ट करने
 वाली हुई अथवा तू उसके घर की गृहिणी बन गई । चरता = प्रत, उप-
 रान । राख कनक = स्वर्ण निर्मित महल । तो कहें = तुम्हारे । लक =
 बड़ती हुई लका के लनान । दुन्द = दन्द । पूरा = भर दिया । आपुहि ...
 जीऊ = यह जान रख कि तूने दूसरे के जीव को अपने कंज में कर
 लिया है । नया = दया । करजिउ फेता = जीव को लौटा दे । कन्त देइ
 मेा = स्वामी से निलाकर । धारी = हे वाला अथवा हे नादान स्त्री ।
 रोह ... हारी = दम लाने नजर भर कर देखने वाली हूँ—यह
 प्रेमिलापा है कि उमे देखती भर रहूँ, मुझे भोग-विलास की लालसा नहीं ।

[दोहा २२] सवति = हे सपत्नी । नहोसि = मत हो । जेहि हाथ =
 जिसके हाथ में है, वश मे है । तोर ... नाथ = तेरे चरणों पर अपना
 निर रखती हूँ ।

कैं = की । नाइ = नाता । सुरमती = सरस्वती । गोरीचंद जल
 मैनावती = जैसे गोपीचन्द की माता मैनावती थी । साधरि = अधी ।
 वृद्धि = वृद्धा । जीवन ... गोप = मेरा जीवन-स्वरूप रखनेवाला अथवा
 जीवन का स्व स्वरूप रखनेवाला जान करने वाला । जीया
 काटी = उमने तो प्राण ही निकाल लिया । देख ... स्नान । पद को
 बुझाये की लकड़ी कहा जाता है । न ... वश है ... न के प्राण मे
 दीयता है और न पुत्र की शत्रुता से के पाला घर मे ईश्वर की उपास
 है । अधिचार = अधेरा । सरयन = धनसुखाना घर पर रहने वाला
 है । इनके माता-पिता अधेरे थे । यह उनका स्व स्वभाव था ।

नोट—पुराणों में कहा है कि पहले पर्वत चिडियों की भाँति उड़ते-फिरते थे और जहाँ बैठ जाते थे वहाँ की खेती बगीची चौपट काट देते थे। इन्द्र ने पहाड़ों के पर काट डाले। तभी से यह प्रचलित हुए। मनुष्य पहले सुनेर पर्वत के पर काटे गए थे। पर काट जाने के बदले में उनमें श्रंग सोने का हो गया था। मलिक मुहम्मद जायसी ने यत्र के स्थान पर त्रिशूल लिख दिया। जायसी ने और भी कई स्थानों में शिव और इन्द्र का विनूति को एक कर दिया है। कैलास पर अप्सराओं का वास कराया है।

जो लहि घरी.....कग = जब तक कच्चा मोना घरिया की कालिन में नहीं पड़ता है तब तक उनमें शुद्ध सोने का जैसा तेज नहीं आता है मनुष्य में जब तक कोई दोष नहीं आता तब तक उसके गुण प्रस्फुटित नहीं होते।

एक नयन.....चाउ = मेरी एक आँख वर्ण के समान निर्मल है उसमें संसार का शुद्ध प्रतिबिम्ब जैसा का तैसा दिखलाई पड़ता है। चाहे कुरूप सही, किन्तु सब रूपवान् लोग मेरे पैर पकड़ कर मेरे मुख की ओर देखते हैं। अर्थात् मुझसे ज्ञान और आशीर्वाद चाहते हैं। 'मुह जोवहि' का शाब्दिक अर्थ तो मुख देखना है किन्तु आलङ्कारिक अर्थ है मुख पेची होना अर्थात् कुदृष्टि चाहना। कवि ने इस वाक्यांश का बहुत अच्छा प्रयोग किया है। जैसे लोग काने का मुँह नहीं देखना चाहते किन्तु जायसी के गुण के कारण सब लोग उसका मुँह ताकते हैं।

नोट—कवि ने अपना भौतिक दोष दिखाया नहीं है बल्कि उसमें बेचड़क हो उसका वर्णन किया है और दोष को ही गुण माना है और इस बात को उदाहरणों से प्रमाणित किया है कि बिना दोषों के गुण नहीं रहते। कहा जाता है कि कोई राजा उनके कुरूप को देखकर हँसता था। उन्होंने कहा कि 'मोहि का हँससि कि कोहरहि' अर्थात् मुझे देख कर क्यों हँसते हो कुन्हार (मेरे बनाने वाले) पर हँसो (यदि हँसना तो)

यहाँ तक कि काँवरि बनाकर उसमें उन्हें रखकर तीर्थ कराने । एक बार जब रात्रि का अंधकार हो चुका था यह नदी में जल गये । कल-कलगावट सुनकर राजा दण्डरथ ने—नो आक्के हाथी समझकर इन पर तीर छोड़ दिया, जिससे इनकी मृत्यु ज्ञात होने पर वृद्ध तथा अंधे माता-पिता ने दण्डरथ को यह शाप कि जिस दुःख से पीड़ित हो हम मर रहे हैं उसी में मृत हो मरना पड़े । हुआ भी ऐसा ही । मरने से पूर्व यह कथा कौशल्या में कही थी तथा वाल्मीकि रामायण में वर्णित है । का तात्पर्य स्वप्न से है, जो कि अपनी माता का डीक उसी प्रकार था जैसे श्रमणकुमार अपने माता-पिता का । डाँऊ = स्थान । टेक पाऊँ = जोकि इस शरीर का आधार हो और दृढत्व-पूर्वक मेव कर सगरो सिंघला = समस्त सिंघल-द्वीप में । दाधे = जला दिये । नियर = निकट जा पहुँचा ।

(दोहा २३) समुद्रतीर = समुद्र के किनारे । तेड रुन = वृद्ध पर । जौलगि = जवतक ।

अहेरा = आक्केट, शिकार । कीन्ह फेरा = उसी वृद्ध के जा पहुँचा । विरिद्र = वृद्ध । तीग = किनारे । उतग = ऊँचा । गँभोरा = गहरी छाया । तुरग = घोडा । लाग ... भाग्या = पत्नी । भापा सुनने लगा । अहा = था । पछहि सामा = सभी पत्नी उसका नाम पछने दे तथा कहने दे कि हे मित्र, यह बतलाओ कि जाले (सामा = ग्राम) क्यों हो गये ।

(दोहा २४) अहि नाँव = उसका नाम । दाढे = जल । नियरा = निम्नला । सुन = शून्य, राजा-विहीन, शोभाहीन । राजा = भुँध (वृद्ध) उट गयी है अथवा अन्धकार छाया हुआ है । कोठल बानी = कोयल के रँग की अर्थात् काली होगई है । अयनगि अयनक । भट्टे होइहि छाग = राख होगई होगी । भारा = अग्नि, ल

पर व राजा का गया पनि और परमेश्वर की इच्छा किया गया और दोनों उशाओं का नरान गितान्त ही मरीव है।

(दो० ३१) पना कादि = फलित ज्योतिष की पुस्तक । गवन दिन = प्रस्थान का दिन । रान . . . चाल = कि प्रस्थान लिया जाये । मोंर = म.मने ।

चालू = चलना, प्रस्थान । परी . . . कालू = काल प्रस्थ समय घटी नहीं देवता (वेम ही जमाना भी समय कुपमव तभी तो जम और जमाटे एक रह गये है) । कोउन टेक = रोकता । गुरेरा = सात्तान, देवा देवी । जय . . . दौड = स्पष्ट है यों यह भी व्यक्तित है कि करने पर लोग स्मरण कर लौट जाते हैं तो बट को साथ में अपने ही कर्म अर्थात् गवन मय राजा = गाने का सामान, दायज । उहै . . . राजा = कि वही राजा दे सकना था । कादि . . . जोती = भाएदार में कर रथों में भरवा दिये ।

(दो० ३२) लंगनी = कलम । लागि जो लेने = निम्न हिंसाव लगाने लगे । अरबुड = ग्रन्थों । करोरि = करोड़ । (यहाँ का क्रम ठीक नहीं बना) ।

योहिन = जहाज । दिष्ट = दृष्टि । न थानी = न लाकर । ते = वाउ = वाण । आधी उत्तराही = आधी उमड़ आते । उलथाना = उलटलित और विस्तृत हो गया । भूलापथ = मर्यादा छोड़ बैठा । नियराना = आकाश निकट था गया, सरग दिवाई दे गया । कँची वे लहरें । ताके = की और । भए कुपथ = मार्ग विगत लक दिसि हाँके = लका की और चल दिये । नया नहि सेवा = की रोक नहीं मानते । भए पारा = राजा-रानी एक-एक तटने गये और एक दूसरे से द्रिष्टुड गये । बाटा = मार्ग ।

(श्लोका ३३) कया.....खरगंड = शरीर और जीव को जो जीवि-
 शक्त्या ने मिले हुए थे उन्हें नार कर दो पायों ने बाँट दिया—दोनों
 एक दूसरे से विमुक्त हो गये । जानहुं.....लाई = मानो चित्र लिखित
 रुनि पकड़ कर लाई गई हो । तम = इस प्रकार । पाटापरी = तरते पर
 नाँ हुई । सुकुं वारा = सुकुमारी के । तेह सो परी = वही पड़ गई ।
 बड़िनाँ = लक्ष्मी । कै = की । लक्ष्मी जी समुद्र की पुत्री थीं । वे समुद्र-
 मयन के समन निकली थीं और नारायण ने उन्हें ग्रहण किया था ।
 केहि... भैंदी = वही लक्ष्मी हो जाय अथवा उनी के यहाँ ऐश्वर्य हो
 जाय जिससे कि वह भैंट ले । छही = थी । सैंती = साथ । जाद लोग =
 जा लगा, जाकर रुक गया । कहेति = कहती है । मूरति.....घाटा =
 एक मूर्ति वह कर घाट पर आ लगी है । तीवड़ है नाँला = स्त्री के नाँल
 है, अभी जीवित है । दाना = सुगंध ।

(श्लोका ३४) रंग . . . छूटि = जो प्रेम के रंग में रंग गया है उसे
 और बहूँ समझो, उसका रंग छुटाये नहीं छूट सकता । इसे देखो यह
 रंग के स्नेह समुद्र में हो कर वही छाई है फिर भी इस का रंग
 नहीं छूट है ।

लखन दनीरों = रत्नों लहरों ने पुन । दोनिमरी =
 लक्ष्मी ने कहा कि हमारी सुभूषा करो मरने न पाये । पावर
 मरीन = महीन कणज लैना इसका नाजुर रहने है । पवननीला =
 पीने वाले के गया, उठया पावर पानी में आ गिरा है । लारि = लार ।
 उदधि = समुद्र । भीजा = भी । गया । नहिं दीया = पन हुला ।
 कोरे = कोइसी । चहुँपारे = चारों तरफ से । म नि = मोहनी ।
 पावि = पन अथवा हाथ । चरिरे = पंड = प्रियजन का दूख का ।
 एवमिनि कोह = पविना पन न दी तः पवन नहिं लेन ए
 लेने कमल पार कुसुम है । एह = इससे । निरिद मोहनी

—मुझे खी समझ कर अपनी सार बात मुझमें कह दे। मैं जो सारी कथा समझ सकूँगी—यह भाव ।

(दो० ३५) आगर = बड़ा-बड़ा । लागि .. मोर = मोर, बहुत प्रभाव पड़ रहा है । केहि .. नागरी = हे चतुरा वृक्ष की रहने वाली है । काह = क्या । धनि = हे स्त्री । तोर = तेरा ।

नैन पमारि = नजर फैला कर । देख = देखा । धन चर्ता = ने चेतन होकर । आपन = अपना । तहाँ = उस स्थान पर । तुह हों कहाँ = तुम कौन हो और मैं कहाँ आगई हूँ । जो जिसको विधाता ने सुमेरु के समान गौरव सम्पन्न बनाया है । उन्होंने कहा । ऐस .. अही = न जाने ऐसी अवस्था तुम्हारी थी । सँवरि बिछोह = वियोग का स्मरण कर । मुरझि = मूर्च्छित कउरि = बावली ।

(दो० ३६) जो कि बनी बिगड़ी सभी का सार्थ है और सदा साथ निवाह सकता है उस प्रियतम की प्राप्ति अर्थ यदि जलाना पड़े तो भी हे जीव उसे भेंटकर चाहे जल भले ही जाय ।

सती होइ कँ = मर्ती होने को । उवारा = खोला । प्र मारा = ऐसा जान पड़ा मानो बिजली ने बादल में घाव कर दिया (केँ के बीच में उसकी मोंग की गोभा पर यहाँ उल्लेख की गई लाई = लगाई गई । के = की । छट गेटे = वह मोंग निम्न पड़ेगे छुप ये छुट गटे और मोती छट पड़े तो ऐसा जान पड़े मानो जल कर चारोंपार गोंगही हो (छटने छुप मोतियों को सब आँसू रूपा गया है) । बिछाह = वियोग । मर = मरा की मर्दी । महर केँ = भर-भर जल करने छुप । बग = गला । कतक = सब अगिनि मोंग = अग्नि मोंगती है । पाहुन कोट्टे = वे सब अनिविध समझकर पानी देना और उसकी हवा करती है । राख म्यामी । केहि बर = किस बल पर । मरी = मरने ।

है। रहा पूजी = मुझ से भी श्रव रहा नहीं जाता, होता है कि आयु समाप्त हुई जा रही है।

(दो० ३६) दुग्ध माँ कै = प्रीतम से मिलकर दुग्ध पडता है। सुग कोट = कोटें सुग से न मोया, किसी के प्राप्त न हुआ। एही होट = बस इमी स्थल अथवा विषय मन भयभीत होता है कि कहीं मिलकर वियोग न हो जाय।

गौड महलावा = गर्दन पर रक्खी। पाप शत्र घटा = मेरे लिए भारी पाप घटना चाहता हूँ। वाग्हन परगट = समुद्र देश में आ उपस्थित हुआ। दुचादम = टाढ़, बारह। कनक सोने की छड़ी। सुशान्धवन = कान में कुण्डल धारण करने कोवे = कंधे पर। तर = नीचे। पाँवरि = खड़ाऊँ। कनक स्वर्ण की तथा जटाऊ। पाऊँ = पाँव में। आइ तेहि ठाऊँ = इस पर आकर। अपवाता = आत्मवात। कहसि वाता = हे कुमार मुझसे सच्ची बात कह दो, ठीक ठीक कारण बता दो। ईश्याविश।

मरहसि = मर रहा है। कौनिऊ = किसी भी प्रकार लाजा = लज्जा। बेहिकाज = क्यों।

(दो० ४०) जिनि लावसि = गर्दन पर कटार मत मत मन आप = अपने मन में।

को भोंडे = हे ब्राह्मण, तुम्हें उत्तर कौन दे ? बोलेगा तो मैं न जिसके शरीर में जीव होगा। मैं तो सुदा हूँ, भला तुम्हारी बात क्या जवाब दूँ—यह भव। केर = का। कात न छाता = करते शोना देता था, मुझ जैसे के योग्य कार्य न था। तान्दर वरी = राखू कन्या। निरमर = निर्मल, उज्ज्वल। बोहिन = जहान। तग = मरिचो ओती = उत्तनी। बहल = बैल। कुँवरि = राजकुमारियाँ, सुदामा

विशेष—दशवें दोहे के बाद कवि ने चार मित्रों का वर्णन किया है।

नीत = मित्र । जोरि... पहुँचाए = उनसे मित्रता जोड़ कर अपने को उनकी बराबरी का बर लिया । भेद बात = मर्म की बात, आध्यात्मिक रहस्य । नति नाहों = बुद्धिमान ।

खोड़े दान ... बाहाँ = उसकी दोनों बाहों तलवार चलाने और दान देने के दोनों कम्मों ने लगी रहती हैं ।

बरियारु = बलवान, जबरदस्त । बीर ... बुझारु = रणवीर ने बीर और तलवार से लड़ने लें ।

सेव बड़े . माना = सेव बड़े पहुँचे हुए गिने जाते थे । उनकी आदेश (अर्थात् हुक्म) पावन कर निद्र लोग भी अपने को बड़े अर्थात् गौरवान्वित मनभने थे ।

चतुरदत्ता = चौदह । दान = दान । चौदह विधाएँ दान प्रकार हैं — चार वेद, चार वेदान्त (शिखा, कल्प, ज्योतिष, व्याकरण, निरुक्ति और छन्द) पुस्तक, मानासा, न्याय धर्मशास्त्र । आसयोग ... रटे = और दूसर ने तपोना बना लें नको बनाया । यहने का इतिहास यह है कि बुद्ध ऐसा तपोना नहीं बना नहीं तो ब्रह्म ने ऐसा तपोना नहीं बना कि चार वेदें बुद्धिमान आत्मा पर ही गिर पड़ सकें वेद हो ।

भँवर होइ = भ्रमर की भाँति । यह बाप = पद्मावती जैसी
 निरखत आइ = आकर देखते ही । दीठी = दिखाई दी
 पीठी = मुख फेर कर खड़ा होगया । जौ भित्तारी = यदि
 भली स्त्री होती तो उसे छोड़कर महादेवजी भित्तारी क्यों हो
 जायसी ने भूल की है और लक्ष्मी और महादेव का जोड़ा मान
 धनि = पद्मावती के रूप में लक्ष्मी । आगे होइ = आगे
 निछोई = स्नेह-रहित (होकर) ।

(दो० ४३) अब... ..जोउ = रोती रोती प्राण खो रही
 सोइ = वही । भोजू = भोगी । खोजू = पता । मालति

पद्मावती से । फूल.....सोई = फूल तो वही है पर वैसी
 है; जान पडती है कि तू पद्मावती है, पर वास्तव में है,
 ओहि.....देऊँ = उसकी सुगंध पर प्राण निछोवर करता
 ओहि.....जाऊँ = जहाँ वह मेरी मालती है वहाँ जाना चाहे
 ले चलो । पानि.....पियासा = प्यासे मरते को पानी पिलाया,
 प्यासे को प्रेमी से मिलाया । कँवल = कमल, पद्मावती । दरसा =
 सूर = सूर्य रत्नसेन । सूरुज . परसा = सूर्य ने कमल का
 से स्पर्श किया, देखा ।

(दो० ४४) नैनन्ह .. मेट = नेत्रों से उसके पैरों की

दी अथवा नेत्र जल से पैर पखार दिये । सुदामा चरित में दे
 “पानी परात कौ हाथ छुयौ नहि,
 नैननि के जल सौ पग धोये ।”

प्रसाद = कृपा । पाइउँ = पागई । जौ ... दोऊ = यदि हम दोनों
 अपना सब कुछ गँवा कर जावें । जत = जितने । आथी = सम्पत्ति
 भरन = भोगना । ‘जो... .. पाऊँ = इनका जो कुछ डूब गया है वह
 दीजिए । जरी अमृत = जड़ी बूटी अथवा सजीवनी शक्ति वाला अमृत
 छेरिकि = छिटक कर । कै = करके । आनी = लाकर ।

जादूगर्नी लोना चमारी, जिसकी जान तात्रिक लोग पच भी बहुत मानते हैं। दोवरू = कामरूप देश। एक दिन * * * लायै = (१) जब चाहे चन्द्रग्रहण करादे (२) चन्द्रन्मा रूप राजा पर किनी राहु रूप वैरी का आक्रमण करादे। यहाँ पद्मावती के कारण बादशाह की चढ़ाई का संकेत भी मिलता है।

राजगार = राज-द्वार, राजा के दरवाजे पर, राजा की संरक्षकता में टोना = जादू, जत्र मंत्र। गोज = तलाश।

पृष्ठ ६६

बानि = बरौ। पीतर अस्त = पीतल जैसा, अनत्य। रिमान = क्रुद्ध हुआ। निनारहु देखू = देत से निकाल दो। रौंचा = प्रसन्न। ग्यान * * * विचारा = ज्ञान की दृष्टि से पद्मावती ने भविष्य का विचार किया। वेगि = रीति। हेकारा = दुलाया। लेहु उतारा = दानलो। बान्हन * * * दोलाया = यहाँ तत्कालीन ब्राह्मणों की मनोवृत्ति का परिचय दिया गया है।

धौराहर = महल। ऐस * * * अकारन = उन्होंने अर्थात् राघवचैतन तथा पद्मावती ने मन में यह न जाना कि बिज्ली आकाश में गहरी है। न जाने कब सिर पर आ गिरे—यह भाव। उन्होंने यह न जाना कि इसका क्या दुष्परिणाम हो सकता है। निरकलक = निष्कलक। ततवन = तत्पश्चात्। भयउ दीसा = पद्मावती के मुखचन्द्र को देख कर वह चकोर होकर उसकी ओर पकड़ देवता रह गया। पहिरे * * * मारा = चन्द्रमा नक्षत्रों की माला धारण किये हुए है, पद्मावती हार पहने ऐसी जान पड़ती थी। कोरी = बीस अथवा करोड़। पवारा = फेरा। लेइ = साथ लेकर। उठा चो धि = धोखे चो धिया गई।

राघव बिजुरी मारा = राघव का यह हाल था जेने कि उसे बिज्ली मार गई हो। धिनेनर = ये सुध। सैनार = होश।

दोखा = दोष पाप, कलंक। देखै धई = देखना सो दौड़ों। चेतु =

मुहम्मद कित्त = कवि मुहम्मद कहते हैं कि वह चारों मित्रों से मिल कर एक मन के हो गये । जब इस ससार में ऐसा प्रेम निभ गया और वे एक साथ एक चित्त होकर रह सके तो फिर दूसरे लोक में भी उनका विशोह किसी प्रकार नहीं हो सकता अर्थात् वे एक ही साथ रहेंगे ।

ग्यारहवें दोहे के पश्चात् कवि अपने जन्म-स्थान तथा अपनी रचना के बारे में कहता है ।

वर्म-स्थान = पुण्य-स्थान, तीर्थ-स्थान । कवि कीन्ह बलान् = कवि ने अपनी कथा कही ।

औ . . . मजा = और पड़ित लोगों से विनती की कि जो इस दुहा हो अर्थात् खराब हो उसको मन्हाल दीजिए और इसमें कुसनाकर अच्छी-बुरी बातें मिला दीजिए । कवि अपने कवित्व के अभिमान नहीं करता ।

पृष्ठ ६—हो . . . उगा = मैं स्वयं पड़ित नहीं हूँ, मैं तो पड़ितों का अनुगामी अर्थात् पीछे चलने वाला हूँ । तबले पर लकड़ी की चाट मारकर कुद्द रह चला हूँ । इसका यह अभिप्राय है कि जो कुद्द मैंने कहा है वह ऐसा ही है जैसा कि तबले पर कोई दूसरा चोट मार दे और उसमें राख निकले । गुरुओं और पड़ितों का उपदेश लकड़ी की तरह है ।

हिय भँडार कूँजी = हृदय के भण्डार में चा विद्वान्त-रूपी प्रमूख्य रत्न की पूँजी है उसको जीभ और तालू की कूँजी से खोला । तब कोई हृदय की बात कहता है तब जीभ और तालू का संयोग होता है । इस लिये जीभ और तालू को कुँजी बताया गया है । 'तालू' का ताजा भी हो सकता है । उस अर्थ में जीभ और तालू की कुँजी होगी ।

... अमोजा = जो मैंने बोले बोले हैं (अर्थात् जो कुद्द

बना रहे अथवा जब तक सूर्य में प्रकाश है तब तक युग-युग आपका राज्य बना रहे । सूर = सूर्य । न पूजा = बगवती नहीं कर सकते । केहि सरिदेउं = किसने उमड़ी उपमा दूँ । मनि = मणि । अक्षर = अप्सरा । परगसा = प्रकाशित हुई । काँच चढावा = काच पाने योग्य भित्तारी ने जिनमे सोना पा लिया उसीकी इतनी बड़ाई कर डालते हैं कि सुमेरु पर चढा देते हैं । नाँव भित्तारि बाँधी = भित्तारी के नाम पर अर्थात् तुम्हे भित्तारी समझ तेरी जीभ मुँह में रहने दी गई है, नाँव नहीं ली गई है । जगत उपराहीं = मसार ने ऊपर । सरि = बराबर । जो . . . विलसी = जो उनकी एक दासी को भी न देखले तो उसके लावण्य को देखकर तुम्ही नमक होकर गल जाय ।

चढावै = चक्रवर्ती । जौ . . . कैलास = पद्मिनी अगर कहीं है तो मेरे यहाँ ही है और अप्सराएँ कैलास में हैं—भला चित्तौड़ में कहाँ से आई अप्सरा और पद्मिनी ?

अनु = हाँ, ठीक है । कहवावा = प्रसिद्ध हुआ । काय व नी = चोम्बे सोने के जैसा उसका शरीर है । वासा = सुगंध ।

पृष्ठ १००

ओहि मभागा = उसे जिस सौभाग्यवान् वृद्ध ने स्पर्श कर लिया वही चन्दन होगया । चिनेर = चित्रकार । सवै . . . पारे = उसी आशय पर विहारी का यह दोहा दृष्टव्य है —

‘ लिखिन बैडि जाकी सविहि, गहि-गहि गरव गरुष ।

भए न केते जगत के, चतुर चितेरे कूर ॥ ”

मूरुन नरीर = सूर्य की किरणों की अपेक्षा उमका शरीर अधिक निर्मल है । साँह = सामने । नैनन्ह आवै नीर = चकाचाँध के कारण आँखों में पानी आजाता है ।

फूल . . . बेकरारा = फूल के छूने से बेचैन हो जाती है । विहारी ने भी कहा है:—

भूपति, गता । मोग... नरी = फिर भी तो सोड़े किसी की स्त्री का नहीं मर्गिता । जो रान = यदि वह चन्द्रवर्नी हो तो अपने राज्य के लिए है अथवा राज्य उसके लिए ? । मद्रिग भाजु = पर अपने वरको बचाने का सामान मेरा पन्ना भी ? । गता = लाल । कैई = के प्रति । ऐस न बोलू = ऐसे बचन मन करो । होड जुड = गाली होकर । टोलू = हलचल । जरि = चलकर जुड़ होकर । बारा = देर । मूहि = सूर्यरूपी शूबाह का । चदन = आक्रमण करना । तपे = तेज विस्तार करता है ।

तासां = ऐसे बलशाली से । उडहु चिन उगावाम = ताम्र चित्तांड में बैठे राज्य करते रहो । यहाँ यह व्यन्य है कि यदि उसकी इच्छा की पूर्ति न की तो चित्तांड छोड़ना पड़ेगा । उपर = इससे भी अधिक । चंदेरी = एक राज्य ।

वगनि = गृहिणी स्त्री । जिउ न लड = चाहे प्रारण ही क्यों न लेले । हो रनयँभउ स्नाह हम्मोरु = राथकोर के स्वामी हम्मोर जमा ठेक मन्दने वाला मुझे मनमो । कलपि = संकल्प के । साथ = समनक मिर । मरुबंधा = साका चलाने वाला । राहु = राहु नश्वरी मरुंधी = मरुंधी, द्रोपदी ।

पृष्ठ १०२

हनुवँत सरिम = हनुमान के समान हूँ । भार = बोझ मधव = राम । समुद = समुद्र । जीताका = विचार किया । भणहु नाहि आडा = न मिट सका । जियत • ओहा = निह के जीवित रहन उसकी मर्छ को कौन पकड़ सकता है, वीर के जीवित रहते उसका अपमान न कर सकता है ।

दरब • • जाउ = यदि वह सम्पत्ति चाहे तो देना मुझे स्वीकार है, मैं पैर पकड़ कर उसकी सेवा करने को तैयार हूँ, पर यदि वह पद्मिनी को लेना चाहता है तो कदापि न दूंगा । वह सिंहलद्वीप को वापिस

जोजन = योजन, चार कोस । पयान = प्रयाण, मकर । अगिलाई =
मिलान = जहाँ से आगे के लोग चलते थे वहाँ पीछे वाले आकर रहते थे ।

हाथ हिय बाँपे = हाथ से हृदय आत्म लिये । दूँगाई पानी =
चिट्टियाँ भेजनी । मँड़ = बाँध । काँधा = ऊपर उठा लिया है । पुरख
साथ = साथ दो । नाहिँ .. चढ़ाई = नहीं तो मुझे मरने से डर है
सकता है अर्थात् फिर चाहे कुछ भी क्यों न हो मैं अकेले ही दया नहीं,
मर्यादा का परित्याग न करूँगा । सुख-सान्ना = सुख रूपी गंगा । दूटे =
बाँध के टूट जाने पर । बारि = जल अथवा बारी, बगीचा ।

बीरा = पान का बीड़ा । चून = चुना । काय = कथा । वहाँ संगठन
की ओर इंगारा किया है और कहा है कि पान, सुपारी, कथा और चूम
के संगठन से ही बीड़ा बनता है जो ऐसा रंग लाना है ।

राय = राजा । माह के सेवा = बादशाह की मातहतनी । पंग =
पक्षी । इन = यहाँ । एज्जने = एज्जने करके ।

पृष्ठ १०४

गाढ = संकट । जाँहर = लड़ाई के समय की चिन्ता, जो रात में उस
समय तैयार हो जाती थी जब राजपूत बड़े भारी शत्रु से लड़ने निकलते
थे और हार का समाचार पाने की स्थिति में तैयार रहनी थी । पंग
के लंबा = पंग का सा हाथ है । देहुराग = आज्ञा दो कि हम हिंदुओं
की ओर से नार न करें । यंचु = समय । मीनु = मृत्यु । माहा =
प्रलय नाश = अभिलाषा की । गौग = कमी । बाँजे चाँदि बाँजे = बिन्दु
में बिन्दु । चित्रक लीला = टीका कर लिया । गानुद = अनुपम ।
न काँटी = पर्याप्त न दुःख । अंगुल = अंगुल । रा = रात । राय = राजा ।

न लेख नावे = निन्दा में नहीं लगना है । गायमु = गाय मु
बाजी । मग = आकाश । का = उदा है । रात = रात । निराशा =
निराशा । लो = लो । मग = मग । गायमु = गाय मु ।
का = उदा है । रात = रात ।

बिहानु = सवेरा । धावा = आक्रमण । गरंरा = बेरा । चहुँफेग = चारों ओर से । छँका = घेर लिया । गरगज = बुर्ज पर । कमानें = नौसे । ओदरहिं = विदीर्ण होते हैं, टह जाते हैं । जाहिं सब पीसा = सब पिसे जाते हैं ।

रावट = महल । दाद = आग । अजर = जग रहित अथवा बिना जला हुआ । राजगीर = राज लोग, मैमार । थवई = मकान बनाने वाले स्वयं । सरग हुन = आकाश में । गाजा = वज्र । परलै = प्रलय । जूक = दुद । पृष्ठ १०७

हिये न हारा = पन्त हिम्मत न हुआ । राजपौरि पर = राजद्वार पर । अखारा = नृत्यसभा । साँह = सामने । धन तारा = बड़ी मूर्ति । पातुर वेस्यापुं । भूला = तल्लीन, निमग्न, वेमुग्ध ।

जहँवा..... दीठी = जिधर बादशाह की दृष्टि थी उसी ओर सामने । दीन्ह तहँ पीठी = बादशाह को ओर पीठ दिवलादी । गूँजा = क्रोधित होकर गरजा । कबलगि... भूजा = हे नृप अर्थात् मुन्दरी, चन्द्रमा अर्थात् राजा कब तक तुझे भोगेगा । छाड़हिं दान = वारा छोड़ दी । जहाँगीर कनउजकर राजा = यहाँ ऐतिहासिक अमंगति है । नरग = नरग । साँचा = शरीर । उटसा = उखट गया । नचनिमा = नचत्की । नारा = ताली, दोनों हाथ पीटना ।

विशेष—तीसवे ढोहे में जहाँ बादशाह के तेज का वर्णन है वहाँ ईश्वरीय शक्ति का आभास भी दिया गया है ।

वरिस = वर्ष । आड पाणु = चित्तौड़ में आकर सुलतान ने जो आम लगाये थे वह फल बर झड़ भी गये, पर चित्तौड़गढ़ अब तक मर न किया जा सफा । जो तारा = बादशाह कहना है कि यदि मैं गढ़ को तोड़ता हूँ तो । जँहर हाड = जाहर दान का पालन कर सभी स्त्रियाँ जल मरेगी और साथ में पद्मवर्न भी जल मरेगी, तब ताई = इम्रा बीच में । अरदामें = शयनाण्ड । दरेव = देश-विशेष । पछिउं = उचित

होकर । सपथ = शपथ, कसम । न..... मनमाना = हृदय में विरक्त
 नहीं बैठता । सपथ बोल = शपथ-पूर्वक कही गई बात । कज
 परवाँना = प्रानाणिक है । लंभ..... पहरा = जिन पर्वत ने संभर के
 भारी भार को अपने सिर लिया है उसका वचन मिथ्या नहीं जानकर ।
 इतने भारी सुलतान की बात झूठ नहीं हो सकती । नाव जीना =
 सरजा ने कहा कि जो व्यक्ति किसी बात का भार अपने ऊपर लेकर कि
 गर्दन झुकाता है, वह नीच है । सरजै बसीठ = सरजा ने कुछ
 पूर्वक सीधी-सीधी बातें बनाकर शपथ की जिसे राजा ने विश्वास क
 लिया और दूत की बात को मान लिया । सोनहार = समुद्र का पत्नी ।
 डाँडी = पालकी । काँड़ी = पिंजरा ।

पृष्ठ १०६

आनि मेरावा = लाकर देती । जोरे बान् = यदि अब मे
 किले में आने पर वह किसी प्रकार की कुटिलता करेगा तो तब उसके
 सामने बाण होगा । काहू = क्रोध । छोहू = स्नेह, दया । देवे = देने
 को । प्रीति रम होड = प्रेम उत्पन्न हो । जतपरकार = जितने प्रकार की ।
 माह आनी = चादगाह को खिलाने के लिए वह सब लाई गई ।
 गवना = गया । जेवा बिहाना = दूसरे दिन सुबह ही राजा ने
 भोजन किया । केवल लीन्हा = सूर्य अर्थात् सुलतान ने अपने
 मित्र कमल को अर्थात् रावबचेतन को साथ ले लिया । मनने
 अधिक = मन से भी अधिक गतिवाला । उधरि पँवरि = दगाड़ी
 बुलगाई । निरमरा = निमेल । उरंठकरि = चिन्तित कर ।

पँवरिया = छोटीगाड़ी । निन्द करोरि = जिनके सामने
 करोड़ों मुकतायें । कनक = सोने के । भँवरी = चक्कर । साती.....
 नैवर = यहाँ दृष्ट्योग में वर्णित शरीर के आंतरिक भाग का दर्शन दिया
 है । पाँवर = एक दिन सोचा ।

मात्रा = बिंदु पिंजड़े में बन्द हुआ। एक ब्राह्मण ने देखा कि एक पिंजड़े में बन्द है। उसे क्या आउं और उसने पिंजड़े को खोल दिया। पिंजड़े में बाहर निकले ही मित्र ने ब्राह्मण को न्या जाना चाहा। ब्राह्मण देवता ने कहा कि तुम्हें भलाउं के बदले बुझाई नहीं करनी चाहिए। उसमें एक गीतक आ पहुँचा। उसे पच बनाया गया। उसने कहा कि पच तुम जिस दशा में थे उमी में आ जाओ तब तो मैं मानस को समझूँ। यह सुन कर गेर चट से पिंजड़े में धुस गया और ब्राह्मण ने उसे उसका ताला बन्द कर दिया। इस प्रकार छल का बदला बदल दिया गया।

राजेलोन... गोत्र = उन्होंने राजा से अच्छी बात कही थी। उसके बदले में उन्हें वह सुनना पड़ा जो उन्हें नमक जैसा तीव्र लगा। वह क्रोधित हो अपने महल को लौट गये और उन्होंने नमक निरा कि अथ बिंदु बन्धन में आना चाहता है, राजा कैद होता चाहना है।

निसरीं = निकलीं। रायमुनी = पत्नी-विशेष। पींजरहुँत = पिंजड़ा से। परथमें जोवन = प्राथमिक यौवन, यौवन की प्रागल्भिक अवस्था। मारंग भौहें = धनुष जैसी भौहें। मारहिं... ओही = वह नौह ली। धनुष को धुमा कर कटाक्ष रूपी बाण छोड़ रही हैं। हनहिं = मारती हैं। आगरि = बढ़ कर।

दीरवआउ = उमर दराज (अधिक) हो, 'उमर दराजे महाराज तेरी चाहिए'। पठारथ = रत्न। कहें... वामी = वह स्तब्धी इनमें कहाँ है जिसके पास अनर रहता है। कहें... जोती = वह दीपक इनमें कहाँ है, जिसके प्रकाश पर पतङ्ग नर झिटता है?

पृष्ठ ११२

दिस्ति तरनावा = नीची नजर करली। पाहुन = महमान। पाहुन... परदाही = महमान को चाहिये कि ऊपर की न देंगे। जेने अजुन ने नीचे दया देल कर मत्स्य-वेध किया था वैसे ही आपकी नी

बखाना = प्रवर फैल गई। उगर्दा = संसार में आकर दूँ।
अवतार लिया अथवा पृथ्वी को नाप डाला। चमे = गिरे। च
= निगल लिया। पतार = पाताल में।

दुहेली = दुर्ग। निर्वित = निश्चिन्त होकर। निरुदर =
से लौटना (बहुगना) न हों।

सो " " अचा = उन चौपाइयों में यह भी भाव है कि जो कड़े
लोठ गया वह लौट कर न आया और न वहाँ की कड़े नर ही
'यत्र गत्वा न निवर्त्तन्ते'।

विद्रोवा = डोडना है। लेजुरि = रस्सी, रज्जु। डारै = डल
है, बहाती है।

पृष्ठ ११६

विलपै = रोती है। नागा = नागमती। विरहा = कामा = उस
विरह की अग्नि से जलने से कौण काले पड गये। पलुहै = पल्लवि
हो, हराभरा हो। नागेसरि = नागमती। नचा = तप्त, दुर्ग
अव वचा = अव में नागमती विरह-रूप-गरुड से नहीं
सजती (गरुड सर्प भजी होता है) चीन = चीण, कुश। नाह =
स्वामी।

फूल के निकट होते हुए भी दूर है क्योंकि उन दोनों का आदर्श भिन्न है।
 चौंटा गुड़ से दूर रहता हुआ भी उसकी गंध पाकर उसके निकट आ
 जाता है, क्योंकि उसमें गुण-ग्राहकता है। इसी बात का नीचे के दोहे
 एक और उदाहरण दिया जाता है।

भँवर.....पास = भँवर वन में रहता है किन्तु जल में रहने वाला
 कमल के पास पहुँच जाता है पर मैडक जल में रहता हुआ भी कमल का
 गंध से आकर्षित नहीं होता।

तुलसीदास जी ने भी ऐसा ही कहा है।

विशेष.—तेरहवें दोहे के पश्चात् कथा का प्रारम्भ होता है।

वरनि = वर्णन करके।

निरमल... ..देखा = वह वर्णन विशेष निर्मल दर्पण के प्रति
 चिन्मयी की भाँति है। जो जिस रूप का है उसे वही रूप दिना
 पड़ता है।

नोट—कवि कहता है कि उसने जो कुछ वर्णन किया है यथा
 वर्णन किया है। जेम्सपीयर ने भी कहा है कि कवि वाह्य प्रकृति का
 दर्पण दिना देता है (The Poet holds the mirror to nature)

वनि सो दीप सवारी = वह मिहलदीप अन्य है जहाँ की स्थिति
 दीपक के समान उज्ज्वल प्रकाश देने वाली है और ब्रह्मा ने जिस पदमिनी
 अर्थात् पद्मावती का वन या रह अन्य है। इसका अर्थ यह भी हो सकता
 है कि वह दीप अन्य है जहाँ विधान न गतिनी का उपलब्ध किया, उस
 रूप के दीपक को जलाया।

सुगन्धरेन् = अरुन्दी गंध वाला सम्भव है वह गंध का प्रेमी हो
 अथवा उसने ही स्वाभाविक गंध आनी हो। सो राजादेन् =
 सिद्धदीप का राजा है और वह उसका देश है।

बाहि = अंगरेज

रहें = मनेह रूप जल में सींचनी रहें • प्रेम रुगनी रहें । तैरोग = ताम्बूल, पान ।

पृष्ठ १००

समार = समाल । बार = देर । भोग मानिलेह = भोग विलास करले । कवल न बिासा = प्रप्राप्त की प्रसन्न न हुं । मपुटरहा = कभी जैसी यनी गही । प्रकाको = प्रकाश । पटाग = गजमी वस्त्र । पालक पीढ़ = पलंग पर सोये । मट्टी = मच मचिया (पर) । बँदि = कैद में । जानी = लगी । रुगनी = नुरुभाटे हुं । जेलहि ' ' ' पीऊ = जब तक यौवन है तब तक प्रियतम से याचन क रहने चाहे जितने चाहते वाले मिल जायेंगे ।

पुरुष ' ' हेरा = पुरुष के साथ किसी प्रपन्न स्त्रीना है । अगर एक छोड़ जाय तो दूसरे को नोजलिया । जीवन परगटा = जैसे जैसे धीरे धीरे यौवन रूपी जल कम होता जाता वस्त्र में भेवर मिटने जाते हैं और उनके मिटने पर हंस प्राते हैं । (वर्षा के बरतने पर हम आते हैं) तात्पर्य यह कि यौवन की वर्षा बरतन ही मरुत जल रूप हम आजायेंगे, बुढापा आजायगा । विरमि जो लाव = जब कुछ विलास और विषय भोग करलो । कालिदि = यमुना । विरामा = विलासी । परामी = भागेगी । समुद्र = समुद्र को । विरि पृढावन्था ने । कौनेकाजा = किस काम का । जो लागि कालिदि परामी = जब तक कालिदी या यमुना है विलास करलो फिर तो गंगा में मिलकर गंगा होकर समुद्र में डूँड कर जाना पड़ेगा अर्थात् जब तक काले वालों वाला यौवन है तब तक विलास करले फिरतो सफेद वालों वाला बुढापा आवेगा और तब मृत्यु की ओर तुम्हें दाँटना होगा । जीवन ' ' तोरा = इस समय यौवन-रूपी भौरा है—तेरे केश अमर जैसे काले हैं और फूल जैसा तेरा शरीर है । हाथ मरोरा = इस फूल को हाथ से मल देगा ।

कौवल = कौपल, किरालय । तरिवर = पेंड में । तोहि = तेरा
 रात = लाल । रह लेहु रचि = भोग-विलास करलो । पुनि
 = जब तक कि पत्ते पीले पड़े -- वृद्धावस्था आ उपस्थित हो और मृत्यु
 सुप्त में जाने की तैयारी हो । उरहि = हृदय में । रँग . . . रँग
 = मैं उसके कच्चे रङ्ग को जला दूँ जो अपने रँग को छोड़ कर दूसरे
 रँग में रँग जावे । दूसर = दूसरा । करे दुइ पाटा = दो मार्ग
 देता है, प्रेमियों में अन्तर डाल देता है । एक पाटा = एक मिहामन पर
 जेहिकै = जिसकी । जीउ = हृदय । दिह = दह । सँपरा = स्मरण
 कर लिया अर्थात् हृदय में धारण कर लिया है । आदि करत = आदि
 भरते हुए । कौनि रसोई = किस काम की यह रसोई (भोजन) है
 जेहि . . . होई = जिसमें दूसरा प्रकार न हो, जो एक ही प्रकार की हो
 बैठेया = बैठ गया है । दूसर पुरुष = अन्य पुरुष का । तुइ = तुने
 पगवा = दूसरे का ।

पृष्ठ १२२

वैमे = बड़े रहने से, बिना उपयोग के । जरे मरे विनु = बिना
 उपयोग के ।

बनुक तो नैना = तों बनुग जैमे नेत्र । बिहैमि . . . आन =
 यदि वे कमल अर्थात् पद्मावती, तू प्रगटना-परेक स्वीकार करके गो
 नुस्खे एक प्रेमी को लाकर बिना रखनी है ।

नहि भाड़े = धाय नहीं है । मगि चहावमि = मैं अगर चाहिये
 बंजनी है । निमल . . . सामा = मगल में तब निमल बनना है,
 दो उमर मराने पर गाय तो बन जाता हो जाता है । तानये यह पि
 ने निर्मित है यदि लवक भी मृत होकर तो यह तानिया लव जायगी ।
 जेका प्रस = जेका प्रस होता है । य प भाई दीया = यों तब यों
 देव प्रस । जय मगल . . . जेव मीमा जय दियाडे पद प है, यदि

उल्लेख है, जिसमें यदि कोई भी चीज मिलती है तो पथर होकर जाती है। मंगमणीज ने भी इसका उल्लेख किया है। गव्या = गौश्वपुत्र। मो.स. = चीक = उर का चिन कैसे चिन-निन हो स है। पेरा नेन = आंग का टंगारा करने ही। चरि मो = मो दधि, भद्र ... पृथी = उन्होंने उस कुतब को इतना कूटा कि टक हो गई। लाई = ललायी। गदर = गधे पर।

सुमद ... कूके = यदि कहता है कि विमान ने जिसे गन्धी गुरान न पत्र बनाया है उ. क्या कोई कुंक का उग मद्रत जिसके न हारे सतार स्थिर है वह पवन के कूके से कैसे उड़ा सकता है ?

बाग = हार पर। भु. = पृथ्वी पर। तहाँ तमि = वहाँ तक। आरु = निकल आये। चरन टंग मारा = चरनों की धूल पर। आनि = लेकर। गगत = रगत, धर दिया। मोनकारी = मोने उगदि ... पानी = राज गंगा : कहीं बहने लगी, अन्होनी हो गई

जो ... द्वाज = जो रस्ते-तु हैं जो भा नहीं देता है। जा = बरौ रत = रक्त। पाय = पार्श्व = पार्श्व। गैम = गम, स्तम्भ २३ आधार। दरगा = वर्षा में रुल ... माना = इस दुःख रूप दुःखी पताल तक पहुँच गई है और माना में जा चुके तेह ... बाढ़े = उनी दुःख की बाढ़ को लेकर वन में दूर बढ़े हैं। उवारे = खोलकर।

पृष्ठ १२४

हुहुमि पुरि = पृथ्वी भर गई है। सायर = नागर। कं केर = काढ़ी का। वेहरि = विदीर्ण होकर। हिय फाटा = हृदय फट गया दिया = दीप्त। क = का। बेहर दिया = मेरा पयाह दिदीर्ण न हुआ। यदि = क्रंद में। हों मुकराव = मैं यदिनी जाऊँ और अपने पति को वंद से मुक्त कराऊँ।

कैला = कलस में घँसा हुआ। लिखाट = मजकूर। चलाक = मेरी गजकों में तुम्हारे पैरों में फँसा दान दिया है, वह तो शकल भी नहीं पो-ना पाएगी। चलि = चला। गतासी = गतासी भाँसी = कीर का कलस लगाता है। गरम = गरम। तब मुँह में तो तब में सचा कीर है। पेनी = देख दूँ न्याय मार दूँ। बोविकै = कलस। पुरा = काट = जैसे कि हाथी का निकला दाँत फिर से नहीं घुस सकता ठगी प्रकार पुरा की कही बात भी पीछे नहीं सकती क्योंकि पुरा की बात कलस का माला नहीं है जो पीछे डट ऊपर गुमार = बुद्ध। जाहाँ = स्वामी। जिउ कौन = जी को कौन पर एक अर्थात् प्राणों को हथेली पर रखकर।

मन बैठि = बैठ कर सलाह करते हैं। सो मनहीन = ऐसा मत वि करना चाहिए। परै नहिं भोग = जो कि खुल न जाय। राजा = राजा से छल किया। जस = जैसा कि। तुरकन्ह = सुखलन ने। तस = वसा ही।

पुरुष.....काँट = पुरुष वहाँ ही छल से काम लेते हैं जहाँ क करके पार नहीं पा सकते। फूल के साथ फूल अर्थात् भले के साथ भले और काँटे के साथ काँटा अर्थात् बुरे के साथ बुरा बनना पड़ता है— 'कण्टके नैव कण्टकम्'।

चण्डोल = डोले, पालकियाँ। सँजोइलकै = सजा कर। बैठ भानू = इसे सूर्य भी न जानता था कि उसमें पद्मावती के वजाय लोहा बिछाया गया है। ओहार = उधार, परदा। सुरंग = अच्छे रंग के शयन बाल रंग के। लाए = लगाये गये। भूलहि = भ्रम में पड़ जाते हैं। भए सँग = साथ चले।

अगमन होइ = आगे बढ़कर । सँकरे साथ = संकट के साथ, संकट में पड़ कर । मीचु = मृत्यु । भरी थौ भूँजी = भोग ली । आउ = आयु । पूजी = पूरी हो गई । बहुतन्ह = अनेकों को । मरौं जो जूझी = युद्ध करते-करते मर जाऊँ । जिनि रोण्ड = मत रोना । ममदि = मेरे कर, छाती ने लगाकर । मसि माँक = कागिमा में । छपा = छिप गया । कारी = अंधकार, रात्रि । लौक = सन्ध्या । हँका = हुँकार दी । धौल गिरि = धवलगिरि के समान । अग न मोरा = पीठ न दिवाऊँगा । सोहिल = अगस्त्य नामक सितारा । दुगव = किला । मगत = रास । ठाहौं = भार डालूँगा । सँकरे = संकट में । निवाहौं = साथ दूँगा ।

पृष्ठ १३०

मेड = बाँध । टेकों = रोक दूँ । रनबँड = रनबँकुरा । अगन घटा = नादल की घटा छाई हो । मेघ करि = मेघ की झडी । डोलै नाहि = विचलित नहीं होता । देव जय आदी = निनात देव (१-देवता २-राक्षस) हुआ है । बादी = दिरोधी दुश्मन, शत्रु । हरदानी = हरदान (स्थान-विरोध) की बनी हुई । सेज = छाटी तलवार, बरछी । गीज कै पानी = जैसे कि उस पर बिजली का पानी चढ़ा हो । लोम = पीछे । गाना = गाते हुए । सीस जुनु बाना = मानो उसके सिर पर प्राकर लगे जाते हैं । इदू = चन्द्रमा । गोरै = गोराने । जग... .. हाथी = मानो बिना शुण्ड का मदनस्त हाथी हो । पहिलि = प्रथम । डौनी = चढ़ाई । आवत आइ = आते आते ही । हँकि = हुँकार ।

स्यौं = सहित । टूटहि = कट कट कर गिरते हैं । बतर = बचव । हंड = टोप । तुरय = घोड़े । बगमेल = बाग का बाग से मिलना, निकट आकर युद्ध होना । भार कंधा = वह पहाड़ के जैसे थे और कंधे को हाथ पर लेकर—प्राणों को हथेली पर रख कर युद्ध करते । घाव मुख लागे = मुख पर घाव लगने पर भी । जेमे दे = ठीक उसी प्रकार वह बढ़ बढ़ कर प्राण देने लगे जैसे कि पत्नी

पृष्ठ ७

अस्वपतिक तिर नौर = अस्व के चढ़ने में जो लोग प्रतिष्ठा पाये हुए हैं उनका सितोत्तर ।

गन्धर्वाक नार्यै = गन्धर्वों के हाथियों को अपने अस्त्र के पक्ष ने भुजा देता है अर्थात् दूसरों के भी हाथों उनके पक्ष के कारण उसका आत्म मानते हैं अथवा यह ऐसा गन्धर्वा है कि हाथियों को अस्त्र ने भुजा देता है ।

गन्धर्वाक रू = राजाओं के लिए यह दूसरा राजा है । जैसे और राजागण ननुषों में इन्द्र के समान हैं, वैसे ही यह राजाओं में ग्रेष्ठ है, अर्थात् यह राजा राजा भी राजा है और भूमिदियों के लिए यह दूसरा रू है । निम्न प्रकार भूमिदियों जोंग इन्द्र की रूप को चाहते हैं कि जब इन्द्र की हारा हो और सब वर्ग हो उनी प्रकार वे जोंग गन्धर्व-सेन की भी हारा चाहते रहते हैं ।

ऐन नौरै = यह ऐसा अस्त्र है कि चारों तरफों में (दिशाओं में) उसका नष्ट माना जाता है । सब राजा जोंग उसके शक्ति से नष्ट होते हैं और कोई भी राजा नहीं रहता (आध्यात्मिक धर्म — अस्त्र आकाशमन्त्री राजा उसे ही विधान मिल जाता है और जो राजा उस की शक्ति से नष्ट होता है वह राजा का अस्त्र नष्ट करने की शक्ति)

राज नारै = जब कोई निरालास के निष्ठ पुरुष है तब उसे ऐसा मान्य होता है कि वह काम के सब श्रेष्ठ मन ।

अनरुद = अर्जुन की शक्ति । राजा = और । राजा = अस्त्र = वे आकाश पक्षियों द्वारा जोंग की कि जोंग में अस्त्र आकाश पक्षियों की ।

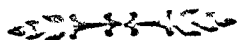
मोर । तेहि.....तमचूरु = मुर्गा उसकी बराबरी की इच्छा करता है ।
 नेर = निपटे । जून्त = युद्ध में काम आजावे । एकौ =
 एकडे, द्वन्द्वयुद्ध । मोहि राजा = आओ हम तुन द्वन्द्वयुद्ध करें ।
 तावै = राजा ने । पावा दाँव = बदला लेकर । फिरा = लौटा । बोहै
 सा = हथियार छोड़ दिने । कारी = कारगर, गहरा । भार परा
 मँक बाट = राजा योन्त की तरफ निर्जोब होकर बीच रास्ते में गिर गया ।
 मोटी = लुढ़ी, वेत । नाटी = मुर्दा शरीर । परावा = दूसरे का ।

पृष्ठ १३४

नेगी = पाने वाले । हुत = धा । टिकठि = तल्ली, शरयो ।
 जोरी = जोड़ी, सगिनी । दार = राख । बहुरि न आवौ = आवागमन
 रहित होवजैगी । गेडै = की भोति । खाटा = तात्पर्य है चिता ने ।
 गति देइ = शीघ्रता-पूर्वक । होइ अगूता = आगे । सूता = सोना ।

पृष्ठ १३५

जूड़ = ठरही । बूड़ = डूबा । राम औ सीता = तात्पर्य है रत्नसेन
 और पद्मावती से । पिरधमी = पृथ्वी । नूदी = छतार । इस्तिरी =
 स्त्रियाँ । जोरी..... नेरी = इस कविता को मैंने रक्त की लेई लगा-
 कर जोड़ा है और भारी प्रीति को आसुओं से भिगो-भिगो कर गीली
 किया है । चीहा = चिह्न, निशान । उपराजा = उत्पन्न की ।
 केइ बँचा = मिलने ऐने हैं जिन्होंने राम लखार में मोड़े डे दिष्ट
 अपना यश नहीं खोया प्रधाव अनेक लोग ऐसे हैं ।



मार्गों की गाथा चलाई। कबीर ने ईश्वर को श्रद्धासिद्धि रूप देकर उपास्य बनाया चाहा और प्रेम-मार्गों कवियों ने श्रद्धासिद्धि कथाओं में ईश्वरवादी रहस्य के दर्शन कराए। उनका मूल माधुर्य में था, इस लिए वे कथाएँ अधिक आकर्षक हुईं। कबीर ने केवल इनकी मदद नहीं की कि कदवापन विपत्तियों पर प्रेम मार्गों कवियों ने स्वाध्याय मिठाई में ही रसायन उत्पन्न करदी है। जायसी इन्हीं प्रेम-मार्गों कवियों में से हैं। प्रेम मार्ग की परम्परा जैसे तो ऊपा अनुल्लस की कथा ने चली आती है किन्तु उसका प्रौढ़रूप मुसलमान कवियों में ही दिखाई पड़ता है। परमावत में चार कथाओं का उल्लेख है। वह इस प्रकार है—

विक्रम घँसा प्रेम के बारा । सपनावति कों गण्ड पताग ॥
मधुपाल मृगु धावति लागी । गगनपूर होइगा बैरागी ॥
राजकुँवर कचनपुर गण्ड । मिरगावति कहँ जोगी भयउ ॥
साधु कुँवर खंडावत जोगू । मधु मालति कर कोन्ह विमोगू ॥
प्रेमावति कहँ मुरसरि साधवा । ऊपा लागि अनिरुध दर बाँधा ॥

इस प्रकार कृतग्रन्थ (संवत् १५५० के लगभग) की सृजावती मंजु की मधुमालती, मुग्धावती और प्रेमावती सिद्धि दो का अन्तर्गत नहीं लगता है, इन चार प्रेम कथाओं का उल्लेख आता है। इन प्रेम-गाथाओं की चार विवेचनाएँ हैं (१) ये चरित्र काव्य नमनवियों के ढङ्ग पर रचे गये हैं, इन में सर्गों का विभाजन नहीं है बल्कि स्थान-स्थान पर घटनाओं के अनुकूल शीर्षक दे दिये गये हैं। (२) ये पूर्वी हिन्दी अर्थात् अवधी में दोहा चौपाइयों में लिखी गई हैं। गोस्वामी तुलसीदास ने भी अपने रामचरित मानस में दोहा-चौपाई के ही क्रम का अनुसरण किया है। (३) ये प्रेम कहानियाँ मुसलमानों की हो सकती हैं और इनमें मुसलमानों की संस्कृति की कतक मिलती है,

(१) ये सब कथाएँ हिन्दू-जीवन से सम्बन्ध रखती हैं। इन प्रेम कथाओं में जायसी का स्थान प्रथम है। उनकी कल्पना और कविता ने प्रौढ़ता । उस में सत्तार जीव और ईश्वर के सम्बन्ध में बड़े गहन विचार । प्रेम की तीता में वह अद्वितीय है । प्रबन्ध-काव्य की दृष्टि से लघु-मानस के परचा उलको दूसरा स्थान मिलता है, क्योंकि इसमें जीवन की दृष्टि व्यापक व्याख्या नहीं जितनी कि गोस्वामी जी काव्य में है ।

नि २—जायसी के काव्य की विशेषताएँ बतलाइए ।

सत्तर—जायसी के काव्य में गुण भी हैं और दोष भी । उनकी कुछ विशेषताएँ गुण से सम्बन्ध रखती हैं और कुछ दोषों से । यहाँ पर उनकी दोनों ही विशेषताएँ दी जाती हैं ।

गुण-सम्बन्धी विशेषताएँ—

१—जायसी ने अपने काव्य में चलनू प्रबन्धी का प्रयोग किया है । वहाँ तक हुआ है उसने संस्कृत का पुट नहीं दिया है उनकी भाषा बोझ-चाझ की अधिक है ।

२—जायसी ने प्रेम मार्ग की परम्परा का पूर्णतया प्रतिपालन किया है । जायसी परम्परा के पालन में बड़े नर्यादापादी थे । ईश्वर, नदी, गुरु, बादशाह वक्त सभा की स्तुति भी है और अपने काव्य में, गढ़ बन, उपवन, तमुद, सूर्य चन्द्र, नक्षत्र, वात्सनाता आदि प्रायः सभा व रंजित ले जाये हैं । राजतेन के मुख से नर-देव की स्तुति की निन्द प्रत्यक्ष आई है कि तुझसे ने प्रायः देव निन्द जा-ती है (इसमें थोड़े मुत्तलाना प्रभाव की भी झलक है)

३—जायसी ने अपने काव्य में निराला का प्रयोग किया है । यद्यपि यहाँ से प्रियर है तद्वि निजलिया का प्रयोग है । प्रधान बात

इसका यह अनिर्वाच्य नहीं कि उन में प्रत्यक्ष कार्य के उपयुक्त वस्तु नहीं है। प्रेम के नशा और वियोग पक्ष के अति-रिक्त निमित्त नारायण का दशनिभक्ति और वित्तु के वीरों की वरता प्रतिग्रहकार और अनेक भाव प्रधान विषयों का बड़ा नानिर्वाच्य है।

अनेक ज्ञान। यद्यपि जयसी ने अपने परिचित्य प्रदर्शन में कई बार नारायण के है प्रार उनके बहुत से अर्थन गनावश्यक भी हैं। परन्तु इसमें नारायण के अनेक अर्थ परिवर्तित हैं और अनेक अर्थन, बहुत अर्थन आदि का व्यापक ज्ञान दिया है। बहुत अर्थन प्रकृति के अर्थन विचार का भी परिचय दिया है। जेते नारायण ज्ञान ने तालाब का निहा का कट जाना। एक दो स्थानों में जलिक सिद्धांतों का भी समानेश दिया गया है। देखिए—

चांदे कहां उगति छौं करा।

सुअ के ज्योत चोदनि नरा ॥

कहीं कहीं मनोवशा नर एव जीवन सन्वर्धी सिद्धान्तों का भी क्षेत्र आगया है देखिए—

पेहि धरा आकर मन लाग। सपनेहु लूक सा धध

मानुष चित्त जानि छु होई। कर गासोई सोइय होई ॥

अलङ्कार योजना—अनसा का कार्य यज्ञ-ता-प्रदान होने के कारण उन्में अन्याक्तियों तो भरी पड़ी है। अन्तु उहने अन्य अलङ्कारों का भी अर्थ प्राप्ति के साथ व्यवहार किया है। यद्यपि जयसी ने पनी उपमाओं और उल्लेखों को अनेक बार दुहाय है तथापि उत्तम नवीनता है। जयसी ने अलङ्कारों की अपेक्ष अर्थालङ्कारों को अधिक महत्त्व दिया गया है उनमें भा सनत नूलक अलङ्कार विशेष रूप से आये हैं। जयसी के हेतु प्रेक्षाएं अधिक प्रिय हैं। उनके सनता नूलक अलङ्कारों में प्रस्तुत

अपूर्ति के सुग-दुग-मग अनुभव के वर्णनों को रहस्यवाद कहते हैं। ये वर्णन गँगे के गुह्य की भाँति होते हैं और मैना बैल द्वारा ही समझा जा सकते हैं। अर्थात् उन में रहस्य की भाँति रहती है।

मिलने की दो अवस्थाएँ होती हैं छोटे तो पानी पानी में मिलने की भाँति मिलना मानते हैं और बड़े प्रेमी प्रेमिका के साथ मिलने मानते हैं। उपमे भी प्रेम के परिचय के कारण तर्कान्विता आजा है और सारा सार प्रेम-पान का ही रूप धारण कर लेता है। पहले प्रकार का मिलन (जैसे पानी पानी का अद्वैत जलक होता है) अद्वैत क्लृप्ति कहते हैं। जायसी में दोनों ही प्रकार के मिलन की कल्पना मिलती है। मिलाने वाला प्रायः गुरु होता है।

यद्यपि मुसलमानों के धर्म में ईश्वर का सम्बन्ध मालिक और बंदे सम्बन्ध का सम्बन्ध है (अर्थात् वहाँ यह भी कहा गया है कि वह इतना निकट है कि चित्तों की गर्दन की नस तथापि मुसलमान सूफियों ने उस सम्बन्ध को प्रेम का सम्बन्ध बना दिया है। सूफी मत का चलन मुहम्मद साहब के शायर दोभी वर्षवाद हुआ। (सूफी शब्द 'सूफ' से जिसका अर्थ सफेद ऊन है, बना है सूफी लोग ऊन के मोटे कपड़े पहनते थे) भारत में सूफी मत का आरम्भ सिंध से हुआ। शायरी इन्हीं रहस्यवादी सूफियों में से थी और चिरनी खानदान के शागिर्द थे।

जायसी में रहस्यवाद के भाव सभी अङ्ग आगए हैं। जायसी अद्वैतवादियों की भाँति एक ही सत्ता को सारे विश्व में व्याप्त पाते हैं। जो कुछ दृश्य जगत है उसी का प्रसार है। जायसी ने प्रेम और भावना द्वारा ही अद्वैत की सिद्धि की है। सूफी सम्प्रदाय का रहस्यवाद प्रेम द्वारा द्वैत से अद्वैतता को पहुँच जाता है। वह सारे संसार को सिया राम मय देखने लग जाता है।

पगल गुरुत सख नहँ पूरे रहा तो नावें ।

जहँ देखी तहँ मोड़ी, दुनर नहिँ जहँ जावें ॥

जायसी एक ही उपाति से नव उपातियों को होना मानते हैं ।

बड़े दिन दून उपाति निभई । बड़ै उपाति उपाति मोहि भई ॥

जायसी नैं उपातियों के प्रति बेमर्याद की झुलक निचनी है । नात
रान कानक जग नल जग प्रनिदिप है जायसी ने गुरु की भी महिमा
गुरु जाह गारै है और हम आत्मान में कही तो हीरान्त को गुरु
नन है कही पद्मावती को । जग पर पद्मावती को गुरु माना है वहां
पर गुरु श्री रामान्ना को पुकार दिया है । देखिए गुरु से एककर
होने को वत का वत सु दर वरान है ।—

ख खी गुरु हौं कहा न चीहा । कोटि छँतरपट दीचहि । डीन्हा ॥

ख चीन्हा तब और न कोई । तन नत लिउ जोवन मर मोई ॥

असली नाथक में अहंकार नहीं रहना उनका भी जायसी ने दिव-
सों काव है ।

“हौं हौं” काव धोव इताहीं । जव भा निद कर परिदाहीं ॥

जायसी ने प्रेमी की पीर और मिलन की झुलक बड़ी सु दर रोतिमें
दिगाई गई है । जायसी ने मिलन के मुख और बिदोहा में झुलक
बतलाते और विषाद दिख लाया है । जायसी के रहस्यकार में रतनी
शिरोगत है कि उन्होंने प्रेम की पीर दोनों तरफ एकसाँ दिवाई है । कभी
मेन की पीर एक ही ओर से है ।

जायसी ने पद्मावती भी मिलन के लिए उनकी से
उत्सुक है बितना कि रतनमेन । पद्मावती रतनमेन से मिलने आती है
वह रतनमेन के उदयपल पर वदन के छहरा में प्रेम मोह लिय देखी
है । उतने आने बिबह की इलाक पर जाने को भेला है ।
रतनमेन भी नाथक से भिन्न दाह्य है । रतनमेन की तरह नाथक
ही लेता रहता है और अन्तर एक जान है ।

नागसती देखती ह कि दूसरों के प्रिय आगये पर मेरे नहीं आये तो
उसका दुःख बतला होता है—

‘चित्रान्नित्र भीत रर आवा । पपीहा पीउ पुकारत पावा”
कलिका उसी तत्कालीन वेदना को चित्रित करती है मनुष्यों के नाता
ज्यों बार व्यापारों को अपने जैसा देखती है तभी उसे दुःख होता है ।
जमें नवा झरोखि झरोखी, मोर दुइ नैन चुबे जन प्रोरी ।

+ + + +

तब जन पियर पान भा मोरा । नेहियर प्रिरह वेइ झरु मोरा ।
उसका दुःख की अभिलाषा का फेला सुन्दर वर्णन है—

बहतन जारो दारने, कही कि पवन उठाव ।

नहु तेहि नारन उठि परे कन्त भ्रै जई पाव ॥

इस प्रकार नारन नाम के द्वारा कवि ने प्रियतन्त्र शब्द का जीता
उपमा चित्र खड़ा कर दिया है ।

प्रम आदये संयोग-शब्द की प्रेर । उनके कवि को सफलता
प्राप्त नहीं हुई ।

पद्मावती प्रेर स्वप्न के प्रधान लक्षण के समय विनोद का
विधान तो अत्यन्त किया गया है, पर विनोद का भाव प्रिखित भी
नहीं हो पाता कि स्नाहियों की परिभाषाओं का दशाती है । प्रहृष्टता-
प्रदर्शन की लाटला की मयि मश नहीं दश मना फिर भी वर्णन रत्न-
पूर्ण पत्र सर्वाप ह । पद्मावती शब्द परसे पति से मिलने चतुती है ।
उस समय कवि रहता ह —

‘नाज १ खेद पत्रया आदनु जाट न नेट ।

तन-मन जोवन मयि कै, देह चला खेद नेट ॥”

तन-मन थोवन तीनों को नेट से देन को चतुता पडा ही सुन्दर
रहा गया ह । सौन्दर्य का पदान प्रसिद्ध —

फूल के निकट होते हुए भी दूर है क्योंकि उन दोनों का आदर्श मिश्र
चीटा गुड से दूर रहता हुआ भी उसकी गंध पाकर उसके निकट
जाता है, क्योंकि उसमें गुण-आहकता है। इसी बात का नीचे के दोहे
एक और उदाहरण दिया जाता है।

भँवर ... पास = भँवर बन में रहता है किन्तु जल में रहने
कमल के पास पहुँच जाता है पर मैडक जल में रहता हुआ भी कमल
गंध से आकर्षित नहीं होता।

तुलसीदास जी ने भी ऐसा ही कहा है।

विशेषः—तेरहवें दोहे के पश्चात् कथा का प्रारम्भ होता है।

वरनि = वर्णन करके।

निरमल... देखा = वह वर्णन विशेष निर्मल दर्पण के प्रति
विम्ब की भाँति है। जो जिस रूप का है उसे वही रूप दिख
पड़ता है।

नोट—कवि कहता है कि उसने जो कुछ वर्णन किया है यका
वर्णन किया है। शेक्सपीयर ने भी कहा है कि कवि वाह्य प्रकृति
दर्पण दिवा देता है ('The Poet holds the mirror to nature'
re')

वनि सा दीप सवारी = वह सिंहलदीप धन्य है जहाँ की स्त्रि
दीपक के समान उज्ज्वल प्रकाश देने वाली है और प्रज्ञा ने जिस पदमि
अर्थान पद्मावती का बनाया वह धन्य है। इसका अर्थ यह भी हो सक
है कि वह दीप धन्य है जहाँ विद्या ने पद्मिनी को उषत किया, उ
रूप के दीपक को बनाया।

सुगन्धरेनु = यन्त्री गंध वाला, यन्त्र है यह गंध का प्रेमी
कवक, उ-ने ही स्वाभाविक गंध वाली हो। वो राजा.....देसूः
बद मिः दीप का राजा है और वह उसका देख है।

काँइ = अंगूठा

प्र० १२—आचार्य की भावना सन्तुष्टी विजेताओं पर विचार कीजिए ।

उत्तर—सन्तुष्ट पाना ही भूमिग देवों ।

प्रश्न १३—प्रत्यक्षता की दृष्टि में प्रमाण पर विचार कीजिए ।

उत्तर—आचार्य ने काव्य के दो भेद माने हैं (१) सुगम, जिसमें प्रत्येक छन्द स्वा. सम्पूर्ण और मान्य होता है और (२) प्रयत्नकाव्य, जिसमें कथायन्तु का रचना विज्ञान आत्मक है और प्रत्येक व्युत्पत्ति पर के अंगों का रचना है । प्रयत्नकाव्य में कथायन्तु को अपने उद्देश्य की ओर आकर्षण रूप में प्रवर्तित होना चाहिये । उसमें न तो किसी अनावश्यक प्रमाण अथवा कथा को लाना चाहिये और न अनावश्यक को छोड़ना ही चाहिये । उसका कोई अंग ऐसा न होना चाहिये जो मुख्य उद्देश्य की पूर्ति न करता हो । साथ ही संगठन की दृष्टि में प्रत्येक प्रमाण को उचित विचारण का सम्यक् प्रयत्न करना चाहिये इतिवृत्तात्मक एवं रम्यात्मक स्थलों का उचित नाम रम्य होता चाहिये । रम्यात्मक स्थलों में मनुष्य के हृदय की वृत्तियाँ लीन होनी हैं और इतिवृत्तात्मक में उसकी जिज्ञासावृत्ति (आगे क्या हुआ यह जानने की तालमा) की वृत्ति होनी है । प्रयत्न काव्य में भावों की सुन्दरता के अतिरिक्त इस बात का भी ध्यान रखना पड़ता है कि भाव परिस्थिति के अनुकूल है अथवा नहीं । इस दृष्टिकोण से यदि हम पद्मावत को देखें तो इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि उसमें अनावश्यक प्रमाणों का समावेश तो अवश्य है किन्तु अनावश्यक बातों का समावेश नहीं हुआ । कथानक में सम्यन्ध विच्छेद भी नहीं पाया जाता । जो प्रसन्न बीच में लाये गये हैं उनका मुख्य कथा से सामञ्जस्य स्थापित कर दिया गया है । जेने समुद्र से पाँच स्तनों की प्राप्ति और उनका अला उद्दीन को दिया जाना तथा देवपाल की शत्रुता और दूरी का भेजा जाना प्रोचराना का उससे मृत्यु को प्राप्त होना । इसमें घटनाचक्रों के भीतर जीवन दशाओं और पारम्परिक सम्बन्धों की वह अनेकरूपता तो नहीं है जो तुलसीदास के रामचरित्र मानस में है तथापि यह

हारिलहरा = हरियल (तोते की जाति का एक पक्षी) ऐसी बोली बोलता है मानो कहता हों कि मैं हार गया और हा, प्रकार वह अपना हारिल नाम सार्थक करता हो ।

विरोप—इन पक्षी के सम्बन्ध में जनश्रुति है कि यह पृथ्वी पर नहीं पैर रखता है। जब पानी पीने के लिए उतरता है तो पैर में कोई लकड़ी का टुकड़ा दबाये रहता है। इस प्रकार वह वृक्ष से अपना सम्बन्ध नहीं छोड़ता ।

कुराहर = कोलाहल ।

जायतनाउ = नंमार के जितने पक्षी हैं उसी प्रमराई में बैठते हैं और अपनी-अपनी बोली से दूसरे का नाम लेते हैं । मनुष्य भी ऐसा ही करते हैं । उपनिषदों में कहा है कि एक ही परमात्मा को लोग बहुत प्रकार से कहते हैं ।

पृष्ठ =

पैंग पैंग = एक-एक पैर पर, थोड़ी-थोड़ी दूर पर । पॉयरी = सीढ़ी । इसका अर्थ पैरी का द्वार भी हो सकता है। टावहिं टाळे = स्थान-स्थान पर ।

मय नाउ = वे मय कुण्ड पवित्र स्थान हैं और उनके चारों ओर भल्लम नाम है । मउ = जहाँ साधु और विशासी लोग रहते हैं । मउप = बड़-होम टिक के लिए जो स्थान बनाए जाते हैं । ये चारों ओर से खुले होते हैं और मयों पर धरा होती है । तया = तपस्वी लोग । उपा = १२ काने वाले । मानमरोदक = मानमरावर का जल । अति प्रसादा = अति गर्भर अथाह ।

अमृत सुनातू = मानो अमृत लाकर उसमें कपूर की सुगंध उत्पन्न कर दी गई हो ।

गररी = चरदर । चडुपरी = चरों ओर । रता = जल । कृता = कृता, समूह ।

तरार... आड़े = सब पेड़ पेमें दे मानो मायगिर से बाए गए
हो। उनको ऐसी बनी दाँद दे कि उसके कारण मसार में दाँद भी
जाती है और गात्रि सी दिनाड़े पड़ती है।

ओड़े..... देवावर = उस की दया से मसार में रात्रि राजनी है
और आकश हवा अर्थात् नीला दिगलाड़े पड़ता है। होड़े धिमराम् =
विश्रान पाता है।

पधिक धूपा। इसका साधारण अर्थ सरल है। इसका अन्य न्तिक
अर्थ यह है कि जो जीव इस संसार के तीनों तापों से पोडित हो ईश्वर
की शरण में जाता है उसका दुःख दृष्ट जाता।

अस..... वमन्त = वह अमराडे बादल के समान बनी है उसके
बर्षान का अंत नहीं हो सकना है। वहाँ उहो ऋतुओं ने ऐसे फल और
फूल लगे रहते हैं मानो वहाँ सदा वमन्त ही रहता हो, अर्थात् वमन्त प्रम
गया हो।

पवि = पत्नी। उलास = उत्साह, आनन्द। करहिं मात्वा =
बृत्तों की शास्त्रा को देखकर आनन्द करते हैं। बनी शास्त्राओं से पत्नी
बहुत प्रसन्न होते हैं।

चुहचुही = एक चिडिया अथवा 'चुहचुहाकर'। पौंडुक = पिडुक्रिया।
तुही = परमात्मा नू एक ही है। सारी = मेना। रहचह करही =
हचहाने हैं। उरहि = दूर दूर करने हैं। परेव = क्यूतर। करवरही =
धर से उग्र उडते हैं। गदुरी = एक पत्नी। जीहा = जीभ।

तुही जीहा = गदुरी 'तुही तुही' पुकारती है। कहने का अभिप्राय
यह है कि प्रातः काल पत्नी भी प मात्मा का स्मरण करते हैं।

भिगराज = नृप राज, कहा जाता है कि यह सब बोलियों का अनु-
कर सकता है। नहरि = एक चिडिया जिसको कुछ लोग न्यालिन
ते हैं।

नोट—पारिभाषिक रूप से क्वैत ये ही कहलाते हैं जिनमें हजार पसुरियाँ हों । 'सदस-पत्र कमलं, शत-पत्रं पुशेशम' अर्थात् सहस्र कमल वाला कमल कहलाता है तथा सौ पत्रों वाला पुशेशम कहलाता है ।

पाल = बाँध । बारी = बगीचा । अपूर = आपूर्ण ।

विश्व.....वासा = उसके फूलों की इतनी सुगंध है कि उसने चंदन की गंध की भाँति पास के वृक्षों को सुगंध से बसा कर चन्दन बना दिया है ।

देसा = देश । अवासा = महल । 'कैलास' का तात्पर्य यहाँ अमरावती समझना चाहिए क्योंकि वही इन्द्र के रहने की जगह है । ईसतामुखी = प्रसन्नमुख । चौरा = चवूतरा । मेव = कस्तूरी । गौरा = गोरोचन । ग्याता = ज्ञाता ।

सबै सुग'वाता = सब लोग संसृति घेरते हैं, पड़ित होने के कारण प्राकृत भाषा नहीं बोलते । अथवा यह भी अर्थ हो सकता है कि वे लोग शोधी हुई सभ्य लोगों की भाषा में बातचीत करते हैं ।

अस.....अरूप = दरों को ऐसा सजाया है कि मानो वे अपनी बराबरी न रखने वाले शिवजी के लोक हैं ।

आणु = जाने पर । करिन्द = हाथी दिक्पाल । तरहि दीटी = सिंहल गढ़ के मकानों की नींव वहाँ तक पहुँचती है जहाँ कि दिक्पाल और अणुकि (शेफनाग) है और वह के महल इतने ऊँचे हैं कि उनके ऊपर सूर्यलोक दिई पड़ता है ।

लोह = लोहा । वंका = सुन्दर । वॉका टेढ़े को कहते हैं (गढ़ के टेढ़े होने में ही विशेषता है) । टेढ़ी वस्तु अधिक सुन्दर मालूम होती है इसीलिए वॉके को सुन्दर कहते हैं । डर खाई = डर जाता है । सस = सातवें पाताल । नीचे के लोकों की गणना में पाताल का नम्बर आता है देखिए अतल, वितल, सुतल, तलातल महातल, रसातल पाताल ।

पृष्ठ ६

नव... नवयदा = गढ़ के नौ खण्ड और उनमें जाने के लिए अलग अलग छोटो-छोटो हैं। नवों .. नवयदा = जो नवों खण्डों के ऊपर पहुँच जाता है वह मानों नवयदा के ऊपर चला जाता है (नवयदा के भीतर पृथ्वी नक्षत्र आदि सब लोक आ जाते हैं) ।

जरे = जड़े। नवतहि .. दीक्षा = गढ़ में जो नग और शीगे जड़े हुए हैं वे ऐसे मालूम होते हैं मानों आकाश में तारागण और त्रिलोचन रुकी हो। चदि = अपेक्षा। लका .. ताक' = वह गढ़ लका से भी ऊँचा दिखाई पड़ता है। दीक्ष मन धाक = दृष्टि और मन देखते-देखते थक जाते हैं।

हिय .. फेर = उस गढ़ की रचना न तो हृदय में समाती है और न दृष्टि में समाती है। वह इतनी पेचीदा है और विस्तृत है कि दृष्टि और हृदय उनके ग्रहण करने के लिए पर्याप्त नहीं है।

फेर = घेरा। नित .. चूरू = उस गढ़ की इतनी ऊँचाई है कि सूर्य और चन्द्रमा उस गढ़ को घूँघर चलाते हैं। यदि ऐसा न करें तो उनके रथ और घोड़े चूर चूर हो जावें।

पौरी = प्रवेश-द्वार। चत्र के सजी = चत्र की चर्को-दुई : पार्वी : । पदल निपाही। कोतवार = कोटपाल, कोतवाल।

किरा .. नुनांगी = पाँच कोतवाल लोग उनकी रक्षा के लिए उनके चारों ओर दिन रात पहन इते हैं।

नोट—सिद्धगढ़ की रचना शरीर ही जैसी करी गई है। शरीर में भी नाभदार है "नो दूरे को पीछरा नन पी सोन" सोन को-बल 'नन', अपान, उदान, प्यन, ननन' शरीर के सब भाग हैं।

काप .. पौरी = पौरी न घुलने ही रर करनी है।

पौण्डि पौरि... काढ़े = प्रत्येक दरवाजे पर गढ़े हुए
वहाँ गया देख कर लोग डर जाते हैं ।

वह विधान.....चढ़े = वे सिंह बड़ी ताकतीय के साथ गढ़े गए
ऐसे मालूम होते हैं कि मानो वे गरजते हैं और सर पर
ट-हि पँछ = पँछ हिलाते हैं।

कुँजर कहि... लोहा = हाथी डरते हैं कि सिंह गरजकर
कहीं गान लायें।

कनक.....ताड़े = सोने की शिलाओं को गढ़ कर सीढ़ियाँ
गढ़े हैं और वे गढ़ के ऊपर तक जगमगाती हुई जाती हैं।

नवी.....पार = उस गढ़ के नी खण्ड हैं और नी ही
उनमें वज्र के क्वाड लगे हुए हैं । चार बार टहर कर लोग उन
पर चढ़ पाते हैं और सत्य के आधार पर ही वे उसके पार जाते हैं ।

नोट—जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है कर्मि ने सिंहलगढ़ मनुष्य-शरीर की एक सी रचना दिखल दे है। इस वर्णन में हिन्दुओं राज्यांग और मुफ्ती धर्म के सिद्धन्तों का बहुत कुछ सम्मिश्रण है। कौट के ना दावाजों के अनुकूल शरीर में आंग कन नाक आदि के ना दावाज हैं। हड्डियाँ ही वस्त्र के दाग हैं। गम उर दाग सड़कों योद्धा हैं। प्राण, अपान आदि पच रासु पाँच कानिबल हैं। गढ़ के ऊपर जाने के लिए चढ़ाई न हो स्थान बनता गय है। मुखिया की भाषा में इन रहस्य के स्थानों की मुशाम कल है। यथा यथा मित्र मार्ग के यकीन वाचक ही उद्योग की निश्चिन्त गणनाओं के अनुकूल निश्च-निश्च अक्षय में मानी गइ है। यहाँ पर वाचक वारणा मनुष्य का द्वितीय दुर्दे एम्प के वाचक वारणा मनुष्य का द्वितीय से चार प्रकार के वर्णन दिया जाता है।

नोट—घड़ी यहाँ सृष्टि है, घड़ी का अर्थ रहूँट की घड़िया भी ।
और घड़ी (समय का एक विभाग) भी है ।

झारि = निरे, सभी । असुपति = अश्वपति । भूनरपति = भूपति और
नरपति । भूनर पति से मालूम होता है कि उस जमाने में कुछ लोग
ऐसे भी थे जिनका केवल जमीन पर अधिकार था, शासन नहीं करते थे।
नरपति, वही हो सकता है जो मनुष्यों पर शासन करे ।

धौराहर = महल । सभागो = भाग्यवान् । परस-पखान = पारस पत्थर
(स्पर्श पापाण) । माना = जाना । भोग माना = सब लोगों का वहाँ
भोग और विलास का ही काम रहता था क्योंकि वहाँ किसी प्रकार की
चिन्ता नहीं थी । चौपारी = बैठने के स्थान, बैठक । सारी = पौसा, चौसर ।

पौसा . . . कोई = खूब पैसे पड़ते हैं और अच्छा खेल होता है ।
किन्तु उसी के साथ साथ वहाँ लोग तलवार चलाने और दान देने में
अपनी बागवारी नहीं रखते थे ।

भाट सिवली = भाट लोग उनकी सुन्दर कीर्ति का वर्णन करते
हैं और पुरस्कार स्वरूप हाथी और सिंहली घोड़े पाते हैं ।

राज धरियार = राजा का घण्टा जिसमें और कोई लोग रहबदल नहीं
कर सकते और जिसके अनुकूल सब को अपना काम करना पड़ता है ।

धरियारी = घण्टा बजाने वाला ।

धरी . . . निवारी = घण्टा बजाने वाला (अथवा काल) घड़ियों के
गेनता रहता है, पहर पहर पर अपने आप आता है यदि 'आपनि वारी'
पाठ समझा जावे तो अर्थ ठीक बैठता है । पहर पहर पर अपनी अपनी
आती है अर्थात् पहरा बदला जाता है ।

जबहि . . . पुकारा = जब घड़ी बज जानी है कटोरी (जलघड़ी) पानी
झा जाती है तब वह घण्टे पर चोट मारता है तब घण्टे-घण्टे पर घटा
है, आगे बतलाते हैं कि घण्टा बज कर क्या कहता है ?

परा.....भाँडा ? = घण्टे पर जो लकड़ी की चोट पड़ी तो उसकी धावाज सारे संसार को डँटती है कि हे मटी के बर्तनो (मनुष्यो) तुम क्या निश्चिन्त होकर सो रहे हो ।

तुम.....बाँचे = तुमको नहीं मालूम तुम कच्चे बर्तन हो । काल के चक्र पर चढ़े हुए हो । तुम समझते हो कि तुम 'आएँहु रहै' अर्थात् तुम रहने को आए हो । किन्तु स्थिर नहीं रह सकते, काल चक्र पर घूमते ही रहोगे ।

कहीं कहीं 'आएँहु फिरै' पाठ है । इससे यह अर्थ होगा कि तुम फिरने के लिए ही आए हो ।

घरीबराऊ = जब जब घड़ी की कटोरी भर जाती है तभी-तभी तुम्हारी उम्र का एक हिस्सा घट जाता है । तो तुम पथिक किस लिए निश्चिन्त होकर सो रहे हो ?

गजर = चार घण्टे पूरे होने पर जो कई बार घण्टे बजते हैं उन्हें गजर कहते हैं ।

चोवा = एक सुगन्धित द्रव्य । वही ऋतु बारह मास = जोर देने के लिए वही ऋतु के बाद बारह मास लिय दिया गया है ।

बारा = द्वार, द्वार का बार रह गया ।

जनु पहारा = मनो जिन्दा पहारा खड़े हुए है । रतनारे = लाल । धूम = धुँये के रूप में । सैन = सफेद हाथी यन्त्रों में होते हैं । बुद्ध धर्म में इनका उल्लेख है । रतनार = रत्नहार पर । मन ने अगमन = मन के नाश का जान बाला अर्थ मन की भी पहुँच उनका साथ नहीं होती । रत्नार नाश = रत्नार का फलन है ।

धिर उपगर्ह = निश्चय धार स्थिर नहीं रहते । नागने के निद्र व्याकुल रहते हैं । लोभ का चक्र है । मन अपनी पूँछ को नर पर टुल है, करने का तात्पर्य यह है कि उनका पूँछ बड़ी लम्बी है ।

तुषार = नुषार रेश के बोंदे । रवगाढ = रव के ले जाने वाले ।
बढ़ी = बढ़ी । धनि = रथ ? ।

दर = दर, मेना । निगान = उँहा । द्राग = द्रव ।

पृष्ठ ११

पाटा = पीड़ा = मिहामन । भूने = मुग्ध हो जाना या । नेत्र = ५
कस्तूरी । अपूरी = आपूर्ण, चारों ओर से पूर्ण । नाँक = बीच
इन्द्रासन = प्रधान आसन ।

नोट—इस वर्णन में कवि ने यह दिगताया है कि राजा का
को सभा में बड़े-बड़े राजा रहते थे ।

दृत्र... परताप = राजा का सर्वोच्च या दृत्र याकाश में लगाना
और वह स्वयं सूर्य के समान प्रताप वाला था । उस सूर्य के सम्मुख
में बैठे हुए राजा रूपी कमल लिले थे । राजा के मन्त्र पर बड़ा तेज
साजा... कैलास = राज-मन्दिर कैलास की तरह सजा हुआ
धरति = धरती, पृथ्वी । धौराहर = महल ।

उहै... राजा = उतने बड़े नरपुंगव वाले महल का वैसा
राजा ही इतना कर सकता था । यन्दुर्गन्ध = प्रफुल्लितों से ।

नोट—यहाँ पर भी कवि इन्द्र और शिव को मिला देते हैं ।
साँपें प्रायः इन्द्र के यहाँ रहा करती हैं ।

रूप = रूपवती । बबानी = गिनी जाती है । सुकवारी = सुकुमार
राट = राज मिहामन । परधानी = प्रधानी = पदरानी । दीपक
वानी = द्वादश आदिभ्य के समान प्रकाश करने वाली । आरहवणी =
सूर्य के वर्ण (रंग) वाली । वर्तमानो लच्छनी = वर्तमान लच्छन
पुस्तक के पीछे दिये हुए हैं । जवन = जितने ।

चम्पावति... ओतारी = परमात्मा ने जो चम्पावती को रूप
इसीलिए कि वह उसके गर्भ से पद्मावति को उत्पन्न करना चाहता

सलौनी = लावण्यमयी सुंदर ।
 में चाहे .. होनी = पद्मावती के अवतार से क्या ऐसी सुन्दर
 बनने वाली है अर्थात् जिस प्रकार चम्पावती का रूप पद्मावती को सुन्दर
 बनाने को हुआ । उस पद्मावती का जन्म क्या को सुन्दर बनाने को हुआ ।
 जो होना चाहता है वह होकर ही रहता है ।

सिंहलदीप 'दीप' = सिंहलदीप में 'दीप' शब्द का प्रयोग तभी से
 सार्वक हुआ जब से कि वहाँ ऐसे दीपक का प्रकाश हुआ । इसका वह भी
 अर्थ हो सकता है कि सिंहलदीप का भी नाम सत्तार में इन्हीं दीपक के
 द्वारा प्रकाशित हुआ ।

प्रथम .. 'अई' = आकाश में परमात्मा ने जिस ज्योति या निर्माता
 किया वह पिता के माथे में प्रकाशमान मणि (वीर्य) के रूप में आई ।

नोट—लोगों का विश्वास है कि ईश्वर जिसे सत्तार में भेजता है
 उसकी ज्योति पहले आकाश में रच देता है । वह प्रकाश फिर वीर्य रूप
 में पिता के मस्तक में जाता है ।

ओदर = उदर । अन्धान = गर्भ । जन्मानु = जेमे गन के नाम
 = पूरे हुए । परमानु = प्रकाश ।

जन्म दीया = जिस प्रकार प्रकाशमान दीपक लाला में विपण
 नहीं छिपता वैसे उसी प्रकार गर्भस्थ पद्मावती का वस्त्र का अन्धान के
 हृदय में प्रकाश आ गया था वह छिपा नहीं पित्त का अन्धान
 उजाला कर रहा था जन्म = जन्म हुआ

मोने दीप = पद्मावती का जन्म के समय मन्त्र का प्रयोग करने
 वरों को मोने में मगाने के लिए कर्त्तव्य में लाया गया था । पद्मावती ने
 जो प्रकाश देने वाली मणि थी वह सिंहलदीप में पद्मावती के रूप में
 उत्पन्न हुई । इति = मैं ।

सुरज्जला 'दीप' = उनके प्रकाश के समान रूप में जन्म हुआ
 नहीं थी । उसका प्रकाश उसमें भी दृष्ट हुआ था इसका वह भी अर्थ

तुषार = तुषार देश के बड़े । रथवाह = रथ के ले जाने वाले ।
बड़ी = बैठी । धनि = धन्य है ।

दर = दल, सेना । निशान = डका । द्युत = द्युत ।

पृष्ठ ११

पाटा = पीढ़ा = सिंहासन । भूले = भुग्न हो जाता था । मेद =
कस्तूरी । अपूरी = आपूर्ण, चारों ओर से पूर्ण । माँक = वीच
इन्द्रासन = प्रधान आसन ।

नोट—इस वर्णन में कवि ने यह दिखलाया है कि राजा की
सभा में बड़े-बड़े राजा रहते थे ।

द्युत . . . परत्ताप = राजा ग वर्चस्व का द्युत आकाश में लगता
और वह स्वयं सूर्य के समान प्रताप वाला था । उस सूर्य के समुद्र
में बैठे हुए राजा रूपी कमल में थे । राजा के मन्त्र पर बड़ा तेज

साजा . . . कैलामू = राज-मन्दिर कैलान की तरह सजा हुआ

धरति = धरती, पृथ्वी । दौराहर = महल ।

उहै . . . राजा = उतने बड़े नरपण्डित वाले महल का वैसा
राजा ही इतना कर सकता था । यदुर्गन्ध = ग्रामराशियों में ।

नोट—यहाँ पर भी कवि इन्द्र और शिव को मिला देते हैं ।
राएँ प्रायः इन्द्र के यहाँ रहा करती हैं ।

रूप = रूपवती । बलानी = गिनी जाती है । सुकवारी = सुकुमार
पाट = राज सिंहासन । पदानी = प्रधानी = पदरानी । दीपक
वानी = द्वादश आग्नि के समान प्रकाश करने वाली । वारहवर्षी =
सूर्य के वर्ण (रंग) वाली । वर्तमानो लक्ष्मी = वर्तमान लक्ष्मी
मुक्तक के पीछे डिये हुए । जवन = जिनने ।

चम्पावति . . . रीतारी = परमात्मा ने जो चम्पावती को रूप
दिए इसलिए कि वह उसके गर्भ से परमावति को उत्पन्न करना चाहता

तर जल में छोड़ दिया) और उसके हाथ ने मणिहार खोजा'। इस तरह वह अचेत होगई। लगी '... हाथ = सब महेलियों एक साथ जाता लगा लगा कर उस द्वार को खोजने लगीं। किसी के हाथ में मोती पा जाता था और किसी के हाथ में घोंघा आता था।

नोट—इसका आध्यात्मिक अर्थ यह है कि मूर्ख लोग इस सत्सार में जीवन-रुग्नी-द्वार खोजते हैं। दोहे का अभिप्राय यह है कि इस सत्सार में सबों अपने भाग्य के अनुकूल मिलता है।

कहा "आई = मानवरोवर ने कहा कि जो मैं चाहता था (इन रमणियों का दुर्लभ दर्शन और स्पर्श) सो पागया। परम स्वरूप ये मोक्ष-रमणा स्त्रियों यहाँ आई हैं। जिस प्रकार पारल पत्थर लोहे आदि पुरी धातुओं को उत्तम बना देता है उन्ही प्रकार ये स्त्रियाँ भी मुझे सुदृढता प्रदान करेंगीं यह भाव।

पाया रूप दर्शन = रूपवती स्त्रियों के दर्शन करने से उनकी रूप प्राप्त होगया। परमात्मा के दर्शन से जीव भी परमाना स्वरूप बन जाता है।

मलय बुन्दई = उन मणियों के शरीर दो स्पर्श करती हुई उनके शरीर की सुगन्ध ले कर जो ऐसा आई या मलय-मन्मथ की भोति साँत रही। उनके द्वारा मानवरोवर साँतल गया और उसकी गरमी जाती रही।

पान = पवन। न प्रय = मानव नहा जानकी तथा उनकी यहाँ जिया आई। उतिराग = उपर आगया (ऐसा न लगे होता है कि मानवरोवर ने उस द्वार को दिखा दिया था, अब उसका दरमजरा ही तब हुआ और उसकी गरम मिलती उसने द्वार को ऊपर नेच दिया)

चद रिरेन्ना = पद्मावती स्त्री। रिरेन्ना पुनुर देरि मनिरेन्ना = पद्मावती का प्रत्यक्ष चद-पुनुर देरि मनिरेन्ना इन्द्रियों मिल गई। मैं तब देग = तबने पद्मावती को मिला देता हूँ उसे कान्ति मिल गई।

